TALES from the INDIAN JUNGLE

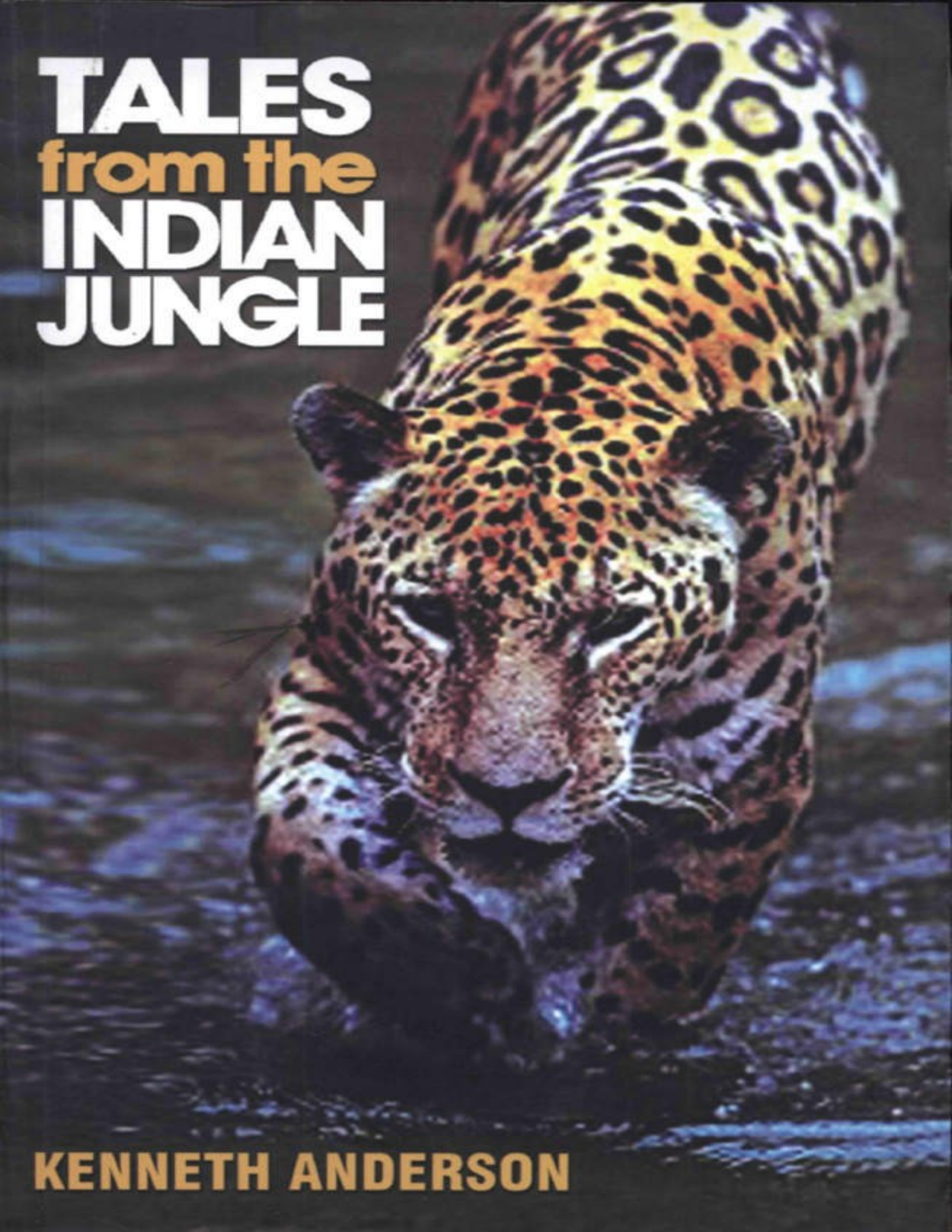

KENNETH ANDERSON

Table of Contents

□□□□□□ □□□
□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□□□
□□□□□
□□□ □□□ □□□□□
□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□
□□□□□□ □□□□□□□□
□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□□□ □□□□□□□
□□□□-□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□

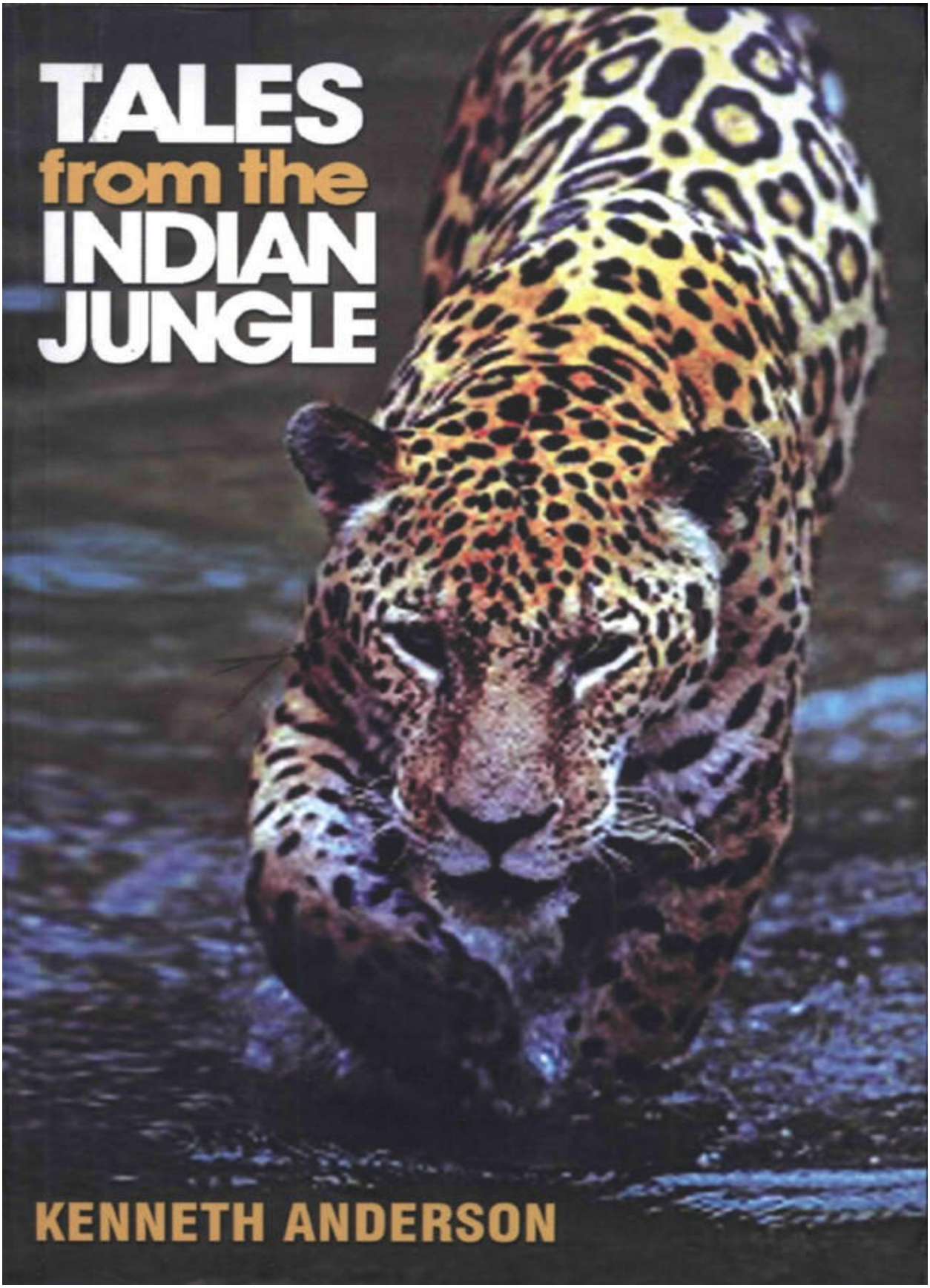
TALES
from the
INDIAN
JUNGLE
KENNETH ANDERSON

[redacted]

[illegible]

[redacted]

[redacted]

[redacted].[redacted]

प्रथम प्रकाशन 2001
पाँचवाँ संस्करण 2010

रूपा पब्लिकेशन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित, 7/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110 002

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा, पुनरुत्पादित, संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

टाइपसेटिंग का कॉपीराइट © रूपा एंड कंपनी 2001

टाइपसेट किया गया: माइंडवेज़ डिज़ाइन, 1410 चिरंजीव टॉवर, 43 नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110 019

ए-14 सेक्टर 60, नोएडा 201 301

□□□□□□□□□□

□□□□□

□□□ □□□ □□□□□

□□□□□□□□ □□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□

□□□□□□□□□□ □□□□□□□

□□□□-□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□

परिचय

वह आदमी पेड़ से पीठ टिकाकर बैठा है और अलाव की रोशनी कभी कम तो कभी ज़्यादा होती है, जिससे वह और जिस पेड़ के तने से वह टिका है, दोनों ही स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, और अगले ही पल धुंधलेपन और अंधकार में गायब हो जाते हैं। उसके बगल में पेड़ से टिकी हुई एक पुरानी.405 विंचेस्टर राइफल है।
किसी ने आग में एक नई लकड़ी डाली और अनगिनत चिंगारियाँ ऊपर उठीं, जिससे शिविर पर छाए विशाल वृक्ष की घनी शाखाएँ जगमगा उठीं। एक पल के लिए उस आदमी का चेहरा भी चमक उठा और हमने देखा कि उसकी दाढ़ी और मूंछें हैं, और उसके मुँह के कोने में एक पुरानी सूखी हुई झाड़ी फंसी हुई है। उसके सिर पर एक जर्जर 'गोरखा' टोपी है, जिसका किनारा बाईं ओर मुड़ा हुआ है, जो तिरछे ढंग से दाईं ओर झुकी हुई है।
वह आदमी बोल रहा है। ऐसा लगता है कि वह कोई कहानी सुना रहा है और यह स्पष्ट है कि वह उसमें इतना मग्न है, इतना मग्न है कि वह अपनी पाइप और अपने आसपास की हर चीज को भूल गया है।
आग की लपटें धीमी पड़ जाती हैं, फिर भड़क उठती हैं, उनकी क्षणिक चमक
उस व्यक्ति की आँखों में बसी हुई उदासीनता को उजागर करती है, मानो वह अपने द्वारा वर्णित घटनाओं को फिर से जी रहा हो। अतीत इतना वास्तविक हो गया है कि वह अपने श्रोताओं से बेखबर है, जो आग के किनारे जमीन पर उसके चारों ओर बैठे उसकी बातें सुन रहे हैं।
चिंगारियां ऊपर की ओर उड़ती हैं, आपस में मिल जाती हैं, फीकी पड़ जाती हैं और धुएं के एक घने सर्पिल में गायब हो जाती हैं जो और ऊपर की ओर घूमता हुआ तब तक जाता है जब तक कि वह शिविर को घेरने वाले पेड़ों के घने पत्तों के अंधेरे में खो नहीं जाता और जंगल की रात को और भी भयावह बना देता है।

आग की लपटों की चटक और उस आदमी की धीमी आवाज़ के अलावा, जंगल सन्नाटे में डूबा हुआ है, एक भारी, दमनकारी, अजीब सी खामोशी छाई हुई है जो हमें लगता है कि ज़्यादा देर तक नहीं टिकेगी। और हम सही हैं। अचानक एक बाघ की दहाड़ अंधेरे को चीरती हुई सुनाई देती है, जिसका जवाब एक उत्तेजित हाथी की चीख से मिलता है। 'आउंग-हा! ऊंग! आउंग-ऊंग!' वह भयानक आवाज़ आती है जब बाघ निडरता से जंगल की गलियों में आगे बढ़ता है, जबकि दूर से आती हाथी की चिंघाड़ 'त्रि-आ-आ-अंक! त्रि-आ-आ-अंक!' यह घोषणा करती है कि चुनौती स्वीकार कर ली गई है। लेकिन वह व्यक्ति इन आवाज़ों को अनसुना सा कर देता है, क्योंकि वह अपनी कहानी में इतना मग्न हो गया है। ऐसा लगता है मानो वह स्वयं जंगल का ही हिस्सा हो, और हमें भी यही आभास होता है कि वह वहीं का है। यही उसका घर है और यही वह स्थान है जहाँ वह मरना चाहेगा; जंगल ही उसकी जन्मभूमि है, उसका आश्रय है और अंत में उसका विश्राम स्थल भी।
तो चलिए, उसकी बातों पर ध्यान दें। जंगल में रहने वालों की कहानियाँ; घटनाओं के किस्से, खुद के भयावह और भूतिया चित्रण। जैसे-जैसे हम सुनते हैं, वह व्यक्ति खुश प्रतीत होता है और अपने विषय में मग्न हो जाता है। क्योंकि उन्हें जंगल और वहां के लोगों के बारे में बात करना बहुत पसंद है, और मुझसे बेहतर यह बात कौन जान सकता है।
क्योंकि मैं ही वह आदमी हूँ!

एक

भोर में घूमना

पुजारी अपनी लगातार कोमल आवाज़ में 'दोराई, दोराई; येंचेको, नार्ल मुन्नी अगाधो!;' कहकर हमें जगाता है, जिसका अर्थ है, 'स्वामी, स्वामी; उठो, चार बज गए हैं!'
वह हमारे कानों में फुसफुसाते हैं, पहले मेरे और फिर तुम्हारे; क्योंकि अपने हाथों से हम में से किसी को भी छूना अपमानजनक माना जाता है। क्या पूजकों को, जहाँ तक मनुष्य को याद है, बहिष्कृत नहीं माना जाता, जिनके किसी भी आम इंसान के पास होना—स्पर्श करना तो दूर की बात है—अत्यंत घृणित है?
हम अचानक उठ बैठते हैं, क्योंकि जंगल में देर से जागना जीवन और मृत्यु
के बीच का अंतर हो सकता है। हम आग के सुलगते अंगारों को देखते हैं जिनकी रोशनी तीन तरफ से घिरे विशाल पेड़ों के तनों तक मुश्किल से पहुँच रही है। चौथी तरफ हमें तारों से जगमगाता पानी का एक विशाल विस्तार दिखाई देता है, जो कावेरी नदी है, और हम बाढ़ की धीमी गड़गड़ाहट सुनते हैं जो हमारे पास से गुजरती है, जंगल की रात के अंधेरे से प्रकट होती है और उतनी ही तेजी से गायब हो जाती है।
हम नदी किनारे खुले में डेरा डाले हुए हैं, जंगल के छोर से कुछ ही गज
की दूरी पर और नदी के किनारे से थोड़ी ही दूर। पुजारी रात भर जागता रहा,

कोई जानवर, जो आमतौर पर अपनी आदतों में अनाड़ी होता है या ऐसे पत्थरों के नीचे छिपे कीड़ों की तलाश में होता है, ऐसी आवाज करके अपनी मौजूदगी का संकेत दे सकता है। निश्चित रूप से कोई हिरण नहीं, क्योंकि वह डर जाता; और निश्चित रूप से कोई बाघ या तेंदुआ तो अपने गुजरने का संकेत नहीं देता। दूसरी संभावना हाथी की हो सकती है। यह हमें कुछ ही क्षणों में पता चल जाएगा।
अब हमें भारी साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही है, मानो कोई बूढ़ा व्यक्ति बड़ी मुश्किल से पहाड़ी पर चढ़ रहा हो। इससे यह संदेह दूर हो जाता है कि एक सुस्त भालू सचमुच चट्टानों के नीचे बने छेदों और झाड़ियों की जड़ों को सूंघता हुआ कीड़े-मकोड़े और अन्य रसीले भोजन की तलाश में पास आ रहा है।
भोर होने के साथ ही पूर्वी आकाश में हल्की रोशनी फैलने लगी है, लेकिन जिस चट्टान के पीछे हम छिपे हुए हैं, उसके पीछे अभी भी अंधेरा है, तभी भालू हमारे पास आ जाता है। तुम मेरे दाहिनी ओर हो, और भालू तुम्हारे दाहिनी ओर, लगभग दस फीट की दूरी पर है। मैं तुम्हारा हाथ कसकर पकड़ लेता हूँ और तुम मेरी बिना कही बात समझ जाती हो कि मुझे हिलना नहीं है। हो सकता है कि वह हमें देख न पाए, क्योंकि उसकी नज़र बहुत कमज़ोर होती है। वह बहुत बहरा भी होता है। अगर हम अपनी मौजूदगी का पता चलने दें तो वह हमला कर सकता है, और हम उसे गोली नहीं मारना चाहते, क्योंकि आम तौर पर भालू हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता।
भालू की गुर्राहट, बड़बड़ाहट, फुफकार और सूंघने की आवाज़ें आती-जाती रहती हैं। झाड़ियों के बीच हमें बस एक काली धुंधली आकृति दिखाई देती है; फिर भालू पहाड़ी पर चढ़ते हुए गायब हो जाता है और उसके चलने की आवाज़ें धीमी होती जाती हैं।
भोर तेज़ी से फैल रही है और नदी के उस पार पूर्व दिशा में आकाश में बदलते रंगों का एक अद्भुत नज़ारा दिखाई दे रहा है, जो गहरे भूरे और गहरे बैंगनी रंग से शुरू होकर बैंगनी, हरे, नीले, नारंगी और सिंदूरी रंग में बदलता जाता है, और अंत में दूर स्थित पर्वत चोटियों की ऊबड़-खाबड़ ऊंचाइयों के ऊपर सूर्य का किनारा उभर आता है। उसकी फैली हुई किरणें अभी इतनी तेज़ नहीं हैं कि हम उस शानदार, चमकते हुए गोले को निहारने से खुद को रोक सकें।
अभिवादन में, छोटे-बड़े, दूर-दूर के पक्षी मधुर गीत गाने लगते हैं। सैकड़ों बुलबुलों की चहचहाहट, काले-लाल कौवे-तीतर की पुकार, और मस्तिष्क-बुखार से पीड़ित पक्षी की ऊँची होती हुई चीख पहाड़ी से हमारे कानों में गूंजती है, जबकि नदी के किनारे घने जंगल से जंगली मुर्गों की चुनौती भरी आवाज, 'व्हीव! कुक-क्या-क्या-क'हुकम,' और दूर से आती मोर की मधुर आवाज, 'म्याऊं! म्याऊं!' सुनाई देती है। हम कल्पना कर सकते हैं कि वह अपनी पूंछ के शानदार पंखों को एक बड़े पंखे की तरह फैलाए, मुर्गों के झुंड के सामने इतराते और नाचते हुए चल रहा है।
क्रैक-आ-आ-आक! हमें यह आवाज़ सिर्फ़ एक बार सुनाई देती है, काफ़ी धीमी लेकिन साफ़-साफ़। कोई भारी चीज़ पहाड़ी पर चढ़ रही है, शायद कोई दूसरा सुस्त भालू, लेकिन मुझे नहीं लगता। भालू लगातार शोर मचाते रहते हैं, जबकि यह जानवर, उस शुरुआती आकस्मिक आवाज़ को छोड़कर, बाकी समय बिल्कुल शांत रहता है।

मौत के जाल में फंसाने के लिए कोई और चाल चलते हैं। हिरण अब इतना करीब आ चुका है कि भाले से फेंके जाने पर भी वह वहीं जम जाएगा; और वह और भी करीब आ रहा है! ज़ाहिर है, इस मूर्ख जानवर को सबक सिखाना ज़रूरी है और मैंने उसे इतना डराने का फैसला किया है कि उसकी जान ही निकल जाए।
चट्टान के पीछे से उछलकर, मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, ‘व्रोफ़! व्रोफ़! व्रोफ़!’। यह कहना कि हिरण बाघ जैसी आवाज़ वाले इस अचानक इंसान को देखकर चौंक गया, स्थिति का हल्का वर्णन होगा। वह पिछले पैरों पर खड़ा हुआ, एक पत्थर पर फिसल गया, घुटनों के बल गिर पड़ा, फिर उठ खड़ा हुआ और खतरे की एक तीखी चीख निकाली।
‘ऊ-ओंक!’ वह चीखता है।
फिर वह अपने सींगों को बगल में समेट लेता है ताकि वे पेड़ों की शाखाओं में न फंसें, और पहाड़ी से नीचे लुढ़क जाता है। उसकी दौड़ इतनी तेज होती है कि हम उसके कदमों की आहट को पत्थरों की खड़खड़ाहट से तब तक सुन सकते हैं जब तक वह नदी के किनारे घने जंगल में शरण नहीं ले लेता। वहाँ हिरण रुककर देखता है कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा, और फिर पूरे जंगल को चेतावनी देता है कि पहाड़ी पर खतरा और मौत मंडरा रही है।
‘ऊ-ओंक! धा-अंक!’ वह बार-बार गरजता है।
जुमलम के झुरमुट में आराम से चर रहे लंगूर बंदरों के झुंड के रखवाले
ने भी इस हलचल में अपना हुजूम गड़ा दिया। हम जहां छिपे थे, वहां से उसकी एक झलक ही दिखाई दे रही थी। वह पेड़ की चोटी पर दो पैरों पर सीधा खड़ा था और सांभर द्वारा बताए गए खतरे को देखने की पुरजोर कोशिश कर रहा था। लाख कोशिश करने पर भी वह हमें देख नहीं पा रहा था। ज़ाहिर है, वह उलझन में था और दुश्मन की पहचान करना चाहता था। तभी उस बड़े नर लंगूर ने फैसला किया कि उसे अपने झुंड और आसपास के अन्य जंगली जीवों के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए और खतरे की चेतावनी देने के लिए खुद भी खतरे का संकेत देना चाहिए। ‘हर्र!’ वह कर्कश स्वर में चीखता है; और फिर एक क्षण बाद, लगातार ‘हर्र! हर्र-हर्र!’ की आवाज़ें आती हैं। जंगल में अब सचमुच हलचल मच जाती है, और नदी के उस पार से एक जंगली भेड़, जो अपनी प्यास बुझाने ही वाली थी, अचानक डर जाती है, भाग जाती है और भागते हुए कुत्ते जैसी आवाज़ में ‘खर्र! खर्र! खर्र!’ की आवाज़ निकालती है।
जिस पहाड़ी की ढलान पर हम छिपे हुए थे, उसके दूसरी ओर चर रहे चित्तीदार हिरणों के झुंड ने शोर सुना और चेतावनी दी। 'आओ! आओ! आओ!' मादा हिरणों ने एक-दूसरे को जल्दी-जल्दी पुकारा। दूर से एक हाथी ने तीखी आवाज में चिंघाड़ा।
अंततः उत्साह शांत हो जाता है और हम अपनी सुबह की सैर फिर से शुरू करने का फैसला करते हैं, क्योंकि छिपते रहने से कोई लाभ नहीं है। सांभर ने इतना शोर मचा दिया है कि अब हमारे रास्ते में आना संभव नहीं है।
क्या आपने चाय के पौधे जैसी नुकीली पत्तियों वाली वह झाड़ी देखी है
जो केवल ऊंचे पहाड़ों पर ही उगती है? ऐसी कई झाड़ियाँ चारों ओर उगती हैं। इसे 'वेल्लारी' पौधा कहते हैं। इसकी पत्तियों को पट्टी या पुल्टिस के रूप में लगाने से गठिया के दर्द और किसी भी प्रकार की सूजन में बहुत आराम मिलता है। इस बड़े पेड़ की पांच नोक वाली पत्तियां, जो ऊपर से हरी और नीचे से चांदी जैसी सफेद होती हैं, कच्चे घावों या चोट पर लगाने पर बहुत अच्छा असर दिखाती हैं; चांदी जैसी सफेद तरफ को प्रभावित जगह पर रखा जाता है। वह छोटा पौधा जो कठोर जमीन पर उगता है, मुश्किल से एक फुट ऊंचा, चांदी जैसे भूरे

रंग की, लगभग नुकीली पत्तियों वाला, जहरीले सांप के काटने का इलाज माना जाता है, और वह दूसरा छोटा पौधा जिसमें सफेद, डेज़ी जैसे फूल और दांतेदार पत्तियां होती हैं, घावों पर पत्तियों का रस निचोड़ने से खून बहना रोकने के लिए प्रसिद्ध है। यह डॉक्टर द्वारा दी गई किसी भी दवा की तरह ही तेजी से उच्च रक्तचाप को भी कम करता है।
सचमुच, जंगल हर तरह की जड़ी-बूटियों और पौधों से भरा पड़ा है, जिनके पत्ते, तने, बीज, फूल और यहाँ तक कि जड़ें भी मानव जाति को होने वाली अधिकांश बीमारियों का इलाज हैं। ये जंगल में और शहरी इलाकों में, यहाँ तक कि रेलवे ट्रैक के किनारे भी उगते हैं।
आपने अक्सर भारतीय पेरीविंकल झाड़ी के हरे पत्तों के बीच से खिलते हुए अनगिनत गुलाबी और सफेद फूलों को देखा होगा, जो लगभग हर जगह, खासकर रेलवे तटबंधों पर खूब पनपती है। इस पौधे की चालीस पत्तियों को चाय की तरह उबालकर एक बड़े कप पानी या दूध में मिलाकर प्रतिदिन पीने से इंसुलिन के स्राव में मदद मिलती है और अग्नाशय उत्तेजित होता है, जिससे मधुमेह नियंत्रित होता है। लेकिन कुछ अन्य जड़ें और पत्तियां भी हैं जो इस बीमारी के इलाज में और भी अधिक प्रभावी हैं, जिनमें से एक छोटी लता है जो हर जंगल में आम है। इसे 'शुगर किलर' के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी सिर्फ एक पत्ती चबाने से ही चीनी अपनी मिठास खो देती है और मुंह में रेत जैसी लगने लगती है, यह असर लगभग तीन घंटे तक रहता है।
लेकिन हम विषयांतर कर रहे हैं और इसी बीच हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँच
गए हैं और दूसरी तरफ उतरना शुरू कर दिया है। अब हमें सावधानी से चलना होगा, क्योंकि कुछ जगहों पर ढलान बहुत ज़्यादा है, और अगर हममें से किसी ने भी कोई पत्थर गिरा दिया या कोई शोर मचाया, तो चित्तीदार हिरणों का वह परिवार, जिसने अब बोलना बंद कर दिया है और जिसे हम जल्द ही देखने की उम्मीद कर रहे हैं, ज़रूर सतर्क हो जाएगा। सौभाग्य से हवा पहाड़ी की ओर बह रही है, इसलिए उन्हें हमारी गंध नहीं आएगी।
हम छोटी पहाड़ी की तलहटी तक पहुँचते हैं और काँटेदार झाड़ियों और लैंटाना के बीच से दबे पांव चलते हुए एक घास के मैदान तक पहुँचते हैं। वहाँ, शांति से चरते हुए, कम से कम चालीस हिरणों का एक झुंड था, जिन्हें हम देखने की उम्मीद कर रहे थे। सौभाग्य से, पहरा दे रही किसी भी मादा हिरण ने हमारे आने की सूचना नहीं दी और हम ठीक समय पर युवा रेडवुड पेड़ों के एक झुंड के पीछे रुक गए।
हमारे सामने का नज़ारा बेहद खूबसूरत है। नर हिरण झुंड के बीचोंबीच हैं, उनके सींग फैले हुए और नुकीले हैं। वे गर्व से अपना सिर ऊपर उठाते हैं और हवा को सूंघते हैं, फिर चरने के लिए नीचे झुक जाते हैं। उनके चारों ओर मादा हिरण और उनके बच्चे हैं। मादा हिरण हमेशा चौकन्ने रहती हैं, उनके कान आगे की ओर उठे रहते हैं और हल्की सी भी आवाज़ सुनने के लिए फड़फड़ाते रहते हैं। कभी-कभी कोई मादा हिरण अपना सिर और गर्दन ज़मीन पर झुकाकर घास या पत्तियां चबाती है, लेकिन तुरंत ही ऊपर उठा लेती है, हमेशा चौकस और सतर्क। हिरण के बच्चों पर ऐसी कोई जिम्मेदारी नहीं होती और उनमें से कई को बेरहमी से और अचानक मौत का सामना करना पड़ता है, इससे पहले कि जीवित बचे लोग यह सीख सकें कि जंगल में निरंतर अस्तित्व का सबसे बड़ा रहस्य 'हर पल सतर्क रहना' है; क्योंकि मौत हर जगह घात लगाए बैठी रहती है।
वे आपस में उछल-कूद और खेल रहे हैं, एक दूसरे का पीछा करते हुए गोल-गोल घूम रहे हैं। कुछ बहुत छोटे बच्चे अपनी माताओं से चिपककर, चुपके से अपने

नन्हे सिर पास लटके थनों के नीचे डुबोकर दूध पीने की कोशिश कर रहे हैं। माताएँ भी बीच-बीच में दूध पिलाना रोककर अपने नन्हे बच्चों को प्यार से चाटती हैं, लेकिन एक पल के लिए भी वे आसपास के जंगल में किसी संभावित दुश्मन की तलाश में चौकसी करना नहीं छोड़तीं। उनकी आँखें हर दिशा में टकटकी लगाए रहती हैं, कान आगे की ओर कसे रहते हैं ताकि हल्की सी भी आवाज़ सुन सकें, और नाक के नथुने खतरे की हल्की सी भी गंध को सूंघने के लिए फैले रहते हैं।
चरते हुए हिरणों के ठीक ऊपर एक पेड़ पर लंगूरों का एक छोटा परिवार बैठा है। इनमें से दो ज़मीन पर कूदते हैं और एक चित्तीदार हिरण के बच्चे का पीछा करते हैं। फिर एक लंगूर वापस एक नीची शाखा पर उछलता है और अपने पैरों से लटकते हुए, हिरण के बच्चे की पूंछ पकड़कर उसे आधा ज़मीन से ऊपर उठा लेता है। हिरण का बच्चा इस खेल का आनंद लेता है, लेकिन उसकी माँ को यह पसंद नहीं आता।
देखने में तो सब कुछ एकदम शांत, सुंदर और निर्मल लग रहा था। लेकिन हमारी नज़र बाईं ओर दूर एक बड़ी झाड़ी के नीचे हल्की सी हलचल पर पड़ी। हमने झाड़ी को और ध्यान से देखा, लेकिन हलचल बंद हो चुकी थी।
उस झाड़ी के पास चर रही एक हिरणी अपने बच्चे के साथ यह सब देख चुकी
थी। उसने अचानक अपना सिर ऊपर उठाया और घूरने लगी, उसके दोनों कान आगे की ओर उठे हुए थे और थूथन कांप रही थी। फिर उसने अपना दाहिना पैर ज़मीन पर पटका और अपनी चेतावनी भरी चीख का पहला अक्षर बोला, 'आओ!'
लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है। सुबह की सुनहरी धूप में चमकता एक लंबा- चौड़ा, धब्बों से भरा शरीर, उस झाड़ी के नीचे से निकलता है और दो छलांगों में उस नन्हे हिरण के बच्चे तक पहुँच जाता है। अगले ही पल वह मर जाता है, जबकि पैंथर उस छोटे से कांपते हुए शरीर पर घूरता और गुर्राता रहता है। फिर हम एक ऐसा दृश्य देखते हैं जो जितना मार्मिक है उतना ही भव्य भी। हिरण के बच्चे की माँ, अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, उसे बचाने के लिए दौड़ पड़ती है। पैंथर उस नन्हे शव को छोड़कर हिरणी पर झपटता है, उसका गला पकड़ लेता है और उसे ज़मीन पर गिरा देता है। उसके खुर हरी घास पर अपनी मृत्यु-पीड़ा की आवाज़ निकालते हैं, जो उसके फटे हुए गले से बहते खून से पहले ही गहरे लाल रंग से रंगी हुई है।
मैं तुम्हें देखता हूँ जब तुम अपनी 10 गोलियों वाली स्प्रिंगफील्ड पिस्तौल को गुर्राते हुए पैंथर पर निशाना साधने के लिए उठाते हो, ताकि तुम उस हत्या का बदला ले सको जो अभी-अभी हुई है। लेकिन मैं अपना हाथ बढ़ाकर पिस्तौल की नली पकड़ लेता हूँ और तुम्हारा निशाना चूकने की कोशिश करता हूँ।
‘गोली मत चलाओ, जॉन! यह जंगल का कानून है। पैंथर ने भोजन के लिए शिकार किया है, जानबूझकर नहीं।’
पैंथर ने मेरी आवाज़ सुनी, फिर हमें देखा। अगले ही पल वह गायब हो गया।
लेकिन वह वापस आएगा।

दो

बेलुंडुर ओग्रे

बेलुंदूर मैसूर राज्य के शिमोगा जिले में स्थित एक छोटा सा गांव है, जो एक पहाड़ी की ढलान पर बसा है और टैगार्थी गांव से लगभग तीन मील दूर है। सदियों से मैसूर का यह हिस्सा बाघों का घर रहा है, जिनकी संख्या इतनी बढ़ गई थी कि उन्होंने अपने छोटे चचेरे भाइयों, अधिक चालाक लेकिन कहीं कम शक्तिशाली तेंदुओं को लगभग खत्म कर दिया था, जो कुछ समय पहले तक इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में घूमते थे। दरअसल, इन छोटी बिल्लियों ने अपने समय में तबाही मचाई थी। बाघों की तुलना में कहीं अधिक साहसी, चालाक और उनसे बचना कहीं अधिक कठिन था; वे छोटे होने के कारण बेहतर ढंग से छिप सकते थे; वे गांवों के आसपास आतंक मचाते थे और सूर्यास्त के बाद हर रात व्यवस्थित रूप से उन पर हमला करते थे, मुर्गियों, कुत्तों, बकरियों, भेड़ों और बछड़ों को समान रूप से तिरस्कार और भेदभाव के साथ उठा ले जाते थे।
वे मनुष्यों को शायद ही कभी नुकसान पहुंचाते थे जब तक कि वे खुद घायल
न हो जाएं, लेकिन उन दुर्लभ अवसरों पर जब वे इस अपराध के दोषी होते थे, तो उनके खिलाफ प्रतिशोध लेना मुश्किल था क्योंकि क्षेत्र के घने जंगलों द्वारा उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाती थी, जो भारी मानसूनी बारिश से अच्छी तरह से सिंचित होते थे।

मेरी कहानी की शुरुआत में, बाघों का बोलबाला था, जबकि बेलुंदुर में एक जादूगर रहता था जो हर तरह के ताबीज़ और मंत्र बनाने में माहिर था। कहा जाता था कि ये ताबीज़ किसी प्रियजन को पाने में, या इसके विपरीत, किसी ऐसे व्यक्ति से छुटकारा पाने में विशेष रूप से कारगर थे जिनसे आप उतना प्यार नहीं करते थे। यह भी अफवाह थी कि ये नौकरी पाने या याचिका को सफल बनाने में भी बहुत प्रभावी थे।
अपनी अन्य क्षमताओं के अलावा, यह जादूगर इस बात के लिए प्रसिद्ध था कि
वह मंत्रों और जादू-टोनों से जंगल को 'बांध' सकता था, जिससे उस क्षेत्र में शिकार करने वाला कोई भी शिकारी पूरी तरह से असफल हो जाता था। शिकार या तो उसकी राइफल के सामने प्रकट नहीं होता था; या यदि प्रकट होता भी था, तो राइफल नहीं चलती थी; या यदि चलती भी थी, तो गोली कुछ गज की दूरी पर भी शिकार को नहीं लगती थी। मैं इस व्यक्ति से कुछ साल पहले मिला था, और मैंने अपनी पिछली कहानियों में से एक में उसके बारे में लिखा है।* अपने पेशे के अधिकांश लोगों की तरह, उसे थोड़ी चापलूसी पसंद थी। अन्यथा, मैंने उसे काफी मिलनसार पाया था और उसकी इस कमजोरी में मुझे कुछ भी गलत नहीं लगा था। आखिरकार, हम सभी को चापलूसी पसंद होती है।
लेकिन बेलंदूर के उस ‘राक्षस’ के बारे में, जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ, ने अपना जीवन लगभग सामान्य तरीके से ही शुरू किया था - एक साधारण और हानिरहित बाघ के रूप में। अपने शुरुआती दिनों में इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। जाहिर है, इसका ध्यान केवल चित्तीदार हिरण, सांभर और सूअर का शिकार करने और उन्हें खाने तक ही सीमित था, जो उस समय हर जगह बहुतायत में पाए जाते थे। फिर सरकार ने पशुपालन कार्यक्रमों को बढ़ावा देना शुरू किया, और जैसे-जैसे उपजाऊ चारागाह उपलब्ध होते गए, मवेशियों के झुंड लाए गए जो थोड़े ही समय में हजारों की संख्या में बढ़ गए, जिससे जंगली हिरण और सूअरों को नुकसान हुआ जो पहले बिना किसी बाधा के चरते थे।
बाद में जिसे 'राक्षस' के नाम से जाना जाने लगा, उसने जंगली जानवरों के मांस के साथ-साथ उत्तम दर्जे के गोमांस का भी स्वाद चखकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, और यह प्रवृत्ति इतनी तेज़ी से बढ़ी कि उसने अन्य किसी भी प्रकार के मांस को त्याग दिया। वह मारता और खाता रहा, खाता और मारता रहा, यहाँ तक कि उसने कई मवेशियों के झुंडों को मार डाला और अंततः ग्रामीणों को लगा कि कुछ किया जाना चाहिए।
भारतीय ग्रामीण असीम धैर्यवान होते हैं, और यह गुण उनकी पूर्ण उदासीनता, त्याग की भावना और ईश्वर की इच्छा से आने वाली किसी भी विपत्ति को स्वीकार करने की क्षमता को देखकर आसानी से समझा जा सकता है। इसलिए, जब मैं आपको बताऊँ कि अंततः ग्रामीणों का इस बाघ से मन भर गया और उन्होंने इसके उत्पात को रोकने का निश्चय कर लिया, तो आप समझ जाएँगे कि यह राक्षस वास्तव में हद पार कर चुका था। उन्होंने जाल बिछाकर उसे पकड़ने और फिर मार डालने का फैसला किया।
शिकार के रास्ते के बीचोंबीच एक गहरा आयताकार गड्ढा खोदा गया; इसके मुँह को पत्तियों और टहनियों से ढके पतले, आपस में गुंथे हुए बांसों से सावधानीपूर्वक छिपा दिया गया था, और गाँव के सबसे कम मूल्यवान बछड़े को चारा बनाकर गड्ढे के दूसरे छोर पर एक खूंटी से बांध दिया गया था। गड्ढे के दोनों ओर और उससे आगे घनी झाड़ियों से घिरे होने के कारण बाघ के लिए किसी भी अन्य दिशा से चारे तक सीधे पहुँचना असंभव था, जिससे केवल एक ही रास्ता खुला रह गया था।

सब कुछ योजना के अनुरूप हुआ और तीसरी रात बाघ गड्ढे में गिर गया।
अगली सुबह बेलंदुर गाँव के सभी निवासी, जिनमें तांत्रिक भी शामिल था, अपने पुराने दुश्मन पर खुशी मनाने और उस पर जलती हुई मशालें फेंकने के लिए इकट्ठा हुए, और फिर ऊपर से भाले से वार करके उसे मार डाला। जाहिर है, किसी के पास बंदूक नहीं थी, और क्रूरता का सवाल तो किसी के मन में आया ही नहीं। आखिर क्या यह वही बाघ नहीं था जिसने उनके इतने सारे मवेशियों को मार डाला और खा लिया था?

रेखाचित्र मानचित्र: ओग्रे और गोउन्डनोराई बाघ
(अध्याय 2 और 3)

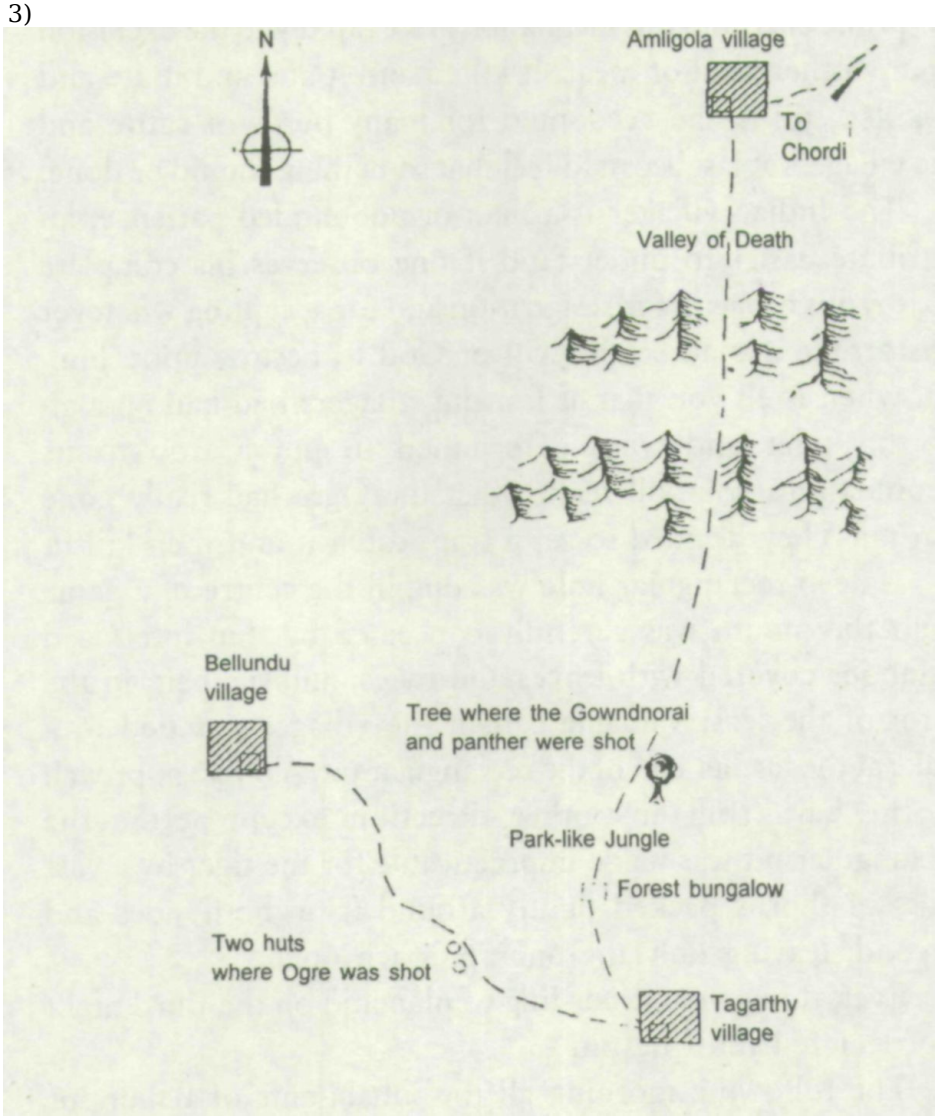

बेलंदुर के निवासियों के पास न केवल बंदूकें नहीं थीं, बल्कि उनके पास भाले भी बहुत कम थे। मुझे बाद में पता चला कि केवल दो लोगों के पास भाले थे, या भाले जैसी कोई वस्तु थी। एक भाला छोटा था, चार फुट से भी कम

लंबा और सिरे पर बिल्कुल कुंद। यह भाले से ज़्यादा लोहे की छड़ जैसा लग रहा था। दूसरा भाला असली था और स्थानीय मंदिर का था। कहा जाता है कि इसका इस्तेमाल ढाई सदी पहले किसी युद्ध में हुआ था, लेकिन अब यह लोहे की छड़ की तरह कुंद हो चुका था, क्योंकि इसका इस्तेमाल कई बार ज़मीन से शकरकंद खोदने के लिए किया गया था। खैर, दोनों हथियारों के डंडे गड्ढे की सतह से बाघ तक पहुँचने के लिए बहुत छोटे थे, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि दोनों के मालिक आश्वस्त थे कि अपने-अपने हथियार के एक ही वार से वे उस जानवर को मार सकते हैं।
कहा जाता है कि इस बात पर काफी बहस हुई कि पहले हथियार कौन चलाएगा। अंततः, हालांकि मुझे नहीं पता कि किस आधार पर, लोहे की छड़ वाले ने बाजी मार ली। उसने सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए अपना हथियार फेंका; जैसे ही वह उसके हाथ से छूटा, उसका कुंद सिरा मुड़ गया और हथियार का किनारा, कुंद सिरे की बजाय, बाघ के पार्श्व भाग पर एक धीमी सी आवाज के साथ जा लगा।
जैसा कि उम्मीद थी, बाघ ने इस तरह के व्यवहार को हल्के में नहीं लिया। उसने दहाड़कर अपना विरोध जताया और अपने उत्पीड़कों को घूरकर देखा। जब दूसरे भालाधारी ने निराश बाघ को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और भाला चलाने की तैयारी की, तो वहाँ मौजूद भीड़ में हल्की हंसी गूंज उठी। 250 साल पुराना भाला अपने लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ा और उसका कुंद सिरा बाघ के पिछले हिस्से में धंस गया।
अब बेलुंदुर पूरी तरह निहत्था था! और राक्षस का गुस्सा भड़क उठा। अचानक मिली ऊर्जा के बल पर, वह उछलकर गड्ढे के किनारे तक पहुँच गया और अपने अगले पंजों से उसे टटोलने लगा। उसके पंजे किनारे तक पहुँचे, उसे पकड़ लिया और नरम मिट्टी में धंसा दिए। पिछले पंजे हवा में बेतहाशा लात मारते हुए गड्ढे की दीवारों से टकराए और जानवर को ऊपर की ओर खींच लिया। और अगले ही पल बाघ आज़ाद हो गया, नरक के किसी दानव की तरह गड्ढे के मुँह से बाहर कूद पड़ा, और पहले से कहीं ज़्यादा खतरनाक हो गया।
भीड़ में से केवल एक ही व्यक्ति उसकी स्वतंत्रता के मार्ग में खड़ा
था; बाकी सब भाग चुके थे। बाघ अपने सामने खड़े व्यक्ति के ऊपर से छलांग लगाकर, चारों पैर फैलाकर पीछे की ओर लात मारता हुआ आगे बढ़ा, और उसके भयानक पंजों में से एक का पंजा उस व्यक्ति की खोपड़ी के पिछले हिस्से से टकराया, इससे पहले कि वह भागने के लिए होश में आ पाता। यह केवल एक हल्की सी चोट थी, बाघ द्वारा लगाए गए बल को देखते हुए अपेक्षाकृत हल्की, क्योंकि यदि पंजा पूरी तरह से सिर पर लगता तो खोपड़ी अंडे के छिलके की तरह चकनाचूर हो जाती। लेकिन, पंजों के सिरे व्यक्ति की गर्दन के पिछले हिस्से की त्वचा में धंस गए, और बाघ के कूदने के दौरान उसके वजन ने बाकी का काम कर दिया।
फिर बाघ चला गया। वह आदमी जहाँ खड़ा था वहीं गिर पड़ा, लेकिन वह पूरी तरह जीवित था। उसकी खोपड़ी का पूरा हिस्सा, जो हड्डी से साफ-सुथरा अलग किया गया था, अब उसके चेहरे पर लटक रहा था, और उसके लंबे बाल पीछे की बजाय आगे की ओर लहरा रहे थे। उस आदमी को मरने में तीन दिन लगे, क्योंकि आखिरी पल तक वह इस उम्मीद में जी रहा था कि उसकी खोपड़ी को वापस जोड़ दिया जाएगा। वह राक्षस का पहला शिकार था, हालाँकि यह अनजाने में हुआ था।
स्वाभाविक रूप से, घाव भरने के बाद बाघ और भी चालाक हो गया। उसके लिए
कई तरह के जाल लगाकर चारा डाला गया, लेकिन बाघ ने उन्हें जानबूझकर अनदेखा कर दिया। इसके बाद उसने दिन दहाड़े, आमतौर पर दोपहर के समय, मवेशियों को मारा, जब सुबह चरने के बाद झुंड आराम कर रहे होते थे और उनके रखवाले

हंसेंगे, हालांकि उसे अब भी पूरा भरोसा था कि वे उससे इतना डरते हैं कि खुलकर ऐसा नहीं करेंगे।
दूसरी ओर, ग्रामीणों को शर्मिंदगी महसूस हुई। हालाँकि उनमें से किसी
को भी बुद्धियाह पसंद नहीं था, जिसने बचपन से ही उनका लगातार शोषण किया था, फिर भी वह उनका अपना जादूगर था। उन्हीं में से एक। एक गोरे आदमी द्वारा इस तरह से बात करना और पिटाई की धमकी देना, उनके जादूगर के प्रति और साथ ही साथ स्वयं उनके और पूरे गाँव के प्रति अनादर दर्शाता था। इस प्रकार, अपने जल्दबाज़ी भरे शब्दों से जॉनसन ने मित्र बनाने के बजाय शत्रु बना लिए थे। ग्रामीणों ने उसे वहीं छोड़ दिया और उससे कोई वास्ता रखने से इनकार कर दिया। न ही कोई उसे बाघ को फंसाने के लिए चारा बेचने या किराए पर लेने को तैयार था।
दृढ़ निश्चयी स्वभाव के जॉनसन ने स्थानीय असहयोग के बावजूद सफल होने
का निश्चय कर लिया। वे वापस टैगार्थी लौट आए, जहाँ उन्होंने बेलंदूर में दिखाई गई सूझबूझ का इस्तेमाल करते हुए दो बूढ़े बैल खरीद लिए। चरवाहों को काम पर लगाकर उन्होंने इन दोनों जानवरों को बेलंदूर के बाहरी इलाके में ले जाकर एक नाले में बाँध दिया, जिसके बारे में कहा जाता था कि वहाँ बाघ अक्सर आता-जाता है; लेकिन चूंकि ये चरवाहे टैगार्थी के थे, बेलंदूर के नहीं, इसलिए उन्हें बाघ की गतिविधियों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। अगली सुबह जॉनसन और उसके चरवाहे चारे के पास गए। एक चारा गायब था। यह निश्चित रूप से बाघ द्वारा नहीं लिया गया था, क्योंकि नाले की रेतीली तलहटी में बाघ के कोई पदचिह्न नहीं थे, बल्कि कई मानव पदचिह्न थे। क्या ये पदचिह्न पिछले दिन उसके अपने आदमियों ने बनाए थे, या किसी और ने? दूसरे चारे को छुआ तक नहीं गया था।
जॉनसन का यह निष्कर्ष बिल्कुल सही था कि बेलुंदुर गांव के ग्रामीणों
ने उसका पहला चारा चुरा लिया था। वह भरी हुई राइफल लेकर गांव में घुस गया, बैल वापस करने की मांग की और फिर पुलिस को सूचना देने की धमकी दी। इन सब बातों पर ग्रामीणों ने मासूमियत का ढोंग किया। उन्होंने दावा किया कि रेतीली खाई में उसने जो इंसानी पैरों के निशान देखे थे, वे उसके अपने आदमियों के थे जब उन्होंने चारा बांधा था और उससे इसे गलत साबित करने को कहा। जॉनसन की चोरों को गोली मारने की गंभीर धमकियों पर भी ग्रामीणों ने अनसुना कर दिया और मुस्कुराते रहे।
दूसरे चारे के भी गायब हो जाने के डर से जॉनसन ने अपने दो आदमियों को उसके ऊपर मचान बनाने का आदेश दिया, जिस पर वह उसी दोपहर बैठ गया, शायद बाघ को पकड़ने की गंभीर उम्मीद से ज़्यादा अपने चारे को चोरी होने से बचाने के लिए। लेकिन अप्रत्याशित घटना घटी। मुझे बताया गया है कि बाघ दिन के उजाले में ही प्रकट हो गया। जॉनसन ने गोली चलाई, लेकिन वह जानवर को केवल घायल करने में सफल रहा, जो भाग गया।
अगले पूरे सप्ताह जॉनसन ने निडरतापूर्वक दृढ़ संकल्प के साथ बाघ की तलाश में जंगलों को छान मारा। कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आया; यहाँ तक कि उसके दो साथी भी यह कहकर उसके साथ जाने से इनकार कर गए कि यह बहुत खतरनाक है। अकेले ही, जॉनसन एक बार रास्ता भटक गया और उसे जंगल में रात बितानी पड़ी। अंत में, घोर निराशा के साथ, जॉनसन को बाघ को पकड़े बिना ही अपने कर्तव्य पर लौटना पड़ा।
उसके बाद कुछ समय तक सब शांत रहा। राक्षस प्रकट नहीं हुआ और बेलंदूर
के ग्रामीणों को यह स्वीकार करना पड़ा कि उनके तमाम असहयोग प्रयासों के

बावजूद, साहब ने उन्हें उस विपत्ति से छुटकारा दिला दिया था जो उनके पशुओं को भारी नुकसान पहुँचा रही थी। जादूगर बुद्धिह पहले से कहीं अधिक दुखी था। उसने अपने अभिमान और प्रतिष्ठा को और भी कम होते देखा, क्योंकि उसने शेखी बघारते हुए कहा था कि साहब बाघ को नहीं मारेंगे या मार नहीं सकते; फिर भी उन्होंने ऐसा किया और बेलंदूर को उस घृणित पशु-चोर से मुक्ति दिला दी। इसलिए मवेशियों को प्रतिदिन चरने के लिए एक बार फिर जंगलों में ले जाया जाता था। ऐसा तब तक चलता रहा, जब तक कि अपरिहार्य घटना घटित नहीं हो गई!
एक दोपहर, जानवरों का एक झुंड गाँव की ओर तेज़ी से लौटा, लेकिन उनमें
से एक सदस्य गायब था—और वह उन्नीस वर्षीय युवक भी गायब था जो उस सुबह जानवरों को चराने के लिए उनके साथ गया था। शाम तक किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। फिर लड़के के रिश्तेदारों को उसकी थोड़ी चिंता हुई, जबकि लापता गाय के मालिक को अपने कीमती जानवर की कहीं ज़्यादा चिंता होने लगी। अगली सुबह तलाशी में गाय मृत पाई गई: उसकी गर्दन एक बड़े बाघ ने बड़ी सफाई से तोड़ दी थी, जिसके पदचिह्न उस खेत में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे जहाँ उसे मारा गया था। सौ गज दूर, एक झाड़ी के नीचे, लापता युवक का शव मिला। हालांकि, दोनों शवों में एक अंतर था: गाय को बाघ ने नहीं खाया था, जबकि युवक के शरीर का आधे से अधिक हिस्सा बाघ खा चुका था। वही पुरानी कहानी एक बार फिर सामने आई: एक निर्दोष बाघ घायल होकर और अपने हाल पर छोड़ दिए जाने के कारण आदमखोर बन गया था।
उसके बाद एक के बाद एक दुखद घटनाएँ घटती गईं और घटनाक्रम दोहराया गया। बेलुंदुर के लोग सूर्यास्त के समय अपनी झोपड़ियों में बंद हो जाते थे, जबकि मवेशियों को बाड़ों में भूखा रखा जाता था। बूढ़े बुद्धिया की प्रतिष्ठा अपने सबसे निचले स्तर पर पहुँच चुकी थी।
मानव शिकार की कमी के कारण बाघ ने अपना दायरा टैगार्थी और उससे भी दूर
के गांवों तक फैला दिया, और तभी से उस जानवर को 'राक्षस' कहा जाने लगा। यह नाम दबी आवाज़ में, बंद दरवाजों के पीछे और केवल दिन के उजाले में ही बोला जाता था। अन्यथा, बाघ को पता चल जाता और वह उस व्यक्ति पर भयानक बदला लेता जिसने उसे बाघ कहने की हिम्मत की।
अंधेरा होने के बाद राक्षस सक्रिय हो जाता था! वह हर जगह घूमता था और बंद कमरे में भी कोई सुरक्षित नहीं रहता था। राक्षस, या उसका कोई जासूस, चमगादड़ या उल्लू के रूप में हवा में उड़ने वाली कोई बुरी आत्मा, या जंगल में रहने वाले कई शैतानों में से कोई भी, कही गई बातें सुन सकता था और उस खूंखार नरभक्षी तक खबर पहुंचा सकता था।
फिर तो इसके खिलाफ बोलने वाले व्यक्ति का सचमुच बुरा हाल हो गया! राक्षस द्वारा भयानक बदला लेने में बस कुछ ही समय बाकी था। उसका भाग्य तय हो चुका था और बचने का कोई रास्ता नहीं था। यही सर्वमान्य राय थी।
इस समय मेरे पुराने मित्र, टैगार्थी गाँव के चिकित्सा अधिकारी, डॉक्टर स्टेनली ने मुझे एक लंबा पत्र लिखा और यह कहानी सुनाई, साथ ही मुझे उस राक्षस के जीवन को समाप्त करने के प्रयास में शामिल होने का निमंत्रण दिया। इस डॉक्टर के पास केवल.12 बोर की शॉटगन थी और कोई राइफल नहीं थी। उन्होंने अपने युवा दिनों में कई बाघों का शिकार किया था, ठीक उसी तरह जैसे मैंने एक अन्य कहानी में उल्लेख किया है, संतावेरी के पोस्टमास्टर डिक बर्ड ने किया था। अब जब वे बूढ़े हो गए थे, तो उन्हें लगा कि उनकी पुरानी

बंदूक, हालांकि अभी भी एक भरोसेमंद हथियार है, आदमखोर बाघ के लिए शायद पर्याप्त नहीं होगी।
तीन दिन बाद, अपनी स्टडबेकर कार से टैगार्थी पहुँचने के बाद, मैं उनसे उनके औषधालय-सह-अस्पताल के सामने वाले कमरे में मिला। सबसे पहले उन्होंने एक शानदार भोजन और ढेर सारी चाय का आग्रह किया, जिसके बाद पाइप के धुएँ के बीच हमने लगभग तीन घंटे तक पुराने दिनों की बातें कीं। स्वभाव से मैं आमतौर पर धैर्यवान हूँ, लेकिन कभी-कभी अधीर हो जाता हूँ; अंत में मैंने उस भले डॉक्टर को याद दिलाया कि एक काम करना बाकी है। ज़ाहिर है, पहला कदम बेलुंदुर जाना और वहाँ से आगे की जानकारी जुटाना था।
स्टुडेबेकर को इस गाँव तक पहुँचने में बहुत मुश्किल हुई। रास्ता, जो हमेशा से खराब था, पिछली बारिश के बाद और भी बदतर हो गया था। मेरे बगल में बैठे डॉक्टर ने कहा कि हमें पैदल ही चलना चाहिए था। आखिरकार बेलंदूर पहुँचकर, मैंने जॉनसन की नासमझी के कारण हुई गड़बड़ी को जितना हो सके ठीक करने का प्रयास शुरू किया। मैं अपनी झोपड़ी में रूठे बैठे बुद्धियाह के पास गया, उससे अपने धार्मिक वस्त्र पहनने और मेरे लिए पूजा करने तथा अपने सभी ज्ञात मंत्रों का जाप करने का अनुरोध किया, ताकि मैं आदमखोर को मार गिराने में सफल हो सकूँ, और उसे दस रुपये आकस्मिक खर्चों के लिए दिए।
वह तुरंत खुश हो गया। देखते ही देखते वह बाज़ार में चला गया, पूरी तरह सज-धज कर, और वहाँ पहुँचते ही उसने मुझसे पाँच रुपये और माँगे, ताकि एक काले मुर्गे और स्थानीय शराब 'अराक' की एक बोतल का खर्च निकल सके। मुर्गे को मारकर, पकाकर वह खुद खाने वाला था, शायद जंगल की आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए, और अराक को भी बुद्धिया पीने वाला था, शायद उसी उद्देश्य से। बूढ़े ने कहा कि इसके बाद ही वह आदमखोर के विनाश के मंत्रों का उच्चारण करने की स्थिति में होगा। डॉ. स्टेनली और मैं, यह जानते हुए कि वह कैसी स्थिति होगी, हमने सहमति जताने का नाटक किया।
मैंने पैसे सौंप दिए और कम से कम एक घंटे की और देरी के लिए खुद को तैयार कर लिया, क्योंकि मुर्गे के अधपका होने में इतना ही समय लगता, जबकि बुद्धियाह अपने मंत्रों का जाप करने के लिए अराक पीकर खुद को तैयार कर रहा था। लेकिन अगर जॉनसन द्वारा किए गए नुकसान की भरपाई करनी थी, तो उस बूढ़े आदमी और खासकर बेलुंदुर गांव के लोगों को खुश रखना जरूरी था।
डॉक्टर और मैं बातें कर रहे थे, तभी उस बदकिस्मत काले मुर्गे को लाया गया, हमारी आँखों के सामने उसका वध किया गया, उसे उबालकर करी बनाया गया और फिर उस लालची बूढ़े जादूगर ने उसे चट कर लिया। बिना रुके ही उसने बोतल का ढक्कन अपने मुँह से लगाकर सारा अराक पी डाला। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह इस प्रक्रिया में घुटकर मरा क्यों नहीं।
यह सब करने के बाद, जादूगर लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ। वह बुरी तरह नशे में था और मुश्किल से सीधा खड़ा हो पा रहा था। लाल आँखों और एक बेजान मुस्कान के साथ, उसने अपने शरीर पर कहीं से एक गंदे कपड़े के थैले से सूखी और मुड़ी हुई जंगली लताओं से बनी एक कंगन जैसी दिखने वाली चीज़ निकाली। मेरी राइफल मांगते हुए, उसने उस कंगन को राइफल के मुंह के सिरे से लेकर बैरल की पूरी लंबाई तक तीन-चार बार घुमाया। वह इतना नशे में था कि एक-दो बार उसका निशाना चूक गया, लेकिन मैंने चुपचाप बैरल के सिरे को इस तरह घुमाकर गलती सुधार ली कि कंगन उसके चारों ओर लिपट जाए।
मंत्र का अंत हो गया। बाघ का अंत निश्चित था! वह मेरी राइफल से मारा जाएगा! बूढ़े बुद्धिया के रूप में जंगल की आत्माओं ने खूब खाया-पिया था।

हमारे चारों ओर घेरा बनाकर खड़े ग्रामीणों की भीड़, जो हर छोटी-छोटी बात पर नज़र रख रही थी, ने ज़ोर से यह आश्वासन दिया। खैर, मंत्र और उनके आश्वासन ठीक समय पर समाप्त हुए, क्योंकि अगले ही पल बूढ़े बुद्धिया कुल्हाड़ी से मारे जाने की तरह ज़मीन पर गिर पड़े।
सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि सद्भाव बहाल हो गया था। बुद्धियाह का सम्मान फिर से बढ़ गया था, साथ ही ग्रामीणों और बेलुंदुर गांव का भी। डॉ. स्टेनली और मुझे 'अच्छे लोग' कहकर सम्मान दिया जाने लगा, जबकि उस राक्षस की गतिविधियां क्षण भर के लिए दब गईं। उस समय वह एक साधारण बाघ से ज्यादा कुछ नहीं था, जो गोली लगने का इंतजार कर रहा था।
अब अंधेरा हो चुका था, और स्टुडेबेकर में टैगार्थी वापस जाना किसी बुरे सपने जैसा था। फिर भी हम बिना किसी टूटे हुए एक्सल या स्प्रिंग के वहाँ पहुँच गए, लेकिन हमने तय कर लिया कि अब से हम पैदल ही जाएँगे और वापस आएँगे, बजाय इसके कि गाड़ी खराब होने का जोखिम उठाएँ, जो कि अगर हमने किस्मत को ज्यादा आजमाया तो होना ही था।
स्टैनली ने टैगार्थी से दो चारे प्राप्त किए, जिन्हें हमने अगले दिन बेलंदूर जाने वाले रास्ते के पास उपयुक्त स्थानों पर बांध दिया, क्योंकि आपको याद होगा कि मैंने आपको बताया था कि उस समय तक बाघ पूरे क्षेत्र में सक्रिय था। दोपहर के भोजन के बाद हम सात मील चलकर उस गाँव तक पहुँचे, और वहाँ हमें बिना किसी कठिनाई के तीन और जानवर अतिरिक्त चारे के रूप में मिल गए। स्पष्ट रूप से, पिछली शाम बुद्धिया के साथ हमने जो छोटा सा तमाशा आयोजित किया था, उसका अच्छा प्रभाव पड़ा था। इन चारों को उन स्थानों पर बांधा गया, जिनके बारे में ग्रामीणों ने हमें बताया था कि वहाँ अक्सर बाघ आता-जाता रहता है।
समय हमारे लिए प्रतिकूल था और हम इतनी जल्दी में थे कि उस दिन बिछाए
गए पाँचों चारे में से किसी एक के ऊपर मचान नहीं लगा पाए। यह मेरी सामान्य प्रक्रिया के विपरीत था, जिसमें मैं पहले मचान बनाता हूँ और फिर उसके सामने चारा बाँधता हूँ। इस प्रक्रिया के दो फायदे हैं: पहला, अगर कोई शिकार होता है, तो वह मचान के ठीक सामने होता है और उसे हटाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। दूसरा, मचान बनाते समय कोई शोर नहीं होता, जो शिकार होने पर अनिवार्य रूप से होता। अगर बाघ आस-पास कहीं छिपा हो या घात लगाए बैठा हो, तो ऐसे शोर से उसे शक हो सकता है।
जब हम टैगार्थी वापस लौटे तो फिर से घना अंधेरा हो चुका था, हम आदमखोर
के अचानक हमले से बचने के लिए अपनी टॉर्च से लगातार सतर्क थे, लेकिन हमें केवल एक पैंगोलिन ही मिला जो सूखे पत्तों के बीच भोजन की तलाश कर रहा था, जो इन जीवों के लिए सामान्य से बहुत पहले बाहर निकला था।
उस रात हमने जो पाँचों चारे बाँधे थे, उनमें से किसी को भी किसी ने नहीं छुआ। लेकिन तीसरे दिन सुबह देर से एक आदमी डॉक्टर के औषधालय में दौड़ता हुआ आया और बताया कि उसके चचेरे भाई को बाघ ले गया है। पीड़ित और उसकी पत्नी, हमारे सूचना देने वाले और उसकी पत्नी के साथ, बेलंदूर जाने वाले रास्ते पर थोड़ी ही दूरी पर अगल-बगल बनी दो झोपड़ियों में रहते थे। जब यह चचेरा भाई, जो सामान लेने के लिए टैगार्थी से लौट रहा था, झोपड़ियों के सामने इकट्ठा होकर बातें कर रहे उस छोटे से समुदाय के तीन अन्य सदस्यों के सामने आया, तब सूरज दोपहर के समय था। वे उसे पुकारने ही वाले थे कि वह ज़ोर से चिल्लाया और फिर हवा में गायब हो गया।

बाघ सचमुच बहुत भूखा रहा होगा, क्योंकि हमने देखा कि उसने अपने शिकार
का आधा से ज़्यादा हिस्सा चट कर लिया था, बस उसका सिर, हाथ, टांगें और कुछ पसलियाँ ही बची थीं। स्टेनली और मैंने एक-दूसरे से बात नहीं की। हम दोनों इतने अनुभवी थे कि जानते थे कि इंसान की आवाज़ बहुत दूर तक सुनाई देती है। इसके बजाय, मैंने चारों ओर देखा कि क्या कोई ऐसी जगह है जहाँ मैं छिप सकूँ और उस आदमखोर बाघ के लौटने का इंतज़ार कर सकूँ, अगर वह बचे हुए टुकड़े खाने के लिए वापस आने का फैसला करे।
लेकिन उस राक्षस ने अपनी अगली हरकत से मेरे सारे विचार झटक दिए, जो जितनी अप्रत्याशित थी उतनी ही अचानक भी। शायद भूख थी, या स्वभाव से ही खराब स्वभाव, या फिर शायद इसलिए कि भागते समय उसने देखा कि भीड़ नहीं बल्कि सिर्फ दो इंसान उसका पीछा कर रहे थे। खैर, वह असाधारण जानवर अचानक रुक गया, मुड़ा और हमारी तरफ बढ़ने लगा, पास आते ही उसकी दहाड़ और तेज़ हो गई। ज़मीन उसकी आवाज़ की तीव्रता से कांप उठी, और उसकी बढ़ती हुई तीव्रता से संकेत मिल रहा था कि बाघ खतरनाक रूप से करीब आ रहा है। आपको यह ध्यान रखना होगा कि इस पूरे समय हम उस जानवर को देख नहीं पा रहे थे क्योंकि वह झाड़ियों में छिपा हुआ था। हम बस झाड़ियों को ज़ोर से हिलते हुए देख पा रहे थे जैसे-जैसे वह करीब आता जा रहा था।
जो कुछ घट रहा था, वह उस सिद्धांत की पुष्टि करता है जिसे मैंने अपनी पिछली कहानियों में बार-बार दोहराया है। जंगल में कोई निश्चित नियम नहीं होते और कोई भी दो जानवर एक जैसे नहीं होते। हमारी तरह वे भी अलग-अलग प्राणी हैं; वे अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं और अक्सर अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होती हैं।
एक बार फिर कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होकर, डॉक्टर और मैं उस आदमखोर बाघ की ओर मुड़े, जो हम पर हमला करके हमारी समस्या का समाधान कर रहा था। एक मिनट में बाघ को अपना असली रूप दिखाना ही था, और फिर सब कुछ खत्म हो जाता। लेकिन वो पल कभी आया ही नहीं! क्योंकि राक्षस उम्मीद से कहीं ज़्यादा चालाक था। आखिरी क्षण में उसने अपना इरादा फिर बदल दिया और बिना खुद को दिखाए, हमारे और अपने भोजन के बचे हुए हिस्से के चारों ओर चक्कर लगाने लगा, और पूरी ताकत से गुर्राता और दहाड़ता रहा। अब उस जानवर की चाल साफ़ थी। हमला करने ही वाला था कि उसका साहस फिर से टूट गया। अब उसका इरादा अपने शोर से हमें भगाना था।
फिर मुझे एक विचार आया। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती थी कि बाघ कितना चौकस था, उसकी याददाश्त कितनी तेज़ थी और उसकी सहज प्रवृत्ति कितनी सतर्क थी। उसने हम दोनों को आते हुए देख लिया था। यह तो स्पष्ट था। अब अगर हममें से एक चला जाए और दूसरा शिकार के अवशेषों के पास कहीं घास में छिप जाए, तो क्या बाघ को इस बात का पता चलेगा? क्या वह सोचेगा कि खतरा टल गया है और अपने शिकार की ओर लौट जाएगा? क्या वह पीछे हट रहे व्यक्ति का पीछा करके उस पर हमला करने के लिए ललचाएगा? क्या वह हमारी उस चाल को समझ जाएगा जिसमें हम पीछे रह गए व्यक्ति का पीछा करके उस पर पीछे से हमला करने की कोशिश कर रहे थे?
इस स्थिति में बहुत सी अनिश्चितताएं थीं और मैं स्वीकार करता हूं कि मुझे वे बिल्कुल भी पसंद नहीं थीं। इसके अलावा, डॉक्टर के पास केवल एक शॉटगन थी। अगर मैं उन्हें वापस जाने और मुझे पीछे छोड़ने का सुझाव देता, तो संभव था कि बाघ उनका पीछा करने का फैसला कर ले, जिससे स्टेनली को भारी नुकसान होता। दूसरी ओर, अगर मैं डॉक्टर को पीछे छोड़कर खुद चला जाता और

निकलकर उसके और बाघ के पीछे आ रहा हूँ। अब खुद को बाघ की जगह पर रखिए, गुस्से के बाद अब आपने अपना संयम वापस पा लिया है। आप धीरे और चुपचाप आगे बढ़ रहे हैं, उस दखल देने वाले इंसान का अंत करने पर तुले हुए हैं जिसने आपका पीछा करने की हिम्मत की है। साथ ही, आप जानते हैं कि आप आखिरी छलांग लगाने के लिए काफी करीब हैं, लेकिन आपकी अंतरात्मा आपको चेतावनी देती है कि ऐसा करना खतरे को न्योता देना होगा। और आपको नहीं पता कि एक दूसरा इंसान भी आपका पीछा कर रहा है। उन दोनों के पीछे मैं हूँ, उतनी ही सावधानी से आगे बढ़ रहा हूँ, मेरी विंचेस्टर बंदूक भरी हुई है और बाघ की पहली झलक मिलते ही इस्तेमाल के लिए तैयार है। लेकिन मैं उसे या स्टेनली को नहीं देख पा रहा हूँ। मैं बस अपने सामने इधर-उधर झाड़ियों की हल्की सरसराहट सुन पा रहा हूँ, जैसे स्टेनली या बाघ अपनी सावधानी के बावजूद उनसे टकरा रहे हों। अंत में, यह मत भूलिए कि डॉक्टर और मेरे बीच की दूरी अब चालीस या पचास गज से अधिक नहीं हो सकती, और बाघ कहीं बीच में मौजूद है।
काश उस बाघ में थोड़ी अक्ल होती, तो उस दिन कितना मज़ा आता! उसे बस इतना करना था कि खुद को छिपा लेता और फिर दौड़ते हुए बाघ की तरह 'व्रूफ़! व्रूफ़! व्रूफ़!' की दहाड़ लगाता। स्टेनली और मैं गोली चला देते। कोई न कोई अपने साथी को गोली मार देता। शायद किस्मत से—या बदकिस्मती से—हम एक-दूसरे को ही गोली मार देते। उन दिनों मैं आज के मुकाबले कहीं ज़्यादा आसानी से खाया जा सकता था! डॉक्टर भी, भले ही उससे हल्की-सी आयोडीन की गंध आती! और अखबारों की क्या सुर्खियाँ होतीं! 'आदमखोर के पीछे भागे शिकारियों ने एक-दूसरे को गोली मार दी! आदमखोर ने दोनों को खा लिया!'
मैं बाघ का पीछा करने में इतना मग्न था कि उस समय मुझे इन सब बातों का एहसास ही नहीं हुआ। आदमखोर बाघ, जिसे अपने पीछे आने का पता ही नहीं था, स्टैनली के पीछे लगातार लगा रहा; वहीं डॉक्टर, बाघ की धमकी भरी दहाड़ों के बाद छाई खामोशी से स्वाभाविक रूप से चिंतित था, क्योंकि बाघ के पीछे आने पर बीच-बीच में हल्की-सी सरसराहट सुनाई दे रही थी। वह सोच रहा था कि क्या वह हमले से पहले झोपड़ियों तक पहुँचने वाले रास्ते पर पहुँच पाएगा।
फिर कुछ ऐसा हुआ! डॉक्टर! डॉक्टर मौके पर पहुँच गए। बाघ ने दहाड़ते हुए सन्नाटा तोड़ दिया! कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन सब कुछ सुनाई दे रहा था, इसलिए मैं तुरंत समझ नहीं पाया कि आदमखोर डॉक्टर पर हमला कर रहा है या मुझ पर। डॉक्टर ने गोली चलाई और उनकी बंदूक से निकली गोलियां झाड़ियों के बीच से मेरे बेहद करीब आकर बिखर गईं। आवाज़ से भयभीत बाघ घबरा गया, मुड़ा और पूरी रफ्तार से मेरे पास से भाग निकला। मैंने बाघ को आते देखा, राइफल को कंधे पर रखा और लगभग बिल्कुल करीब से ट्रिगर दबा दिया।
स्टैनली ने कुछ मिनट बाद मुझे बताया कि मेरी गोली उसके सिर के बिल्कुल पास से गुज़री, बस कुछ इंच की दूरी से। उसने ज़ोर देकर कहा कि गोली उसके सिर के बाल भेदने से बस इसलिए बच गई क्योंकि वह गंजा था! अनजाने में ही उस राक्षस ने लगभग वह कर दिखाया जो वह तर्क शक्ति से नहीं कर पाया था। डॉक्टर और मैं बाल-बाल एक-दूसरे को गोली मारने से बच गए।
फिर भी हमें उम्मीद बाकी थी। हम दोनों को शिकार का अच्छा खासा अनुभव था। जब हमने ट्रिगर दबाया था, तब हम दोनों गोली चलाने के लिए पूरी तरह तैयार थे। दोनों ने बिलकुल नज़दीक से गोली चलाई थी। बाघ ज़रूर पास ही बुरी तरह घायल पड़ा होगा, शायद मर भी गया हो। हममें से किसी एक ने तो उसे कम से कम घायल किया ही होगा। उत्साह में हम इस बात को भूल गए कि मैंने स्टेनली की

बंदूक से निकली गोलियों की आवाज़ सुनी थी, जबकि उसने मेरी गोली की आवाज़ सुनी थी।
हमने दूर-दूर तक खोजबीन की, लेकिन खून का एक धब्बा भी नहीं मिला। न कहीं मरा हुआ या घायल बाघ दिखाई दिया, न उसकी आवाज़ सुनाई दी! तभी हमें सच्चाई समझ में आई। यह मानना भले ही कठिन था, लेकिन सच सामने था। हम दोनों चूक गए थे, हालाँकि राक्षस लगभग हमारे आमने-सामने आ गया था। स्टेनली बहुत उदास दिख रहा था। मुझे नहीं पता कि मैं कैसा दिख रहा था; लेकिन मुझे पता है कि मैं कैसा महसूस कर रहा था!
हम चुपचाप झोपड़ियों की ओर वापस चले गए, जहाँ छिपे हुए एक आदमी और दो महिलाओं को हमने सारी घटना बताई। टैगार्थी से आधा फर्लांग दूर ही थे कि निराशा से सुन्न हो चुका मेरा दिमाग फिर से काम करने लगा।
आम तौर पर, गोलीबारी के बाद बाघ लंबे समय तक उस जगह से दूर रहता है जहाँ गोलीबारी हुई थी। याद रहे, इस बाघ पर एक बार नहीं, बल्कि दो बार गोलीबारी हुई थी! इसलिए, सभी नियमों के अनुसार, उसे उस इलाके को छोड़ देना चाहिए था और वहाँ दोबारा नहीं दिखना चाहिए था। लेकिन क्या इसके विपरीत कोई छोटी सी संभावना थी? उस बाघ ने पहले ही दो मौकों पर अपना बेहद असामान्य स्वभाव दिखाया था। वह भागा और फिर मुड़कर वापस रेंगता हुआ आ गया। और जब स्टेनली के लिए अपने शिकार तक पहुँचने का रास्ता साफ था, तब भी उसने जानबूझकर उसका पीछा किया था। क्या वह एक बार फिर अपना अनोखा स्वभाव दिखाते हुए उस जगह पर लौटेगा जहाँ, कम से कम उसकी अंतरात्मा तो यही कहती है, वह दो बार बाल-बाल बचा था? इसकी संभावना 99 प्रतिशत थी। यानी बाघ के वापस लौटने की मात्र एक प्रतिशत संभावना थी!
यह ख्याल आते ही मैं थम गया। डॉक्टर भी रुक गए, सोचने लगे कि क्या बात है। मैंने उन्हें बताया। स्टेनली ने सोचते हुए अपनी भौंहें सिकोड़ीं और माथे पर शिकन डाली। फिर उन्होंने सिर हिलाया। लेकिन वह खुद भी इतने अच्छे शिकारी थे कि इस मौके को गंवाना नामुमकिन नहीं था। इसलिए हम वापस झोपड़ियों की ओर चल पड़े।
सुरक्षा के लिए एक झोपड़ी में बंद उस आदमी और दोनों महिलाओं को हमारी जल्दी वापसी देखकर आश्चर्य हुआ। जब हमने उन्हें बताया कि हम क्यों आए थे, तो वे सचमुच खुश हुए। लेकिन उन्होंने ईमानदारी से कहा कि उन्हें नहीं लगता कि हमारे सफल होने की कोई उम्मीद थी। उस आदमी का मानना था कि बाघ अब तक कई मील दूर जा चुका होगा।
स्टैनली और मैं उस जगह पर वापस लौटे जहाँ आदमखोर बाघ के शिकार के अवशेष बिखरे पड़े थे। हमने उस जंगल के हिस्से से गुजरते हुए अत्यधिक सावधानी बरती, जहाँ डॉक्टर, बाघ और मैंने लुका-छिपी का अपना अजीब खेल खेला था। हमारे शिकार का न तो कोई निशान था और न ही कोई आवाज़।
हम सबमें राहत और निराशा का एक अजीब मिश्रण भर गया, राहत इस बात की कि राक्षस ने दोबारा हमला नहीं किया और निराशा इस भावना से कि वह शायद कभी वापस न आए।
मैंने छिपने की संभावनाओं का जो सर्वेक्षण किया था, वह भले ही जल्दबाजी में किया गया था, लेकिन उसमें संभावनाओं का सही-सही आकलन किया गया था। डॉक्टर के पीछे हटने के दौरान मैं जिस चार फुट ऊँची झाड़ी के पीछे खड़ा था, उसके अलावा छिपने की कोई और जगह नहीं थी। दिन के उजाले में आदमखोर बाघ से बचने के लिए उस झाड़ी के पीछे छिपना, जैसा कि मैंने पहले भी किया था, एक बात थी; लेकिन अंधेरा होने के बाद वहाँ टिके रहना बिलकुल अलग बात थी।

बाघ, जो रात में देख सकता है, मुझे तुरंत देख लेगा जैसे ही वह अपने शिकार के बचे हुए हिस्से की ओर उस झाड़ी के ठीक सामने से छोड़कर किसी भी कोण से आएगा, जिसके पीछे मैं छिपा रहूँगा, जबकि मेरे लिए उसे देखना नामुमकिन होगा। इसके अलावा, अगर कुछ ही घंटे पहले दो बार गोली लगने के बावजूद वह वापस आ भी जाता है, तो आदमखोर बाघ निस्संदेह बेहद सावधानी से आएगा और मैं उसे सुन नहीं पाऊँगा। अंत में, उस छोटी सी झाड़ी के पीछे किसी भी तरह का आश्रय बनाना संभव नहीं था जिससे मेरी मौजूदगी का तुरंत पता न चल जाए।
मैं क्या कर सकता था? आदमखोर बाघ के वापस आने की उस छोटी सी संभावना
को भी मैं छोड़ना नहीं चाहता था। आत्महत्या करना, और वह भी बाघ के जबड़ों में सबसे दर्दनाक तरीके से, तो मैं और भी ज्यादा अनिच्छुक था।
हम चुपचाप इस मामले पर विचार करते रहे और कोई हल निकलता नहीं दिख रहा
था, तभी अचानक डॉक्टर को एक विचार आया। क्या पास की झोपड़ियों में रहने वाले उस आदमी और दो महिलाओं की मदद से, ठीक उसी जगह पर एक संकरा गड्ढा खोदना संभव नहीं होगा जहाँ मानव अवशेष बिखरे हुए थे? वह उस गड्ढे में छिप जाएगा जो उसे छुपाने के लिए काफी चौड़ा और गहरा होगा, बाघ के लौटने का इंतजार करेगा और फिर उसे बिल्कुल करीब से गोली मार देगा।
इस योजना को अमल में लाने में कई बाधाएँ आईं। पहली बाधा यह थी कि बाघ
को गड्ढा दिख जाए और वह भाग जाए; इससे भी बुरी बात यह थी कि बाघ उसकी जाँच-पड़ताल करने का फैसला कर ले। दूसरी बात यह थी कि गड्ढे में छिपा आदमी बाघ से छिपा हुआ था, लेकिन बाघ भी उस आदमी से छिपा हुआ था, जिसे बाघ पर गोली चलाने के लिए सीधा खड़ा होना पड़ता। इस दौरान बाघ उसे देख लेता, मानो वह ज़मीन से बाहर निकल रहा हो। ऐसा होने पर बाघ डर तो जाता, लेकिन साथ ही साथ बहुत गुस्सा भी हो जाता। इसके बाद क्या होता, यह इस बात पर निर्भर करता कि ऊपर बताई गई प्रतिक्रियाओं में से कौन सी हावी होती है।
खैर, इसके बारे में और सोचने का कोई फायदा नहीं था। मौका और जोखिम उठाना ही पड़ेगा, नहीं तो पूरी योजना रद्द करनी पड़ेगी। समय बीत रहा था और दोपहर के 3 बज चुके थे। हमें जल्दी काम करना होगा। हम जल्दी से झोपड़ियों में वापस गए, जहाँ रहने वालों ने खुशी-खुशी हमारी मदद करने की पेशकश की, लेकिन बताया कि उनके पास खोदने के लिए किसी भी तरह के औजार नहीं हैं। डॉक्टर, जो गाँव के चिकित्सक के रूप में काफी प्रभावशाली थे, ने इस समस्या का समाधान निकाला और तुरंत टैगार्थी लौट गए। वहाँ से वे कुछ ही समय में छह सहायकों के साथ वापस आ गए, जिनमें से दो के पास कुल्हाड़ी, दो के पास लोहे की छड़ें और दो के पास बड़ी टोकरियाँ थीं जिनमें खोदी गई मिट्टी को इकट्ठा किया जा सके। पहले के तीन सहायकों और हमारे साथ, हम ग्यारह लोग काम पर लग गए, और नतीजा यह हुआ कि आश्चर्यजनक रूप से जल्दी ही गड्ढा खोद दिया गया और सारी मिट्टी निकालकर दूर फेंक दी गई।
मुझे पता था कि योजना के जनक होने के नाते, स्टेनली ने खुद बैठने के लिए गड्ढा तैयार किया था। मुझे यह भी पता था कि कितना भी समझाने पर भी वह नहीं मानेगा। अगर मैं उसे यह समझाने की कोशिश करता कि उसकी शॉटगन इतने खतरनाक शिकार के लिए कारगर हथियार नहीं है, तो वह जवाब देता कि इतनी नज़दीकी दूरी पर तो यही सही हथियार है। और मैं उसके दावों की सच्चाई को नकार भी नहीं सकता था, क्योंकि वास्तव में, बिल्कुल नज़दीकी दूरी पर.12 बोर की बंदूक के अपने फायदे होते हैं। इसलिए मैंने एक बार के लिए निष्क्रियता को स्वीकार कर लिया और टैगार्थी में रात बिताई।

मेरे साथ रवाना होने से पहले हमारे सहायक अपना औजार समेट ही रहे थे कि किस्मत ने एक बार फिर इस विचित्र घटना में अपना खेल खेला। दो आदमी अचानक हमारे सामने आ गए, जो डॉक्टर की तलाश में टैगार्थी से दौड़ते हुए आए थे। एक गांव का पटेल था, जो इतने ज़िम्मेदार पद के लिए काफी युवा था; दूसरा उसका नौकर था। पटेल ने बताया कि उसकी गर्भवती पत्नी कुएं से पानी का घड़ा लाते समय फिसलकर गिर गई। उसका गर्भपात हो गया है और उसे बहुत खून बह रहा है। डॉक्टर को तुरंत आना चाहिए।
जब वह बोल ही रहा था, तभी उस युवक ने स्थिति को भांप लिया और समझ गया
कि स्टैनली बाघ का सामना करने के लिए तैयार हो रहा है। इसलिए अपनी बात को और प्रभावी बनाने के लिए, वह ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने लगा कि डॉक्टर, जो उसका सबसे अच्छा दोस्त है, उसे तुरंत उसकी पत्नी की जान बचाने के लिए आना चाहिए, और साथ ही साथ उसने उस औरत को ज़िद्दी औरत कहकर कोसना शुरू कर दिया। उसने कितनी बार उसे वज़न न उठाने के लिए कहा था, खासकर कुएँ से पानी का घड़ा। क्या वह गाँव का मुखिया नहीं था? क्या उसके पास इस काम के लिए पर्याप्त नौकर नहीं थे? फिर भी अपनी ज़िद्दीपन में वह उसकी बात नहीं सुनती थी। अब यही नतीजा निकला। और बाघ की बात छोड़ो; क्या उसकी पत्नी की जान ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं थी?
स्टैनली ने मेरी तरफ देखा, उसके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी। फिर उसने प्यार से मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया।
‘शुभकामनाएं, एंडी,’ उसने बुदबुदाते हुए कहा, ‘और कृपया सावधान रहना। क्या तुम मेरी बंदूक का इस्तेमाल करना चाहोगे?’
‘धन्यवाद, डॉक्टर,’ मैंने जवाब दिया, ‘आप जानते ही हैं। बूढ़ी विनी से
काम चल जाएगा।’
एक मिनट के भीतर ही स्टैनली और समूह के बाकी सदस्य, जिनकी संख्या बढ़कर बारह हो गई थी, नज़रों से ओझल हो गए। मैं मृत व्यक्ति के अवशेषों के साथ अकेला रह गया।
शाम ढलने लगी थी और एक पल भी गंवाने का समय नहीं था। मैंने तैयार किए
गए गड्ढे में प्रवेश किया, तल पर बैठ गया और ऊपर आसमान के एक वृत्त को देखने लगा। मैंने अपनी भरी हुई और तैयार विंचेस्टर पिस्तौल को इस तरह झुकाया कि उसका बट मेरी दाहिनी जांघ से सटा हुआ था और फोरसाइट-गार्ड मेरे सामने वाले गड्ढे की दीवार से टिका हुआ था। हमने स्टैनली की.12 बोर की बंदूक को एक खास स्थिति में मापकर यह सुनिश्चित कर लिया था कि उसका अगला सिरा जमीन से ऊपर दिखाई न दे।
जिस योजना को बनाने और उसे अंजाम देने की जल्दबाजी और उत्साह में, जो
अब मुझे धीरे-धीरे समझ में आने लगी थी कि काफी अजीब थी, हम इस बात को भूल गए थे कि गड्ढे के अंदर बहुत गर्मी होगी। आसपास की मिट्टी दिन भर सूरज की किरणों के संपर्क में रही थी, हवा अंदर नहीं जा पा रही थी, और मेरा शरीर गड्ढे के किनारों के बिल्कुल करीब होने के कारण, हवा का संचार कहीं भी नहीं हो पा रहा था। जल्द ही मुझे बहुत पसीना आने लगा।
सौभाग्य से उन दिनों टैगार्थी के आसपास या मैसूर राज्य के उत्तर-पश्चिम में स्थित किसी भी जिले में जंगली हाथी नहीं थे। वे ऐसे दिन थे जब सैकड़ों बाघ घूमते थे, लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं और मांसाहारी जानवर दुर्लभ हो गए हैं, लेकिन अपने जंगली रूप में 'जंबो' ने उन जंगलों में अपना विचरण बढ़ा दिया है और हाथियों के झुंडों ने अब वहाँ अपना घर बना लिया है, जहाँ कभी कोई हाथी नहीं हुआ करता था।

मुझे याद है कि उस गड्ढे के अंदर सन्नाटा पसरा हुआ था और रात को सोने
के लिए बैठते हुए मोर, जंगली मुर्गे और अन्य पक्षियों की चहचहाहट भी मुश्किल से सुनाई दे रही थी। आदमखोर बाघ की किसी हल्की सी आवाज़ से भी उसके आने की आहट सुनने की उम्मीद करना नामुमकिन था। मैं उसे तभी सुन पाता जब वह पास में दहाड़ता या गुर्राता, और वह राक्षस ऐसा करने वाला नहीं था—कम से कम मुझे यही लग रहा था, जब तक कि मुझे याद नहीं आया कि बाघ ने कुछ ही घंटे पहले ठीक ऐसा ही किया था। काश वह चुपचाप आने के बजाय फिर से ऐसा ही करता! लगभग अंधेरा हो चुका था जब मेरे सिर के ऊपर आकाश के घेरे को पार करते हुए एक लंबी काली आकृति चुपचाप गुजरी। एक नाइटजार, पंख फैलाए, उस जगह के ऊपर से नीची उड़ान भर रहा था, जाहिर तौर पर उन कीड़ों को खाने की संभावना तलाशने के लिए जो पहले से ही इकट्ठा होकर मानव हड्डियों से लटके हुए मांस के टुकड़ों पर भोजन कर रहे थे और बाघ के दुर्भाग्यपूर्ण शिकार के शव के कुछ हिस्सों को खा रहे थे। मैं नीली मक्खियों की भिनभिनाहट सुन सकता था जो मेरे सिर के ऊपर के छेद के ऊपर से उड़कर उस गंदगी पर बैठ रही थीं, जबकि सड़ते हुए मांस की दुर्गंध, जो दिन भर धूप में तपते रहने से और भी बढ़ गई थी, जमीन से चिपकी हुई और एक अदृश्य, घिनौने तरल की तरह छेद में बहती हुई प्रतीत हो रही थी।
क्या बाघ आएगा? क्या वह तुरंत खाना शुरू कर देगा? या उसे कुछ असामान्य होने का आभास हो जाएगा? हो सकता है वह दूर किसी झाड़ी की आड़ से हमें देख रहा हो। हो सकता है उसे उसी क्षण पता चल गया हो कि उसका एक कट्टर दुश्मन, एक आदमी, कहीं जमीन में छिप गया है। अब बाघ के लिए उस दुश्मन को खोदकर निकालने और खा जाने का बेहतरीन मौका होगा। यह सोच बिल्कुल भी उत्साहजनक नहीं थी!
ऊपर जहाँ अंडाकार आकाश फैला हुआ था, वहाँ अब दो तारे टिमटिमाते हुए मुझ पर पड़ रहे थे और मैं समझ गया कि रात हो चुकी है। वे ऊपर इतने शांत और निर्मल प्रतीत हो रहे थे मानो नीचे गड्ढे में मेरी दयनीय स्थिति से बेखबर हों। मेरे विचार उन्हीं तारों पर केंद्रित हो गए और मैं सोचने लगा कि पृथ्वी के अन्य दूरस्थ कोनों में उस क्षण घट रही अन्य त्रासदियों पर भी वे तारे इतनी निष्पक्षता से टिमटिमा रहे होंगे।
अगले ही पल, वे दोनों तारे एक अशुभ संकेत देने लगे। वे दो क्रूर आँखों में बदल गए जो शत्रुतापूर्ण प्रत्याशा से मेरी ओर घूर रही थीं। किस बात की?
मैंने खुद को इस निराशाजनक विचार से मुक्त करने और कुछ और सोचने के लिए मजबूर किया। यह आश्चर्यजनक है कि खतरे में होने पर, जैसा कि मैं उस समय था, मन में कितने अजीब और अक्सर अप्रासंगिक विचार आते हैं। शायद यह प्रकृति का घबराहट से बचाव का तरीका है। मैंने सोचा कि क्या स्टेनली पटेल की पत्नी की जान बचा पाएगा।
तभी मैंने पहली बार वह आवाज सुनी: धीमी लेकिन स्पष्ट रूप से भारी सांस लेने की आवाज।
यह ज़रूर बाघ होगा! इसने मुझे ढूंढ लिया था और मेरे छिपने की जगह से मुझे बाहर खींचने के लिए पेट के बल रेंग रहा था। अनायास ही मेरा हाथ राइफल की ओर बढ़ गया। धातु और लकड़ी का स्पर्श, उस भयानक गड्ढे में हर चीज़ की तरह गर्म, मेरे मन को बहुत सुकून दे रहा था।
आवाज कुछ देर के लिए बंद हो गई। फिर अचानक एक तेज फुफकार सुनाई दी, और फिर सन्नाटा छा गया। क्या यह कोई पैंथर गुजर रहा था?

लेकिन वहाँ एक दूसरा बाघ भी मौजूद था। अगर मेरे सिर और कंधों को, और फिर राइफल को ज़मीन से निकलते हुए देख लेते, तो शावक भी भेद खोल देते। यह सोचना तो कल्पना और भाग्य पर बहुत ज़्यादा निर्भर था कि मेरे ऊपर मौजूद सभी जानवर मेरी तरफ पीठ करके गलत दिशा में देख रहे होंगे। और अगर मेरे ऊपर दो बाघ हों, तो उनमें से आदमखोर कौन होगा? यह तो एक बेतुका सवाल है: ज़ाहिर है, जो खा रहा होगा वही। लेकिन क्या दोनों बाघों में आदमखोरी की आदत थी, या सिर्फ़ एक में? मुझे गलत बाघ को नहीं मारना चाहिए। इसलिए, कोई जोखिम न लेते हुए मुझे दोनों को गोली मारनी होगी।
दूसरा विकल्प यह था कि चुपचाप गड्ढे में बैठा रहूँ, जानवरों को अपना भोजन समाप्त करने दूँ और फिर उन्हें अपने काम पर जाने दूँ, और फिर दिन समाप्त कर दूँ। लेकिन मैं यहाँ आदमखोर बाघ को मारने आया था; उससे छिपने नहीं। मैंने उस आदमी के बारे में सोचा जिसे उसने मारा था और अब खा रहा था। जब स्टैनली और गाँव वाले सुबह आकर देखेंगे कि ज़मीन बाघ के पैरों के निशानों से ढकी है, उस आदमी के टुकड़े पूरी तरह से खा लिए गए हैं, और मैं गड्ढे में छिपा हुआ हूँ, तो वे मेरे बारे में क्या कहेंगे?
मैंने मन ही मन कहा, "चलो शुरू करते हैं," और एक-एक मिलीमीटर करके, अगर इतनी धीमी गति से चलना सचमुच संभव हो सकता है, तो मैंने अपने पैरों को सहारा देने के लिए सही जगह पर रखना शुरू किया। फिर धीरे-धीरे, बहुत धीरे- धीरे, मैंने खुद को ऊपर उठाना शुरू किया, अपने सिर को ज़मीन के स्तर तक लाने की कोशिश की। इसमें ही काफी समय लग गया, क्योंकि मुझे ज़रा सी भी आवाज़ नहीं करनी थी, और इतनी देर तक घुटनों के बल बैठने से मेरी जांघें और टांगें अकड़ गई थीं। बाघ खाना खाता रहा, बीच-बीच में गुर्राता और दहाड़ता रहा ताकि दूसरे बाघ को, या शायद उसके शावकों को, दूर रख सके।
अंततः मैं घुटनों और पंजों के बल आ गया और अपने दोनों हाथों को नीचे
की ओर फैलाकर अपनी फैली हुई उंगलियों पर अपना वजन टिकाने की कोशिश की। फिर बहुत धीरे-धीरे मैंने खुद को ऊपर उठाना शुरू किया।
समय बीत चुका था और मेरे हाथों और पैरों पर पड़ने वाला तनाव दिखने लगा था। लेकिन मुझे जल्दी नहीं करनी चाहिए। अब भी, जैसे-जैसे मेरे कान ऊपर की सतह के करीब आते गए, बाघ की दहाड़ें और तेज़ होती गईं। मैं डरने लगा था। अपने वजन को संभाले रखने के लगातार तनाव से मेरे हाथ कांपने लगे थे,
तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरा सिर लगभग ज़मीन के स्तर तक पहुँच गया है। मैं और देर नहीं कर सकता था, क्योंकि अगर बाघ या बाघ मेरी तरफ देख रहे होते तो वे मुझे देख लेते, जबकि मैं उन्हें नहीं देख पाता। इसलिए मैंने जल्दी से अपना सिर ऊपर उठाया, जब तक कि मेरी आँखें ज़मीन के स्तर तक नहीं पहुँच गईं। मेरे सामने एक भयानक दृश्य प्रकट हुआ। सौभाग्य से, इतने लंबे समय तक गड्ढे के अंधेरे में बैठे रहने के कारण मेरी आँखें अँधेरे की आदी हो गई थीं, इसलिए मैं देख सका कि कुछ ही फीट की दूरी पर, एक विशालकाय बाघ पेट के बल लेटा हुआ था और अपने अगले पंजों के बीच पकड़े हुए शिकार के किसी हिस्से को चबा रहा था। इससे भी बुरा यह था कि एक और आकृति, जो पूरी तरह से फैली हुई थी, मुझसे थोड़ी दूर और शिकार कर रहे बाघ से कुछ फीट की दूरी पर, उसके सामने थी और चिंतित होकर देख रही थी कि बाघ कैसे एक के बाद एक निवाला निगल रहा है। यह दूसरा बाघ, जो पहले बाघ के सामने था, मेरी ओर भी देख रहा था और मेरे सिर का ऊपरी हिस्सा ज़मीन से बाहर निकलते हुए देखना उसके लिए असंभव नहीं था।

मैं असमंजस में था कि क्या करूँ। क्या मुझे वहीं रहना चाहिए, या झोपड़ियों की ओर जल्दी जाना चाहिए? दोनों ही स्थिति में, मैं कुछ खास नहीं कर सकता था। इस बात की बहुत कम संभावना थी कि आदमखोर सांप अपने पहले शिकार की हड्डियों पर वापस लौटेगा, जब उसके पास एक नया शिकार मौजूद होगा। और अंधेरे के कारण मैं दूसरे शिकार को अंजाम नहीं दे पाऊँगा। वह तो सूर्योदय के बाद ही संभव होगा।
मैंने वहीं रुकने का फैसला किया। यह संभव था कि दूसरा बाघ—जिसे भगा दिया गया था—मेरे ऊपर पड़े थोड़े से अवशेषों की ओर लौट आए। अगर ऐसा हुआ तो मैं गोली चला दूंगा; भले ही वह स्वयं राक्षस न हो, यह दूसरा बाघ निश्चित रूप से समय के साथ आदमखोर बन जाएगा। मुझे याद आया कि कुछ ही समय पहले वह बेचैनी से मानव अवशेषों को खाने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, हालांकि दावत उड़ाते हुए आदमखोर ने उसे रोक रखा था।
उसके बाद मैंने पूरी रात नींद नहीं ली, असहनीय गर्मी और मेरे घर में डेरा डाले हुए छोटी-छोटी चींटियों और अन्य कीड़ों के डंक से परेशान था। कुछ भी नहीं हुआ, और लगभग चार बजे तक सन्नाटा छाया रहा। तभी एक लकड़बग्घे ने मेरे ऊपर पड़ी हड्डियों को खोज निकाला और हंगामा मच गया। लकड़बग्घे ने बाघों की गंध सूंघ ली और जान गया कि वह चोरी का अक्षम्य अपराध करने जा रहा है। उसे यह भी पता था कि मालिक या मालिकों द्वारा पकड़े जाने का मतलब मौत होगा। इसलिए वह अपनी भूख मिटाने और मारे जाने के डर के बीच असमंजस में था, और इसी असमंजस में उसने ज़ोरदार आवाज़ निकाली, जिससे पूरे जंगल को पता चल गया कि वह एक बड़ी दुविधा में फंसा हुआ है। मैं उस जीव को तेज़ी से गोल-गोल दौड़ते हुए और हर तरह की दुविधा की अजीब आवाज़ें निकालते हुए सुन सकता था। 'ची-आह! ची-ए! ची-ए!' वह बड़बड़ाया, फिर दूर की गड़गड़ाहट जैसी गुर्राहट की आवाज़ निकाली। 'गुडू-गुडू-ग्रू!' फिर उसने इस पूरे मामले पर शोक व्यक्त करने का फैसला किया: 'मी-ए!' "मी-ए! मी-ए!" उसने एक बिल्ली की तरह भोजन के लिए गिड़गिड़ाते हुए दयनीय स्वर में कहा।
लेकिन समस्या अनसुलझी ही रही: बाघ दिखाई नहीं दिया, लेकिन किसी भी क्षण आ सकता था, और अगर वह देर तक रुका रहा तो लकड़बग्घे का वह आखिरी पल होगा। इन सब बातों से मुझे मनोरंजन मिला और मेरा ध्यान उस भयानक त्रासदी से हट गया जो मेरे इतने करीब घटी होगी और मैं हस्तक्षेप करने में असमर्थ था।
मेरे ऊपर का खुला हिस्सा झूठी सुबह की रोशनी से थोड़ा उजाला हो गया, इससे पहले कि वह लकड़बग्घा, जो अब तक शोर मचाता रहा था, आखिरकार हिम्मत जुटाकर खाना शुरू करे। मैंने कुछ देर के लिए कुछ हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनी, फिर शायद उसके डरपोक दिल में डर लौट आया, क्योंकि मुझे उसके जाने की धीमी आवाज़ सुनाई दी। मैं उस बेचारे जानवर को तेज़ी से खिसकते हुए देख सकता था, उसके जबड़ों के बीच एक इंसान की हड्डी, जिसे वह बाद में चट्टानों के बीच अपने सुरक्षित ठिकाने में या ज़मीन में किसी गड्ढे में कुतरने वाला था, इस खतरे और मंडराती मौत की जगह से दूर।
मैंने असली सूर्योदय का इंतज़ार किया और फिर बड़ी सावधानी से अपनी विनचेस्टर राइफल और खुद को ज़मीन से ऊपर उठाया। रास्ता साफ़ था और मैंने अपने जकड़े हुए पैरों को उस भयानक गड्ढे से बाहर निकाला, कुछ मिनट इधर-उधर पैर पटके ताकि रक्त संचार सामान्य हो सके, और फिर झोपड़ियों की ओर चल पड़ा यह देखने के लिए कि क्या हुआ था। वहाँ मुझे एक भयानक दृश्य दिखाई दिया।

मैंने उन्हें दिलासा देने के लिए ज़ोर से आवाज़ लगाई। तभी वह आदमी और औरत झोपड़ी के दरवाज़े पर झपटे, उसे खोला और बाहर भागे, जहाँ वे ज़मीन पर गिर पड़े और डर और राहत के मारे काँपते और रोते रहे। वे पूरी तरह से बेहाल थे और अपनी कहानी सुनाने के लिए उन्हें शांत होने में काफी समय लगा।
मैं झोपड़ी में दाखिल हो चुका था और अंदर के भयानक दृश्य का जायजा ले
ही रहा था कि स्टैनली और कुछ अन्य लोग, जिन्होंने पिछली शाम हमारी मदद की थी, वहाँ पहुँच गए। स्टैनली पूरी रात जागा हुआ था, लेकिन उसे मेरी राइफल की कोई आवाज नहीं सुनाई दी, जिसकी आवाज टैगार्थी गाँव तक सुनाई देती। इसलिए उसने यह निष्कर्ष निकाला कि बाघ वापस नहीं आया था—या मैं मारा गया था—और वह यह पता लगाने के लिए जल्दी कर रहा था कि क्या हुआ था।
मुझे डर है कि मेरे पहले सवाल ने डॉक्टर साहब को चौंका दिया: 'पटेल की पत्नी कैसी हैं?'
मेरी बेतुकी बात सुनकर वह थोड़ा दुखी हुआ, फिर बुदबुदाया, 'वह सुरक्षित है। लेकिन हुआ क्या है?' मैंने उसे पूरी कहानी बताई। जल्द ही हमारी योजनाएँ बन गईं।
हमने बचे हुए दोनों लोगों और उनके सामान को झोपड़ी से बाहर निकाला, जिसके लिए ज़्यादा समझाने-बुझाने की ज़रूरत नहीं पड़ी, और उन्हें सलाह दी कि वे हमारे दल के बाकी लोगों के साथ गाँव लौट जाएँ। स्टैनली दूसरी झोपड़ी में छिप जाएगा, जबकि मैं उस झोपड़ी में छिप जाऊँगा जिसमें मारी गई महिला का शव था। आम तौर पर, आदमखोर बाघ के अपने शिकार के पास लौटने की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन चूंकि वहाँ एक दूसरा बाघ भी था जो आदमखोर हो सकता था, या शायद पहले से ही हो, इसलिए डॉक्टर उससे निपटने के लिए मौजूद रहेगा।
हमने अपनी योजना सावधानीपूर्वक बनाई। सबसे पहले, हममें से कोई भी उस दिशा में गोली नहीं चलाएगा जहाँ दूसरा छिपा हुआ है। दूसरे, अगर स्टेनली को पहले एक या दोनों बाघ दिख जाएँ, तो उसे तब तक गोली नहीं चलानी थी जब तक कि असली आदमखोर अपने शिकार के शव के पास न पहुँच जाए, ताकि मुझे असली अपराधी पर निशाना लगाने का मौका मिल सके। जैसे ही मैंने गोली चलाई, डॉक्टर को दूसरे बाघ को गोली मारनी थी, अगर वह अभी भी नज़र में हो। ये सावधानियाँ आखिरी क्षण में गलती से बचने के लिए ज़रूरी थीं, क्योंकि अगर डॉक्टर पहले गोली चला देता, तो वह गलत बाघ को गोली मार सकता था और आदमखोर भाग सकता था। हमें सबसे पहले ओग्रे को मारना था, हालाँकि मैंने जो कारण पहले ही बताए हैं, उनके चलते दूसरे बाघ को भी मारना ज़रूरी था। लेकिन आदमखोर को पहले मरना था और हम उसके भागने का जोखिम नहीं उठा सकते थे।
मैं पूरी रात नींद न आने के कारण थका हुआ था, जबकि स्टेनली उतना थका हुआ नहीं था, हालाँकि उसने रात का अच्छा-खासा समय पटेल की पत्नी की देखभाल में बिताया था। इसलिए यह तय हुआ कि मैं भोजन और कुछ देर आराम करने के लिए टैगार्थी वापस जाऊँ और तीन बजे तक लौट आऊँ। मैं डॉक्टर का दोपहर का भोजन और हम दोनों के लिए बाद में खाने के लिए कुछ खाना, साथ ही पानी, चाय और वह टॉर्च भी लाऊँगा जो स्टेनली ने अपनी बंदूक के बैरल पर लगा रखी थी। यह समझदारी भरा कदम था कि हम में से कोई एक पहरा दे, कहीं ऐसा न हो कि कोई बाघ दिन के उजाले में शिकार पर लौट आए।
तभी मेरे मन में एक और विचार आया। मैंने स्टैनली को बताया और वह मान गया। हमने एक झोपड़ी से एक बोरी ली और पहले हुए शिकार के अवशेषों की ओर चल पड़े। मेरी योजना थी कि मैं वहाँ बचे हुए सभी अवशेषों को हटा दूँ, ताकि अगर दोनों में से कोई एक या दोनों उस पुरानी जगह पर दोबारा आने की सोचें, तो

उन्हें कुछ भी न मिले। इससे वे झोपड़ियों की ओर आने के लिए मजबूर हो जाएँगे, जहाँ हम छिपे होंगे।
जब हमने अपने आदमियों को यह काम करने को कहा तो थोड़ी सी अड़चन आ गई। ऊँची जाति के होने के कारण वे घबरा गए और साफ इनकार कर दिया। हमारे पास स्टैनली और मेरे अलावा कोई चारा नहीं था कि हम यह काम खुद करें। स्टैनली को कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि वह डॉक्टर था, लेकिन मेरे लिए यह एक अप्रिय काम था। मांस का जो थोड़ा-बहुत हिस्सा बचा था, वह दो दिन पुराना था और उससे भयानक बदबू आ रही थी। इसके अलावा, नीली मक्खियों ने बचे हुए मांस में अंडे दे दिए थे और तेज धूप में उनमें से अनगिनत कीड़े निकल आए थे। मांस कीड़ों के उबलते हुए ढेर से ढका हुआ था।
हमने सारे टुकड़े-टुकड़े इकट्ठा करके बोरी में डाल दिए। चूंकि हमारे किसी भी अनुयायी ने उसे छूने से इनकार कर दिया, इसलिए मुझे इस भारी बोझ को अपने कंधे पर लादकर गांव तक ले जाने का दुर्भाग्यपूर्ण काम करना पड़ा। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे टुकड़े कितने भारी निकले, जबकि वे अपने मालिक का बहुत छोटा सा हिस्सा ही थे।
मुझसे भयानक बदबू आ रही थी और मैं पसीने से तरबतर था; सड़ते हुए मांस
और हड्डियों से कोई चिपचिपा तरल पदार्थ बोरी से रिस रहा था। जब मैंने अपना भयानक बोझ स्थानीय पुलिस चौकी के प्रवेश द्वार पर रखा, तो वह मेरे हाथों, कंधों और गर्दन पर लगा हुआ था। पहरे पर तैनात कांस्टेबल मुझे हैरानी से घूर रहा था। अपने जीवन में पहली बार वह इतना अचंभित था कि उसने बयान नहीं मांगा। मुझे बयान अच्छी तरह याद था, लेकिन मैंने उसे याद दिलाने की परवाह नहीं की। मैं क्यों याद दिलाता? वैसे भी, जब सब-इंस्पेक्टर और मुख्यालय के अन्य अधिकारी टैगार्थी पहुंचेंगे, तो खूब हंगामा होने वाला था। हमने त्रासदी स्थल से शव क्यों हटाया था? पुलिस को कैसे पता चलेगा कि उस आदमी को बाघ ने मारा था? क्या उसकी हत्या हुई थी? शायद उसने आत्महत्या की थी? इन सवालों के जवाब बाद में देने के लिए काफी समय है। मुझे बस नहाना, खूब सारी चाय पीना, गरमा गरम खाना और थोड़ी नींद चाहिए थी।
मैं डॉक्टर के छोटे से कमरे में जल्दी से पहुँचा, जहाँ उन्होंने मुझे अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया था, और उनके नौकर को एक गैलन चाय बनाने का आदेश दिया। फिर मैंने अपने बदबूदार कपड़े उतार दिए और कमीज़ धोई। उसके बाद मैंने स्नान किया, और क्या शानदार स्नान था!
कम से कम दो पौंड वजन कम होकर बाहर निकला, मैंने चाय पीनी शुरू की और लगभग दो क्वार्ट पी ही ली थी कि डॉक्टर के नौकर ने गंभीरता से सुझाव दिया कि दोपहर के भोजन के लिए थोड़ी जगह छोड़ दूं। लेकिन जब मैं मेज से उठा तो दोपहर का भोजन कुछ भी नहीं बचा था। मैंने देखा कि नौकर के मन में मेरे लिए एक नया सम्मान पैदा हो गया था, क्योंकि मैं बहुत अधिक खाने वाला व्यक्ति था।
मैंने लड़के से कहा कि डॉक्टर का दोपहर का खाना अलग रख दे और हम दोनों
के लिए रात का खाना बना दे, और कहा कि मैं तीन बजे तीनों भोजन लेकर दोनों झोपड़ियों में चला जाऊँगा। उदास होकर उस लड़के ने सिर हिलाया और नाराज़गी से कहा कि दोपहर का खाना बचा ही नहीं है। मैंने सारा खा लिया था। इसलिए मैंने उसे दोपहर का खाना और दो रात का खाना बनाने के लिए पैसे दिए। और मैंने उससे कहा कि मुझे ठीक 2:30 बजे जगा दे।
जब उसने मुझे जगाया तो लगभग तीन बज चुके थे, लेकिन चूंकि भोजन तैयार
था और पैक किया हुआ था, साथ ही चाय की दो थर्मस और पानी की दो कैंटीन भी थीं,

ज़्यादा मैं उसे घायल कर सकता था। मुझे पहले यह सुनिश्चित करना था कि मैं किस पर गोली चला रहा हूँ।
तभी मुझे अपने बहुत करीब, थोड़ा दाहिनी ओर से एक हल्की सी खरोंचने की आवाज़ सुनाई दी। मुझे अभी भी कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मेरा मन टॉर्च जलाने का हुआ, लेकिन मुझे याद आया कि ऐसा करने से मेरी आँखें चौंधिया सकती हैं। फिर भी, यह पता लगाना बहुत ज़रूरी था कि खरोंचने की आवाज़ कहाँ से आ रही थी और किस वजह से आ रही थी।
मैंने एक बेहद मूर्खतापूर्ण काम किया। देख न पाने के कारण, मैंने सोचा कि शायद मैं महसूस कर सकूँ कि क्या हो रहा है, और इसी सोच के साथ, मैंने अपना दाहिना हाथ बहुत धीरे-धीरे खुजली की दिशा में आगे बढ़ाया। मुझे ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। मेरी उत्सुक उंगलियाँ किसी रोएँदार, किसी रेशेदार चीज़ से छू गईं, और अगले ही पल सब कुछ तहस-नहस हो गया। आदमखोर बाघ, शायद पिछली रात अपने शिकार के शरीर को छुड़ाने में हुई कठिनाई को याद करते हुए, या शायद लाश पर बेहतर पकड़ बनाने की कोशिश में, दीवार के नीचे की दरार में अपना पंजा बढ़ा चुका था और किसी ठोस चीज़ को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। उसके पंजे की यही हरकत उस खरोंचने की आवाज़ का कारण थी जो मैंने कुछ देर पहले सुनी थी। जब मेरी उंगलियाँ उसकी त्वचा को छूईं, तो भूतों के बारे में न जानते हुए भी, बाघ समझ गया कि झोपड़ी के अंदर कोई जीवित प्राणी है।
एक साधारण बाघ तो भाग जाता। लेकिन वह दैत्य, जो साधारण बाघ नहीं था और हमेशा अप्रत्याशित काम करता था, अपना आपा खो बैठा। उसने एक भयानक दहाड़ मारी, फिर झोपड़ी की दीवार को अपने जबड़ों में जकड़ लिया और उसे फाड़ना शुरू कर दिया।
उसके बाद मेरा काम आसान हो गया। मेरे सामने एक बड़ा सा छेद दिखाई दिया
और मेरी टॉर्च की रोशनी में एक भयानक बाघ दिखाई दिया, जिसके मुंह में अभी भी दीवार की चटाई ठूंसी हुई थी। अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए बस कुछ ही इंच की दूरी बची थी, तभी मेरी.405 राइफल की गोली उसके गले में जा लगी; फिर मैं अपनी राइफल लेकर इधर-उधर लुढ़कता रहा ताकि जो कुछ भी मेरे पीछे आने वाला था, उससे बच सकूं। मैं झोपड़ी के आखिरी छोर के पास ही था जब वह राक्षस उस छेद से अंदर घुस आया। लेकिन मेरे पास उसके सिर में दो और गोलियां दागने का समय था। मरते हुए जानवर को ज़मीन पर तड़पते देख मैं झोपड़ी के दरवाजे की ओर भागा, उसे खोलकर बाहर कूद गया, और तभी मेरे सामने एक और भयानक दृश्य आ गया।
एक और बाघ वहाँ था, लगभग बीस फीट दूर और दूर वाली झोपड़ी के एक छोर पर! लेकिन वह ज़मीन पर लेटा हुआ था, एक तरफ़ फैला हुआ और अभी भी तड़प रहा था। स्टैनली ने दूसरे बाघ को लगभग बेहद नज़दीक से, अपनी शॉटगन के दोनों बैरलों से एक साथ चलाई गई घातक गोलियों से मार गिराया था। मेरी अपनी राइफ़ल के शोर और मेरे खुद के उत्साह के कारण, मैं स्टैनली की गोलियों की आवाज़ बिल्कुल नहीं सुन पाया था।
डॉक्टर ने बाद में बताया कि उन्होंने आदमखोर बाघ की दहाड़ सुनी, उसके बाद मेरी पहली गोली चलने की आवाज़ आई। फिर झोपड़ी की दीवार के ढहने की आवाज़ आई। हमारे समझौते की अवहेलना करते हुए, वह मेरी मदद के लिए दौड़े, और वहाँ उन्होंने दूसरे बाघ को कुछ ही गज की दूरी पर उनके सामने खड़ा देखा, जो अपने साथी को देख रहा था और स्पष्ट रूप से तय नहीं कर पा रहा था कि क्या

करे। उन्होंने अपनी घातक गोलियों से भरी शॉटगन की दोनों नालें बाघ के दिल में दाग दीं, जिससे वह तुरंत मर गया।
जैसा कि हमें संदेह था, आदमखोर बाघिन निकली और दूसरा जानवर उसका साथी
था।
टैगार्थी में भोर तक खूब धूमधाम और जश्न मनाया गया, और अगले दिन जब यह खबर बेलुंदुर पहुँची तो बूढ़ा बुद्धिह गर्व से इतराता फिरा। क्या वह सभी जादूगरों में सबसे महान नहीं था? क्या उसके मंत्रों ने आदमखोर सांप और उसके साथी का अंत नहीं कर दिया था? बुद्धिह सचमुच बहुत खुश था। एक जादूगर के रूप में उसकी प्रसिद्धि एक बार फिर आसमान छू रही थी, और वह मुर्गे की करी की कई दावतों और बेलुंदुर गाँव की मशहूर शराब की कई और बोतलों का लुत्फ़ उठा सकता था। दोपहर तक वह बुरी तरह नशे में धुत था, जब मैंने उसे धन्यवाद देने के लिए फोन किया।

* नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें।

तीन

अमलिगोला का अभिजात

इस कहानी के शीर्षक से आपको यह उम्मीद होगी कि जिस प्राणी के बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ वह कुलीन और भययोग्य होगा, और अमलीगोला नामक स्थान से आया होगा, लेकिन आप शायद यह अनुमान नहीं लगा पाएंगे कि कहानी वास्तव में एक बहुत बड़े बाघ के बारे में है जिसमें अन्य विशेषताएं भी थीं जो निश्चित रूप से कुलीनता से बहुत दूर थीं। आपमें से बहुत कम लोगों ने अमलीगोला के बारे में सुना होगा, क्योंकि यह मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के सुदूर जंगलों में स्थित है, और मेरी कहानी के समय यह मात्र एक छोटा सा गाँव था। कन्नड़ भाषा में लोग उसे ‘गौंडनोराई’ कहते थे, जिसका अर्थ लगभग ‘कुलीन’ होता है। उसे यह उपाधि उस समय के उसके अप्रत्याशित व्यवहार के कारण मिली जब वह पहली बार गाँव के आसपास के घने जंगलों में प्रकट हुआ था। अफवाह थी कि वह टैगार्थी के जंगलों से आया था, जो बाघों के लिए प्रसिद्ध स्थान है और गाँव से केवल आठ मील दूर है; जबकि कुछ अन्य लोगों का कहना था कि वह करादिबेट्टा बाघ अभयारण्य से भटक गया था, जिसे उसने अपने साथियों की अधिकता और भोजन की होड़ के कारण गुस्से में छोड़ दिया था।
ऐसा लगता है कि 'गौंडनोराई' को यह सब पसंद नहीं था। बाघ प्रजाति के आम लोगों के साथ मेलजोल रखना ही काफी बुरा था, लेकिन जब अक्सर ऐसा होता था कि युवा और फुर्तीले बाघ उसका शिकार छीन लेते थे, या फिर एक नवोदित बाघिन पूरा

शिकार बिगाड़ देती थी और शिकार को भगा देती थी, तो उसे लगता था कि अब बेहतर है कि वह अधिक सुरक्षित जंगलों में चला जाए, जहाँ उसकी प्रजाति के बाघ कम हों और उसके शिकार के लिए अधिक जानवर उपलब्ध हों।
आमलिगोला से लगभग दो मील दूर जंगल में एक छोटी सी पहाड़ी है जो इस गांव से टैगार्थी जाने वाले रास्ते के किनारे स्थित है, और एक शाम लगभग पांच बजे, इसी रास्ते से घर लौट रहे लकड़हारे यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि एक बाघ पहाड़ी की एक चट्टानी चोटी पर आराम कर रहा था, और पश्चिम में ऊंचे सागौन के पेड़ों के पीछे डूबने से पहले सूरज की किरणों का आनंद ले रहा था, जबकि सूरज को डूबने में अभी एक घंटा बाकी था।
उन्होंने अपने कदम तेज़ कर दिए। सभी जानते थे कि ये घने जंगल बाघों का
घर हैं, हालाँकि ऐसे जानवर दिन के उजाले में शायद ही कभी दिखाई देते हैं। जिस बाघ को वे अब देख रहे थे, सौभाग्य से काफ़ी दूरी से, वह एक विशालकाय जानवर था और उसकी सुस्त उदासीनता को देखकर ऐसा लग रहा था कि उसे उनकी मौजूदगी की ज़रा भी परवाह नहीं थी। वे ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे और वह उन्हें देख और सुन सकता था, लेकिन वह गर्म चट्टान पर लेटा रहा और बड़ी सी जिज्ञासा से अपना विशाल सिर उनकी ओर घुमाता रहा।
इसलिए लकड़हारों ने बेहतर यही समझा कि वे अंधेरा छाने से पहले ही घर लौट जाएं। सूरज डूबने और जंगल की हल्की रोशनी के अंधेरे में घुल जाने के बाद ऐसे राक्षस के सामने उनका कोई बचाव नहीं हो पाता।
इसके बाद अक्सर ऐसा होता था कि चरवाहे, लकड़हारे और वन रक्षक शाम के समय लगभग उसी समय उसी ऊंचे स्थान पर इस बाघ को धूप सेंकते हुए देखते थे और वह उन्हें बिल्कुल बेपरवाही से देखता रहता था, जब वे जंगल से गुजरते थे या उस पगडंडी का अनुसरण करते थे जो आमलिगोला की ओर जाने वाली पहाड़ी के आधार के चारों ओर घूमती थी।
उनमें से किसी को भी याद नहीं था कि उन्होंने पहले कभी किसी बाघ को ऐसा करते देखा हो। तेंदुए अक्सर उसी चट्टान पर, और दूसरी चट्टानों पर, शाम के समय धूप सेंकते हुए देखे गए थे; लेकिन बाघ कभी नहीं। बड़े मांसाहारी जानवर इतने चालाक और इतने डरपोक होते हैं कि वे राइफल की आसान गोली के सामने इस तरह खुद को उजागर नहीं करते।
धूप सेंक रहे बाघ पर किसी ने गोली नहीं चलाई, इसका बहुत अच्छा कारण यह
था कि उस समय अमलीगोला में किसी के पास राइफल नहीं थी, जबकि दूरी इतनी अधिक थी कि साधारण थूथन से चलने वाली बंदूकें वहां से नहीं चलाई जा सकती थीं, हालांकि कुछ बंदूकें, बेशक बिना लाइसेंस के, स्थानीय ग्रामीणों के पास थीं।
पहले कुछ महीनों तक यह दिखने में सीधा-सादा बाघ चित्तीदार हिरणों और जंगल के अन्य जंगली जीवों पर ही ध्यान केंद्रित किए संतुष्ट रहा। फिर, जैसा कि पश्चिमी घाट के इतने करीब स्थित और भारी वर्षा वाले इस क्षेत्र में शायद ही कभी होता था, एक साल दक्षिण-पश्चिम मानसून विफल हो गया और जंगल सूख गया। घास सूख गई, खेत बंजर पड़े रहे, और घास और अनाज खाने वाले जंगली जीव उन क्षेत्रों में जाने के लिए मजबूर हो गए जहाँ थोड़ा पानी और उनके पेट भरने के लिए कुछ घास मिल सके। मवेशियों के झुंड, जो अब तक हिरणों के साथ चरते थे और बाघ द्वारा अब तक परेशान नहीं किए गए थे, अब खुद को अकेला पा रहे थे।
फिर भी, यह बाघ अपने भोजन के मामले में बहुत चुनिंदा था। वह झुंडों को छोड़कर गांव के पोस्टमास्टर-सह-स्कूल शिक्षक के खेत में भटक गया, जहां

उसने मालिक के विशाल सफेद बैल को मार डाला। यह बैल हर हफ्ते बाजार के दिन उसकी गाड़ी को सागर कस्बे तक 19 मील की दूरी तक खींचकर ले जाता था। बाघ ने न केवल अपने पंजे के एक ही वार और गर्दन मरोड़कर उस विशाल बैल को मार डाला, बल्कि शिकार को अपनी पीठ पर लादकर दिन दहाड़े ही ले गया और खेत को जंगल से अलग करने वाले छह फुट चौड़े नाले को बड़ी आसानी से पार कर गया।
खेत पोस्टमास्टर के घर के पीछे था, और मालिक अपने छोटे से कुएँ पर कपड़े धो रहा था, और उसने यह सब अपनी आँखों से देखा। उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, इस उम्मीद में कि बाघ डरकर अपना शिकार छोड़ देगा, हालाँकि इससे कोई फ़ायदा नहीं होता क्योंकि सफ़ेद बैल पहले ही मर चुका था। लेकिन, बाघ ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। वह उसी शान से उसी गति से नाले की ओर बढ़ा, मृत बैल उसकी पीठ पर था, उसने नाले को पार किया और जंगल में गायब हो गया।
बाघ ने फिर से शिकार किया, और उसके बाद कई बार ऐसा किया, लेकिन हैरानी
की बात यह है कि हर बार उसका शिकार एक अकेला, विशाल बैल या एक मोटी, सुंदर गाय होती थी। उसने कभी भी झुंडों पर हमला नहीं किया, जैसा कि उससे पहले अन्य बाघों और तेंदुओं ने किया था, जो पहुँच के भीतर पहले जानवर को चुनकर मार डालते थे।
इस बाघ ने अपने शिकार की तलाश और चयन में काफी समय बिताया, और उसे हमेशा सबसे बड़ा जानवर ही चुनना होता था, जो उसके अपने विशाल आकार के अनुपात में हो, जिसका पता उसके द्वारा खेतों और जंगल की ओर जाने वाले रास्तों की हवा से उड़ने वाली रेत में छोड़े गए विशाल पदचिह्नों से चलता है।
उस समय मैं टैगार्थी गया था, जो मेरी पसंदीदा जगह थी, जहाँ मुझे गौंडनोराई और उसके विशाल आकार के बारे में पता चला। चूंकि यह जानवर सामान्य शिकार कर रहा था, इसलिए मेरा उसे परेशान करने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन उसके असाधारण आकार की बार-बार सुनाई जाने वाली कहानियों ने मुझे उसे देखने की उत्सुकता जगा दी।
इसलिए एक अंधेरी रात को मैं पैदल ही घने जंगल से होकर आमलिगोला जाने वाले जंगल के रास्ते पर निकल पड़ा, आपात स्थिति में राइफल मेरी पीठ पर थी, मेरे हाथ में तीन सेल वाली टॉर्च थी और मेरी जेब में कुछ अतिरिक्त सेल थे। मुझे वह रात अच्छी तरह याद है। रास्ते में, मशाल की किरण चित्तीदार हिरणों और सांभर की हरी आँखों की रोशनी को प्रतिबिंबित कर रही थी, जो मशाल की रोशनी से बचने की कोशिश में ऊपर-नीचे हो रहे थे; जंगली सूअर की अकेली लाल आँख जो रोशनी का सामना करने से इनकार कर रही थी और भाग रही थी; एक बैल-बाइसन की चौड़ी नीली आँखों की रोशनी जो मेरे गुजरते समय उदास निगाहों से घूर रहा था; एक पैंथर की लाल-सफेद आँखों की रोशनी जो एक छोटी झाड़ी के पीछे छिप गई और फिर ऊपर से मुझे झाँक रही थी; और एक सुस्त भालू की गुलाबी-नीली आँखें जो अपने पिछले पैरों पर बैठकर मुझे देख रहा था जब मैं अपने रबर के जूतों में दस फीट से भी कम दूरी पर धीरे-धीरे गुजर रहा था।
आमलिगोला से सटे खेतों में प्रवेश करते ही मेरी मुलाकात गौंडनोराई
से हुई और मैंने उसे तुरंत पहचान लिया, हालांकि मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। दो विशाल प्रकाश के धब्बे चमकदार तारों की तरह सफेद-लाल रंग में चमक रहे थे, जो छोटी पहाड़ी से नीचे आती रात की हवाओं के साथ धीरे-धीरे हिलती घासों के ठीक ऊपर लटके हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो वह सौ गज दूर हो। यह बाघ वास्तव में विशालकाय था।

जब वह मुझे अपने और अपनी साथी के बीच खड़ा देखेगा तो क्या करेगा। अब वहाँ से निकल जाना ही बेहतर था!
मैंने तुरंत और तेज़ी से यही किया, जितना हो सके चुपचाप और तेज़ी से बगल में हटते हुए, साथ ही टॉर्च की रोशनी बाघ पर ही टिकाए रखी। गौंडनोराई अचानक रुक गया और उसकी गुर्राहट एक तेज़ दहाड़ में बदल गई। इससे भी बुरी बात यह थी कि मुझे अपने पीछे बाघिन की दहाड़ सुनाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था कि एक साथ हमला होने वाला है।
मैंने अपने बाएं हाथ से भरी हुई राइफल को कंधे से उतारा, बट को अपने कंधे पर टिकाया और हथियार की नली से जुड़ी दूसरी टॉर्च का बटन अपने अंगूठे से दबाया। दोनों टॉर्च की किरणें एक पल के लिए एक साथ चमकीं, और मैंने ट्रिगर पर अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली रखने से पहले तीन सेल वाली टॉर्च को अपनी पतलून की जेब में रख लिया।
शायद दो मशालों की एक साथ जलती रोशनी ने ही आपदा को टाल दिया। हो सकता
है कि गौंडनोराई को यह दृश्य पसंद न आया हो, और उन्हें अचानक दूसरी रोशनी के प्रकट होने से संभावित खतरे का आभास हो गया हो, जहाँ कुछ क्षण पहले केवल एक ही रोशनी थी। गुर्राते हुए वह तिरछे होकर अपनी साथी की ओर बढ़ा, और स्थिति को समझते हुए, मैंने दोनों मशालें जलाए रखते हुए उसके पीछे-पीछे चलना शुरू कर दिया। जैसे ही वह उसके पास पहुँचा, दोनों जानवर मेरी ओर मुड़ गए। अब सफेद-लाल आँखों के दो जोड़े गुस्से से मेरी ओर घूर रहे थे।
फिर मैं भागने के लिए पीछे की ओर चलने लगा। कहना आसान है, करना मुश्किल। क्या आपने कभी घोर अंधेरे में, घुमावदार पगडंडी पर, घनी घास और जंगल के बीच से पीछे की ओर चलने की कोशिश की है, आपके बाएं हाथ में राइफल कंधे पर अजीब तरह से टिकी हुई हो, अंगूठा टॉर्च के बटन पर दबा हो, और दाहिने हाथ में एक और टॉर्च हो जो राइफल को अपनी जगह पर रखने में मदद कर रही हो, जबकि आपके सामने दो बाघ संभोग कर रहे हों और स्वभाव से ही गुस्सैल हों? मैं कुछ दूर तक इस चाल में कामयाब रहा, लेकिन चूंकि दोनों बाघों ने मेरा पीछा करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई, इसलिए मैं कुछ सेकंड के लिए पगडंडी पर तेजी से चलने के लिए मुड़ा और फिर वापस आकर देखने लगा कि बाघ क्या कर रहे हैं। वे उसी जगह पर थे, जाहिर तौर पर मेरे जाने से खुश थे। जल्द ही मैं अमलिगोला पहुँच गया और अपने मित्र मुखिया की झोपड़ी में जाकर मैंने उसे अपनी आपबीती सुनाई। मुखिया रामैया विधवा थे और उन्होंने मुझे रात भर अपने साथ रहने का निमंत्रण दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि शायद दिन के उजाले में मैं बाघों का बेहतर ढंग से अध्ययन कर सकूँ।
कई मग दूध और कुछ बासी वड़ाई (तीखे स्वाद वाले छोटे केक) जो उसने मुझे दिए, के साथ-साथ रामिया और मैंने बातें शुरू कीं, लेकिन थोड़ी ही देर में जंगल से तेज दहाड़ और गुर्राहट की आवाजें आने लगीं जिससे पता चला कि बाघों का मिलन शुरू हो चुका है। शोर काफी देर तक जारी रहा। फिर कुछ देर शांति छाई रही, जिसके बाद शोर फिर से शुरू हो गया। ऐसा तब तक चलता रहा जब तक हम सो नहीं गए।
अगली सुबह मुझे जाँच-पड़ताल करने की कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि मुझे पता था कि दोनों अपने कठिन मिलन सत्रों के बाद आराम कर रहे होंगे और मेरा जल्दी पहुँच जाना टकराव को जन्म दे सकता था। इसके अलावा, रामिया की झोपड़ी में बिताई बेचैन रात के बाद मुझे बहुत नींद आ रही थी।
लगभग दस बजे मैं जागा और रामिया के अब सख्त हो चुके वड़ाई के एक और
दौर के बाद, कम से कम तीन कप कॉफी पीने के बाद (जो कि कन्नड़ गांव वालों का

कुछ नहीं हुआ, बाघिन घास के ऊपर से मुझे देखती रही, और थोड़ी देर बाद मुझे उम्मीद होने लगी कि शायद वह अकेली हो। हो सकता है उसका साथी पाँचवें शिकार की तलाश में गया हो!
लगभग दस मिनट बाद बाघिन एक अजीब सी आवाज़ निकालने लगी। मैं कह सकता हूँ कि वह म्याऊँ कर रही थी, लेकिन वह आवाज़ इतनी कर्कश और भारी थी कि इस शब्द से उसका सही वर्णन नहीं हो पाता। वह अपने साथी को बुला रही थी। चूंकि उसने अब तक मुझ पर हमला नहीं किया था, यह स्पष्ट था कि बाघिन में अकेले हमला करने का साहस नहीं था। बाघ के आने पर क्या होगा, यह तो बिलकुल अलग बात होगी।
मैंने समझदारी से काम लेते हुए फैसला किया और मैं उस पेड़ के तने के पीछे छिप गया जिसके सहारे मैं अब तक खड़ा था। फिर मैं पीछे हटने लगा। अगले ही पल मेरे पीछे खाई के ऊपर से एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी, जिससे मुझे पता चला कि बहुत देर हो चुकी है। गौंडनोराई आ चुका था। उसकी साथी की म्याऊं जैसी आवाज़ों से उसे आगाह मिला कि सब कुछ ठीक नहीं है। अब मैं उसे सूखी पत्तियों और झाड़ियों को चीरते हुए, तेज़ी से मेरी ओर आते हुए सुन सकता था।
मैं वैसे तो अच्छा पर्वतारोही नहीं हूँ, लेकिन हिम्मत ने मुझे फुर्ती
दी और मैंने राइफल कंधे पर टांगे हुए बड़ी तेज़ी से पेड़ पर चढ़ गया। पहली शाखा ज़मीन से मुश्किल से आठ फीट ऊपर थी। मैं वहाँ पहुँचा और ऊपर चढ़ने की कोशिश की, तभी राइफल अजीब तरह से मेरे कंधे से फिसलकर मेरी कोहनी में आ गिरी। मैंने उसे फिर से कंधे पर टांगा, और उतनी ही तेज़ी से वह एक बार फिर नीचे फिसल गई।
गौंडनोराई मेरे पेड़ के नीचे आ पहुंचा और मेरी हरकतों से उसने ऊपर की
ओर देखा और मुझे पहचान लिया। मैंने फैसला किया कि मुझे उसका सामना करना होगा और अपनी बांह में रखी राइफल को कंधे पर रखना होगा। मुझे उम्मीद थी कि वह तुरंत मुझ पर हमला करेगा, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके बजाय वह जमीन पर बैठ गया, ऊपर देखा और गुर्राता रहा, गुर्राता रहा और गुर्राता रहा।
अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैंने बड़ी मूर्खता की थी, अपना इरादा बदल लिया और ऊपर चढ़ने की कोशिश करने का फैसला किया, लेकिन फिर भी मैं ज्यादा दूर नहीं जा सका। मैं शायद सात फीट और चढ़ पाया, जब मुझे एहसास हुआ कि मैं पतली शाखाओं की सीमा तक ही पहुँच पाया हूँ। इसी समय, बाघिन, अपने साथी द्वारा दी गई सुरक्षा से आश्वस्त होकर, प्रकट हुई और उछल-कूद करते हुए उसकी ओर बढ़ी, जब तक कि वे दोनों लगभग पंद्रह फीट नीचे नहीं आ गए।
मुझे उम्मीद थी कि कोई भी बाघ मेरा पीछा नहीं करेगा, क्योंकि जिस डाल
से मैं बड़ी मुश्किल से चिपका हुआ था, वह इतनी कमजोर थी कि उस पर और वजन नहीं सह सकती थी। ऊपर चढ़ने की अपनी मूर्खता के कारण मैं खुद को एक खतरनाक स्थिति में डाल चुका था। मुझे डाल को दोनों हाथों और घुटनों से कसकर पकड़ना पड़ा, और इससे राइफल का इस्तेमाल करना नामुमकिन हो गया, जिसे मैं कंधे से उतार भी नहीं सकता था, क्योंकि अगर मैंने अपना हाथ छोड़ा तो मैं पेड़ से गिर जाऊंगा। इसके अलावा, मेरे हाथों और पैरों की मांसपेशियों पर बहुत ज्यादा दबाव पड़ रहा था, और मैं ज्यादा देर तक इस स्थिति में नहीं रह सकता था।

उनका शिकार करने का प्रयास विफल हो जाता है, क्योंकि हवा के झोंके उनकी उपस्थिति का पता लगा देते हैं और उनका शिकार भाग जाता है। इसलिए मांसाहारी जानवरों ने सहज प्रवृत्ति से यह सीख लिया है कि वे हमेशा हवा के विपरीत दिशा से ही शिकार की ओर बढ़ें, ताकि हमला करने से पहले उनकी गंध से ही उनका पता न चल जाए।
हिरणों के विपरीत, आत्मरक्षा के लिहाज़ से मनुष्य में सूंघने की क्षमता न के बराबर होती है, और एक आम इंसान किसी बाघ या तेंदुआ की गंध को सूंघ नहीं सकता, चाहे वो एक गज की दूरी पर ही क्यों न छिपा हो, चाहे हवा किसी भी दिशा से आ रही हो। लेकिन बिल्ली प्रजाति के इस प्राणी को यह बात पता नहीं होती, इसलिए वो किसी मनुष्य का पीछा करने के लिए भी वही नियम अपनाती है जो किसी अन्य जंगली जीव का पीछा करने के लिए अपनाती है। इसी कारण मुझे लगभग पूरा यकीन था कि अगर गौंडनोराई मुझ पर हमला करने आएगा, तो वो बाईं ओर से हमला करेगा; और कायर होने के कारण, मेरे पीछे से हमला करने की संभावना दस में से एक थी।
इन सभी बातों को तर्क के आधार पर स्थापित करने के बाद, मैं किसी भी संभावित घटना के प्रति सतर्क रहते हुए चुपचाप रास्ते पर आगे बढ़ने लगा। शुरुआती एक चौथाई मील का सफर डर से भरा था। मैं थोड़ी-थोड़ी देर में पीछे मुड़कर देखता था कि कहीं कोई मेरा पीछा तो नहीं कर रहा। एक बार जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो मैंने देखा कि जिस झाड़ी के पास से मैं अभी गुजरा था, वह अचानक ज़ोर से हिली और फिर स्थिर हो गई।
मैं घूम गया। मुझे पता था कि मैं झाड़ी के नीचे नहीं देख सकता; वह बहुत घनी थी। लेकिन मैं उसके ऊपरी हिस्से को देख सकता था। बाघ झाड़ी के बीच से छलांग नहीं लगा सकता, उसे छलांग लगाने से पहले शाखाओं को पार करने के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ना पड़ता है, और जब वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता है तो झाड़ियों के ऊपरी हिस्से हिलते हैं। यदि आप शाखाओं के ऊपरी हिस्सों को देखते रहेंगे तो आप उन्हें हिलते हुए देख पाएंगे, तब आपको पता चल जाएगा कि बाघ आ रहा है।
रास्ते के किनारे के बिल्कुल पास एक शाखा का ऊपरी सिरा थोड़ा सा हिल गया, जैसे किसी चीज ने उसके आधार को छू लिया हो। मैंने मन ही मन कहा, "बस यही है," और अपनी.405 पिस्तौल कंधे पर रख ली।
कुछ ही क्षण बाद शाखा और अधिक स्पष्ट रूप से कांप उठी और एक जंगली सूअर पूरी तरह से सामने आ गया। मुझे देखते ही वह अचानक मेरी ओर मुड़ गया, उसकी गर्दन के बाल रीढ़ की हड्डी की तरह खड़े हो गए, सिर नीचे झुका हुआ था और उसके नुकीले दांत मेरी ओर थे, उसकी छोटी लाल आंखें गुस्से से ऊपर की ओर देख रही थीं।
मुझे हंसी आ रही थी, लेकिन मैंने राहत की सांस ली। मेरे बाईं ओर से सूअर का प्रकट होना इस बात का संकेत था कि बाघ आस-पास कहीं नहीं था।
मुझे बिना हिले-डुले खड़ा देखकर और उसकी ओर कोई हरकत न करते हुए, सूअर
ने सोचा कि मैं शायद हानिरहित हूँ, हालाँकि मुझ पर गंभीर संदेह ज़रूर किया जाना चाहिए। अपना सिर झुकाए हुए, ताकि ज़रूरत पड़ने पर मुझ पर नज़र रख सके और हमला कर सके, सूअर रास्ते को पार करके दाईं ओर घनी झाड़ियों में घुस गया, पत्तों को ज़ोर से रगड़ते हुए। अगले ही पल वह गायब हो गया।
इस बार मैंने सचमुच राहत की सांस ली। मैं फिर से आगे बढ़ा, शायद राहत
ने मुझे थोड़ा कम सतर्क बना दिया था, और जल्द ही घाटी के अंत के करीब पहुँच गया। मुझे सामने कुछ भी दिखाई नहीं दिया; मैंने पीछे मुड़कर देखा, लेकिन

[illegible]

[illegible]

[illegible] of [illegible]

[illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible]-[illegible] [illegible] of [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], of of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of of [illegible] of [illegible] [illegible] of of [illegible] of [illegible], [illegible] of of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of of [illegible]-[illegible] [illegible] of of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of of [illegible] of [illegible] [illegible], of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of '[illegible]' [illegible] [illegible] of of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] of, [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible]

‘[illegible]’ of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of, [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ‘[illegible]’ [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible]

चेलामा और दिगुवामेटा के बीच के जंगलों के प्रति मेरे मन में हमेशा
से एक खास लगाव रहा है, इसलिए नहीं कि वहाँ शिकार या मांसाहारी जानवर बहुतायत में पाए जाते हैं, बल्कि इसलिए कि वहाँ का वातावरण बिल्कुल शांत और एकांत है, और पूर्वी घाट के इस हिस्से में फैले जंगलों में रहने वाले चेंचु जनजाति के लोग बहुत ही मिलनसार हैं। मैंने पाया है कि आंध्र प्रदेश का आम ग्रामीण भी, कुल मिलाकर, मैसूर राज्य के ग्रामीणों की तुलना में कहीं अधिक मिलनसार होता है, जहाँ मैं रहता हूँ, जबकि मद्रास राज्य के लोगों का स्वभाव इन दोनों के बीच का होता है।
इसके अलावा, यहां की वनस्पति की प्रकृति दक्षिण में उगने वाली वनस्पति से काफी अलग है, और हालांकि यहां हाथी या बाइसन नहीं पाए जाते हैं, यह क्षेत्र नीलगाय या ब्लू-बुल की वह दक्षिणी सीमा है जहां सांभर हिरण की तरह दिखने वाला मृग प्रजाति का एक बड़ा जानवर पाया जाता है।
तो एक दिन मैं दिगुवामेटा के लिए ट्रेन से रवाना हुआ, लंबी सुरंग और लंबे पुल से गुज़रते हुए, जो हमेशा से मेरे लिए एक बचपन का आकर्षण रहे थे, सिग्नल और टपकते पानी के स्तंभों से बचते हुए, मैं अपने छोटे से बिस्तर, कैंप किट और राइफल के साथ दिगुवामेटा में उतरा। कुछ बच्चों ने मेरा बिस्तर और कैंप किट छीन लिया, और राइफल को कंधे पर टांगकर हम उस सड़क पर चलने लगे जो रेलवे ट्रैक के समानांतर उस दिशा में जाती थी जहाँ से ट्रेन अभी आई थी। वन बंगले तक शायद आधा मील की दूरी थी, जो इतनी पुरानी इमारत होने के बावजूद आश्चर्यजनक रूप से आरामदायक था; इसके दक्षिण में सागौन के पौधों का बागान था, पूर्व और उत्तर में जंगल था, जबकि पश्चिम में रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाली सड़क थी, और उसके बाद फिर से रेलवे लाइन थी, जैसा कि मैंने अभी बताया। सिग्नल और पानी का खंभा बस आधा फर्लांग की दूरी पर थे। मेरे पुराने दोस्त, वन बंगले के रखवाले अलीम खान ने द्वार पर अपनी चौड़ी मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया, साथ ही बच्चों को मेरे सामान लाने के लिए जल्दी करने को कहा।
बंगले में कमरों के दो सुइट थे, और हमेशा की तरह अलीम ने मुझे बेहतर वाले सुइट में ठहराया, जो सड़क और रेलवे ट्रैक की ओर खुलता था। यह बेहतर इसलिए था क्योंकि इस सुइट से जुड़े बाथरूम में शॉवर लगा हुआ था, जबकि दूसरे वाले में नहीं था।
अलीम मुसलमान था और उसकी सिर्फ़ दो पत्नियाँ थीं, जबकि उसके कई सह-धर्मियों की चार पत्नियाँ थीं, जो कि कानूनी तौर पर एक मुसलमान के लिए अधिकतम संख्या है। उसने मुझे पहले भी बताया था कि उसे लगता है कि दो पत्नियाँ ही काफ़ी हैं। बिना देर किए उसने इन दोनों महिलाओं को बुलाया और उन्हें एक साथ हैंडपंप चलाने को कहा। यह यंत्र एक बड़े कुएँ से पानी खींचकर मेरे बाथरूम की छत पर बने जस्ता के पानी के टैंक में भरता था। आधे घंटे तक, जब मैं अपना सामान खोल रहा था और फिर चौकीदार द्वारा जल्दी से बनाई गई चाय पी रहा था, मैं हैंडपंप की खट-खट-खट की आवाज़ और दोनों पत्नियों की आपस में बहस और फिर झगड़ा सुन सकता था, क्योंकि दोनों एक-दूसरे पर पंपिंग में अपना हिस्सा न करने का आरोप लगा रही थीं। बाथरूम की छत से पानी गिरने की आवाज़ से झगड़ा समाप्त हुआ। टैंक पूरी तरह भर गया था!
फिर आखिरकार मुझे वह बहुप्रतीक्षित शावर बाथ का सुख मिला, या यूं कहें कि एक के बाद एक कई शावर बाथ, ठंडे पानी की पतली धारें मेरे शरीर पर बह रही थीं। बाहर का तापमान 100 डिग्री फ़ारेनहाइट से भी ऊपर था और आंध्र प्रदेश की चिरस्थायी धूप पड़ रही थी, लेकिन उस बाथरूम के अंदर इतनी ठंडक,

तेजी से भाग निकला और कुत्ता उसका पीछा करने लगा। अलीम और उसकी बहन दोनों ने चांदनी रात में यह दृश्य देखा था।
फिर भी, चौकीदार ने कहा कि वह इस स्थिति से खुश नहीं था और उसे लगता था
कि पैंथर हिम्मत जुटाकर वापस आएगा और अंततः कुत्ते को ले जाएगा। लेकिन सबसे ज्यादा चिंता उसे वहां मौजूद सात बच्चों की मौजूदगी से थी, जिनमें से दो तो बिल्कुल छोटे बच्चे थे। अगर पैंथर बहुत ज्यादा साहसी हो गया—या भूखा हो गया—तो वह उनमें से किसी एक को लेकर भाग सकता था।
कई लोगों ने मुझसे पूछा है कि मैं भारत छोड़कर इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया
या कनाडा क्यों नहीं चला जाता। मैंने इस सवाल का जवाब देने की कोशिश की है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं किसी को भी समझा पाया हूँ। दिगुवामेटा में उस दोपहर आरामकुर्सी पर लेटे हुए यह विचार मेरे मन में फिर से आया। इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया या कनाडा में, या दुनिया में कहीं और, शायद अफ्रीका या दक्षिण अमेरिका को छोड़कर, मुझे भारत जैसी परिस्थितियाँ कहाँ मिलेंगी? ट्रेन या सड़क मार्ग से कुछ घंटों की यात्रा मेरे बैंगलोर स्थित घर को दो सौ मील के दायरे में स्थित कई पर्वत श्रृंखलाओं की ठंडी जलवायु से, या उससे भी करीब स्थित मैदानी इलाकों की उमस भरी गर्मी से अलग करती है; पश्चिम में घने जंगलों से, जहाँ भारी वर्षा होती है, और पूर्व में अत्यंत शुष्क, अर्ध-मरुस्थलीय क्षेत्रों से; शहरों की लाखों की भीड़ से और घर से पचास मील के भीतर स्थित जंगल के एकांत से; शहरों की विविध भाषाओं और बोलियों से और वनवासियों की लगभग अस्पष्ट शब्दावली से। घर की सुरक्षा और आराम से लेकर अचानक बीमारी, सांप के काटने या किसी जंगली जानवर के हमले से होने वाली मौत के निरंतर खतरे तक, दुनिया में और कहाँ भारत जैसा समय इतना कम महत्व रखता है? दुनिया में और कहाँ परिणाम इतने कम महत्वपूर्ण होते हैं? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कैसे कपड़े पहनते हैं या पहनते भी हैं या नहीं! जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं ही मायने रखती हैं। बाकी सब कुछ इसके साथ ही आता है, कभी भरपूर मात्रा में तो कभी न के बराबर; लेकिन वास्तव में इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता और किसी भी चीज की कोई जल्दी नहीं होती। जन्म का समय होता है और मृत्यु का, और दोनों घटनाएं अपरिहार्य हैं। इसके अलावा, मृत्यु जीवन का अनुसरण करती है और जीवन मृत्यु का, इसलिए वास्तव में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ से शुरू करते हैं और कहाँ समाप्त करते हैं, क्योंकि अंततः सब कुछ एक ही बात पर आकर समाप्त होता है।
मेरे दोस्त यह बात नहीं समझ पाते जब मैं उन्हें बताता हूं कि इन्हीं चीजों की वजह से मुझे भारत से प्यार है, और मुझे नहीं लगता कि मैं इसे कभी छोड़ूंगा।
मेरी तल्लीनता उस समय भंग हो गई जब वन रेंज अधिकारी साइकिल पर सवार होकर अलीम खान को यह सूचना देने आए कि उन्हें खबर मिली है कि जिला वन अधिकारी (डी.एफ.ओ.) दिगुवामेटा से गुजर रहे हैं और अगली रात विश्राम गृह में बिताएंगे। क्या मेरे पास बंगले में रहने की लिखित अनुमति थी?
मुझे मना करना पड़ा, और रेंज अधिकारी दंग रह गया। मैंने अतिक्रमण का अक्षम्य अपराध किया था। मैं बिना अनुमति के सरकारी इमारत में था। उसने गहरी साँस ली और फिर मुझे तुरंत बाहर निकलने को कहा।
यहां मुझे वही कठिनाई महसूस हुई जो मैंने कई जंगलों में बने कई वन बंगलों में झेली थी। इसीलिए मैंने कई क्षेत्रों में इतनी सारी ज़मीनें खरीदी हैं, ताकि मैं अधिकारियों की दखलंदाज़ी के बिना शांति से डेरा डाल सकूं, उस सर्वव्यापी भय से मुक्त होकर जो अनादिकाल से देश के कोने-कोने में

मंडराता रहा है, ब्रिटिश राज के दिनों में भी मंडराता रहा और स्वतंत्रता के बाद तो और भी अधिक हावी हो गया है।
मैंने रेंज ऑफिसर की चापलूसी की और देखते ही देखते वो मेरे इशारों पर नाचने लगा। उसने भी सहमति जताते हुए कहा, "जी साहब, ये वरिष्ठ अधिकारी जो दौरे पर आते हैं, वाकई बहुत झंझट पैदा करते हैं। क्यों (और मेरी सज्जनता को जानते हुए उसने मुझे भरोसे में बताया) कि जब वे आते हैं तो बिल्कुल काम नहीं करते। काम तो वो और उसके मातहत ही करते हैं। ये दौरे तो बस पैसे की तंगी होने पर मिलने वाले भत्ते (जिसे बोलचाल की भाषा में 'बट्टा' कहते हैं) को बटोरने का बहाना होते हैं। इस बात का सबूत ये है कि ये 'दौरे' हमेशा महीने के आखिरी हफ्ते में ही होते हैं। बेशक, मैं रात बंगले में रुक सकता था, लेकिन मुझे वादा करना होगा कि मैं अगले दिन दोपहर से पहले चला जाऊंगा, वरना अगर रक्षा अधिकारी को पता चला कि मैं बिना इजाज़त के बंगले में रह रहा हूं, तो वो बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा।"
मैंने वादा किया और फिर पूछा कि क्या गाँव में कहीं कोई खाली कमरा है। रेंज अधिकारी को ऐसा नहीं लगा।
बातचीत के इस मोड़ पर मैंने बताया कि मुझे कई अन्य क्षेत्रों में भी इसी तरह की परेशानियाँ झेलनी पड़ी थीं, इसलिए मैंने लगभग हर जंगल में छोटे- छोटे भूखंड खरीदना शुरू कर दिया था और उस समय मेरे अपने बीस से अधिक शिविर स्थल थे। यह सुनकर वह खुश हो गया। उसने बताया कि राजस्व विभाग में उसका एक मित्र है, जिसके पास रेलवे स्टेशन के ठीक बाहर कई एकड़ जमीन है। उसकी सिफारिश पर, रेंजर को पूरा विश्वास था कि उसका यह मित्र, जिसका नाम रंगा रेड्डी था, मुझे खुशी-खुशी एक छोटा सा भूखंड उपहार के रूप में मुफ्त में दे देगा, जो तंबू लगाने के लिए काफी बड़ा होगा।
एक घंटे के भीतर हम अपने मित्र के घर पहुँच गए। वहाँ हमने कॉफ़ी पी और हमें दो-दो डोसे खाने के लिए मजबूर किया गया। फिर रंगा रेड्डी हमें अपनी ज़मीन पर ले गए, जो रेलवे स्टेशन से एक चौथाई मील आगे और रेलवे लाइन के पूर्व में थी, और मुझे अपनी पसंद की कोई भी जगह, जहाँ भी मैं चाहूँ और जितनी ज़रूरत हो, चुनने के लिए आमंत्रित किया।
खेत उपजाऊ काली मिट्टी से बना था, जो कृषि के लिए अच्छा था। हमें खेत
के दूर कोने में जाकर एक खाली ज़मीन का टुकड़ा ढूंढना पड़ा, जो बंजर पड़ा था और जिसकी मिट्टी खेत के बाकी हिस्से जितनी उपजाऊ नहीं थी। आख़िरकार, मुझे तो बस एक शिविर स्थल चाहिए था और मैं अपने नए दोस्त को किसी भी मूल्यवान चीज़ से वंचित नहीं करना चाहता था। थोड़ी दूरी पर एक छोटी नदी बह रही थी, जबकि मुख्य सड़क एक तरफ से उस ज़मीन को घेरे हुए थी। एक आदर्श शिविर स्थल! दस सेंट ज़मीन मेरी ज़रूरतों के लिए काफ़ी होगी।
मैंने मालिक को अपनी पसंद बताई। उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया
कि मैं वह ज़मीन ज़रूर ले सकता हूँ। वे अगले दिन मुझे अपनी जीप में बारह मील दूर गिद्दालुर कस्बे तक ले जाएँगे, जहाँ मेरे स्वामित्व का औपचारिक पंजीकरण करवाना होगा।
मैंने कीमत पूछी। उन्होंने जवाब दिया, बिल्कुल मुफ्त। मैंने कहा, यह
तो बिल्कुल ठीक नहीं है। इसके अलावा, यह कानूनी खरीद नहीं होगी; उन्हें कुछ कीमत तो चुकानी ही होगी। श्री रेड्डी ने हिचकिचाते हुए कहा, 'पांच रुपये,' और मैंने कहा, 'नहीं, पचास रुपये ले लीजिए।'

वह दहशत से पीछे हट गया। 'ऐसी बेकार ज़मीन के लिए दोस्त से पचास रुपये लेना!' आखिरकार हम तीस रुपये पर सहमत हो गए, जो अंग्रेजी मुद्रा में दो पाउंड से भी कम है।
अगली सुबह हम गिद्दालुर स्थित रजिस्ट्रार कार्यालय में उसके खुलने
के समय ही पहुँच गए थे। आधे घंटे बाद मैं दिगुवामेटा में दस सेंट जमीन पर बने अपने शिविर स्थल का गर्वित मालिक बन गया!
हालांकि, मैंने आपको ज़मीन की खरीद के बारे में बताकर घटनाओं का कुछ पूर्वाभास कर दिया है। मुझे घटनाओं के सही क्रम में यह बताना चाहिए था कि उस रात क्या हुआ जब मैं उस आग की लकीर के किनारे थोड़ी देर टहलने के बाद विश्राम गृह लौटा था जहाँ हाल ही में बाघ को गोली मारी गई थी। यह आग की लकीर एक गहरे नाले को पार करती थी जो एक बहती हुई धारा का तल था, जहाँ शुष्क मौसम होने के कारण पानी का बहाव एक गज से अधिक चौड़ा नहीं था। दोनों किनारों पर कीचड़ में एक मध्यम आकार के पैंथर के पदचिह्न थे। यह जानवर, अपनी प्रजाति के अन्य जानवरों की तरह, पानी में चलने से कतराता था, इसलिए वह कूदकर पार गया था।
मुझे लगा कि शायद यह वही जानवर हो जिसके बारे में अलीम ने मुझे बताया
था। पैरों के निशान जंगल में बने लॉज की ओर जा रहे थे और शायद पिछली रात ही बने थे। फिर मैंने झुककर उन्हें और करीब से देखा और मेरा विचार बदल गया। कुछ जगहों पर पुराने जलमार्गों और धाराओं के किनारे उगने वाली गहरे हरे रंग की फफूंद की परत दोनों किनारों पर पानी के किनारे तक फैली हुई थी, और पैंथर के वजन से वह परत उस तरफ से दब गई थी जहाँ से जानवर कूदा था और उससे कहीं ज़्यादा गहराई से उस किनारे पर जहाँ वह उतरा था। गहरे हरे रंग की फफूंद का दोनों तरफ से अभी भी दबा हुआ होना बहुत महत्वपूर्ण था। बाकी जगहों पर वह अपनी सीधी स्थिति में वापस क्यों नहीं आई? अगर पैंथर ने पिछली रात छलांग लगाई होती, जैसा कि मैंने पहले सोचा था, तो ऐसा हो जाता। केवल एक ही निष्कर्ष निकल सकता था: तथ्यों से साफ पता चलता था कि पैंथर एक या दो घंटे पहले ही नदी पार कर चुका था।
अब शाम के छह बज चुके थे, इसलिए जानवर सूर्यास्त से काफी पहले, चार-पाँच बजे के बीच इस रास्ते से गुजरा होगा। अगर ऐसा है, तो वह इस समय बंगले के आसपास ही होगा, जब तक कि वह रेलवे ट्रैक पार करके पानी की टंकी की तरफ न चला गया हो। मैं अपनी सैर रोककर वापस मुड़ गया, यह सोचकर कि क्या रात में मुझे उसकी आवाज सुनाई देगी।
मैं घर से लाया हुआ ठंडा भुना हुआ गोमांस खाने बैठा ही था कि यह घटना घटी। ठीक शाम के 7:45 बज रहे थे; मुझे याद है क्योंकि मैंने अभी-अभी अपनी घड़ी में चाबी भरी थी, जो मेरी आदत है खाना खाते समय। अलीम की बहन का कुत्ता मेरे पास आकर बैठ गया और मेरी कुर्सी के पास अपने पिछले पैरों पर बैठा था, मेरी थाली से जूठा खाना मिलने की उम्मीद में बड़ी श्रद्धा से मेरी ओर देख रहा था। मैंने उसे सूखी चपाती का एक टुकड़ा दिया।
अधिकांश कुत्ते निवाला निगल जाते और और खाने की तलाश करते, लेकिन यह प्राणी, गाँव के अन्य आवारा कुत्तों की तरह, निवाला लेकर बाहर अकेले में उसका आनंद लेने का फैसला किया। वह बरामदे में भागा, और फिर मैंने कुत्ते की धीमी गुर्राहट सुनी, जिसके बाद एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी।
मेरी राइफल केंद्रीय भोजन कक्ष से जुड़े शयनकक्ष में थी, और उसे लेने
का समय नहीं था। यह समझते हुए कि पैंथर ने हमला कर दिया है और अगर मुझे कुत्ते को बचाना है तो मुझे तुरंत कार्रवाई करनी होगी, मैं बरामदे की ओर

भागा, जहाँ चाँदनी में मैंने ठीक समय पर देखा कि एक चित्तीदार आकृति बरामदे के ऊँचे चबूतरे से नीचे कूदी, उसके जबड़ों में कुत्ता था, जो अभी भी जीवित था और संघर्ष कर रहा था।
हमलावर को डराने के लिए ज़ोर से चिल्लाते हुए, मैंने हाथ में आई पहली चीज़, सरकारी इमारतों में रखी जाने वाली लकड़ी की सख्त कुर्सियों में से एक, उस झुके हुए शरीर पर फेंक दी। भागता हुआ तेंदुआ केवल पंद्रह फीट दूर था जब कुर्सी सीधे उस पर गिरी, लेकिन तेंदुआ ने बेचारे कुत्ते को नहीं छोड़ा। इसके विपरीत, वह कुत्ते को कसकर पकड़े हुए ही उछलने लगा।
मैं राइफल लेने के लिए दौड़कर बेडरूम में गया, जल्दी से उसमें गोलियां भरीं और पैंथर की दिशा में चल पड़ा। आंगन में तेज चांदनी थी, इसलिए मैंने अपनी टॉर्च को हथियार से जोड़ने का इंतजार नहीं किया। इसमें समय लगता, और कुत्ते को बचाने के लिए एक पल भी बर्बाद नहीं किया जा सकता था। लेकिन बंगले के चारों ओर फैले जंगल में पहुँचते ही मामला बिल्कुल बदल गया। पेड़ों की घनी पत्तियों से छाए अंधेरे ने मुझे चारों ओर से घेर लिया, जिसमें कहीं-कहीं चाँदनी की किरणें छलक रही थीं। मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि झाड़ियों और अंधेरे में इधर-उधर भटकने से पैंथर और डर जाएगा और शिकार को और दूर ले जाएगा। वैसे भी, कुत्ते की जान बचाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। इसलिए मैं एक पेड़ की छाया में बैठ गया, इस बात से नाराज़ था कि मैंने राइफल पर टॉर्च क्यों नहीं लगाई। ऐसा करने में समय तो लगता, लेकिन कम से कम मैं देख तो पाता।
पैंथर को जब एहसास हुआ कि मैंने उसका पीछा करना छोड़ दिया है, तो उसने सोचा होगा कि मैं चला गया हूँ, क्योंकि दस मिनट के भीतर ही उसने खाना शुरू कर दिया। वह ज़्यादा दूर भी नहीं था, क्योंकि मुझे बीच-बीच में उसकी धीमी गुर्राहट सुनाई दे रही थी, जो मांस के फटने और हड्डी के टूटने की आवाज़ के साथ बदल रही थी। मैं दुविधा में था कि जानवर के पास चुपके से जाऊँ या टॉर्च लेने बंगले में वापस जाऊँ, और जैसा कि अक्सर दुविधा में होने पर होता है, मैंने गलत काम चुना।
धीरे-धीरे उठकर, अंधेरे में सावधानी से कदम बढ़ाते हुए, ताकि कोई आवाज़ न निकले, मैं बीच-बीच में सुनाई देने वाली आवाज़ों की ओर दबे पांव बढ़ा। मैंने पुराने शिकारी की तरह आवाज़ों के आने तक ही आगे बढ़ने और आवाज़ बंद होते ही रुक जाने का नियम अपनाया। क्योंकि जब कोई जानवर, जिसका आप पीछा कर रहे हैं, खा रहा हो या किसी भी तरह की आवाज़ कर रहा हो, तो इस बात की संभावना कम होती है कि वह आपके आने पर होने वाली आवाज़ों को सुन पाए, चाहे वे कितनी भी हल्की क्यों न हों। लेकिन अगर वह चुप रहे तो उसके आपको सुनने की संभावना कहीं अधिक होती है।
उस रात मैं पैंथर के काफी करीब आ गया था। मुझे नहीं लगता कि वह मुझसे पाँच गज से ज़्यादा दूर रहा होगा, जब किस्मत, जिसने अब तक मेरा साथ दिया था, ने अचानक मेरा साथ छोड़ दिया। संयोगवश, इसने तीन निर्दोष लोगों की जान ले ली। किसी भालू, सूअर या पैंगोलिन ने ज़मीन में गड्ढा खोद रखा था। अंधेरे में मुझे वह दिखाई नहीं दिया और मैंने अपना बायाँ पैर सीधे उस गड्ढे में डाल दिया, जिससे मैं झटके से गिर पड़ा। मैं आगे की ओर लड़खड़ाया, और पैंथर को पता चल गया कि मैं वहाँ हूँ। खाँसते हुए गुर्राते हुए वह भाग गया, और मैंने उसे झाड़ियों में भागते हुए सुना।
खुद को उस स्थिति से निकालकर मैं आगे बढ़ता रहा, जब तक कि मुझे उस कुत्ते का शव नहीं मिल गया जिसे पैंथर खाने लगा था। ज़मीन के अंधेरे में

मुझे उसकी आकृति धुंधली सी दिखाई दे रही थी। जब मैं विश्राम गृह लौटा, तो अलीम और उसका परिवार कुत्ते को ढूंढते हुए बाहर आ चुके थे और सोच रहे थे कि मैं कहाँ चला गया था।
मैंने अपनी टॉर्च.405 पिस्तौल की नली पर टिकाई और चौकीदार के साथ वापस लौटा। कुत्ते का केवल एक चौथाई हिस्सा ही खाया गया था। अलीम अवशेषों को बंगले में वापस ले गया और कहा कि वह उन्हें सुबह दफना देगा, जबकि मैंने पैंथर की तलाश करने का फैसला किया।
अब टॉर्च की मदद से जंगल में घूमना आसान हो गया था, और मैंने इमारत के चारों ओर एक फर्लांग के दायरे में दो घंटे से अधिक समय तक छानबीन की। मुझे पैंथर का कोई निशान नहीं दिखा, जबकि सूअरों के एक छोटे झुंड की मौजूदगी से पता चला कि चित्तीदार बिल्ली इस इलाके से पूरी तरह दूर चली गई थी। सड़क के दूसरी ओर और सिग्नल के पास रेलवे ट्रैक के किनारे, कुछ चित्तीदार हिरण और एक अकेली नीलगाय शांति से चर रहे थे, तभी अचानक एक इंजन की तीखी सीटी और एक मालगाड़ी की भारी गड़गड़ाहट से उनकी शांति भंग हो गई।
पैंथर जा चुका था। अगली सुबह जब कुत्ते के बचे हुए हिस्से को दफनाया गया तो महिलाओं और बच्चों ने खूब रोया। थोड़ी देर बाद, तय समझौते के अनुसार, मैं विश्राम गृह से निकला और रेंजर के क्वार्टर पर रुका ताकि उससे एक पुराना तंबू उधार ले सकूँ, जिसे उसने मुझे देने का वादा किया था।
दो घंटे के भीतर ही तंबू लग गया और मैंने अपनी नई जगह पर डेरा डाल दिया। बाज़ार से खरीदे गए दो मिट्टी के बर्तन तंबू के एक कोने में रखे थे, जिनसे पीने और धोने का पानी चलता था। तंबू के बाहर पत्थरों से बने दो चूल्हे मेरी ज़रूरतों के लिए काफ़ी थे, एक से चाय और दूसरे से खाना पकाया जाता था। ज़मीन ही मेरा बिस्तर थी; पास ही बहने वाली नदी पीने और नहाने के पानी का स्रोत थी; रात में रोशनी के लिए एक छोटी लालटेन थी। मुझे और क्या चाहिए था? मैं जब चाहूँ आ-जा सकता था! कम से कम दिगुवमेत्ता के लिए तो मैं हमेशा के लिए अधिकारियों और सरकारी नियमों-कानूनों से मुक्त हो गया था। मैं बहुत खुश और संतुष्ट था।
बस एक ही चीज़ गड़बड़ हो सकती थी। अगर बारिश हो जाती, तो काली कपास की मिट्टी कीचड़ में बदल जाती और चिपचिपी दलदल बन जाती। मैं कैंपकॉट लाना भूल गया था क्योंकि मेरा इरादा जंगल के बंगले में रुकने का था। इसलिए, सचमुच, मैं मुसीबत में पड़ जाता।
उस दोपहर, गिद्दलूर से लौटने के बाद, एक जीप तेज़ी से सड़क पर आई और जैसे ही वह मेरे तंबू के पास से गुज़री, मैंने आगे और पीछे लगे तख्तों पर बड़े-बड़े सफेद अक्षरों में 'आंध्र वन विभाग' लिखा देखा। ड्राइवर के बगल में बैठे व्यक्ति का सांवला चेहरा मुझे घूर रहा था। ज़िला वन अधिकारी आ गए थे!
बाद में शाम को मैं शिष्टाचार भेंट के लिए विश्राम गृह गया। मुझे सरकारी अधिकारी भले ही नापसंद हों, लेकिन भारत में अगर आप स्वतंत्र रूप से घूमना-फिरना चाहते हैं तो उनसे संपर्क बनाए रखना जरूरी है।
रक्षा अधिकारी एक युवा व्यक्ति थे, जो सेवा में लगभग नए थे और कॉलेज
की पढ़ाई पूरी करने, प्रशिक्षण लेने और प्रांतीय केंद्रों में से एक में विभागीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सीधे विभाग में भर्ती हुए थे। बहुत जल्द ही मुझे पता चल गया कि उन्हें जंगल के जीव-जंतुओं के बारे में कुछ भी नहीं पता था और बाघों और तेंदुओं की भयानक क्रूरता के बारे में उनके मन में आम धारणाएँ ही थीं।

अलीम ने उसे पिछली रात कुत्ते के साथ हुई घटना के बारे में बताया था, लेकिन उसने कहानी में मेरी भूमिका का खुलासा नहीं किया था, और न ही सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं उस बंगले में रह रहा था।
तो फिर रक्षा अधिकारी ने मुझे घटना का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया, जिसमें यह भी बताया कि कैसे पैंथर अलीम की छाती पर कूद पड़ा और वहाँ सो रहे कुत्ते को उठाकर ले गया। मैंने यह सब भोलेपन से, बल्कि आश्चर्य भरे भाव से सुना। जाहिर है, उसे यह बात समझ में नहीं आई कि लोग आमतौर पर अपनी छाती पर इतने भारी-भरकम कुत्तों को रखकर नहीं सोते।
हालांकि, नतीजा यह हुआ कि रक्षा अधिकारी ने मुझे पैंथर का शिकार करने
के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ ठहर रहा हूँ और यह जानकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि मेरे पास दस तंबू हैं और मैं अपनी ही जगह पर डेरा डाले हुए हूँ। उन्होंने बड़ी उदारता से सुझाव दिया कि मैं बंगले के दूसरे हिस्से में रहूँ और वहाँ की सुविधाओं का आनंद लूँ।
शर्म से सिर झुकाए हुए मैंने उन्हें याद दिलाया कि मेरे पास 'सरकारी
वन लॉज में रहने की आधिकारिक अनुमति' नहीं है, और चालाकी से कहा कि इस मामले में उनके विभाग के नियम बहुत सख्त हैं। अनुमति केवल वन संरक्षक या जिले के कलेक्टर द्वारा ही दी जा सकती है।
मेरा नया दोस्त नाराज़ हो गया। क्या वह खुद डी.एफ.ओ. नहीं था? क्या उसकी अनुमति काफी नहीं थी? संरक्षक और संग्रहकर्ता भाड़ में जाएं! उसने कहा, 'तुम अभी बंगले पर आओ; आज रात हम साथ में खाना खाएंगे।'
तो मैं वहीं लौट आया जहाँ से मैंने शुरुआत की थी, लेकिन अब एक मेहमान
के रूप में, क्योंकि मैं एक आवारा की तरह चला गया था। इतना ही नहीं, और मुझे पूरा यकीन है कि यह महज़ किस्मत की बात थी, मुझे एक बार फिर इमारत के पश्चिमी या स्नानघर वाले हिस्से में जगह मिल गई। और यह वाकई सौभाग्य की बात थी कि मैं बंगले की शरण में ठीक समय पर लौट आया, क्योंकि उस रात बहुत तेज़ बारिश हुई थी। अगली सुबह, मेरा शिविर स्थल काली मिट्टी के समुद्र में तब्दील हो गया था।
रक्षा अधिकारी ने अलीम के कहने पर, मेरी इच्छा के विरुद्ध, गाँव से एक कुत्ता लाने को कहा और चौकीदार को निर्देश दिया कि उसे इमारत के लगभग दस गज पीछे उगे सागौन के पेड़ से बाँध दे। वह चाहता था कि मैं ही उस लुटेरे को पकड़ूँ। मुझे कुत्तों को चारा बनाना पसंद नहीं है। वे बहुत संवेदनशील होते हैं और बाँधे जाने पर डर से काँपने लगते हैं, क्योंकि उन्हें अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे का एहसास हो जाता है।
रक्षा अधिकारी के पास कोई बंदूक नहीं थी, लेकिन वह मेरे साथ भोजन कक्ष में एक और कुर्सी पर बैठ गया। दरवाज़ा आधा खुला रखने से हम बाहर की हर चीज़ को साफ़ चाँदनी में देख सकते थे, जबकि भोजन कक्ष के अंधेरे में पैंथर शायद हमें न देख पाए।
आप यकीन मानिए कि मैं पूरी सतर्कता से नज़र रख रहा था, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि कुत्ते की जान जाए। कुत्ते ने खतरे को भांपते हुए और ठंडी हवा से परेशान होकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकना और रोना शुरू कर दिया। अगर पैंथर उस समय आधे मील या उससे भी ज़्यादा दूरी के दायरे में होता, तो वह उसकी आवाज़ ज़रूर सुन लेता।
रात 11 बजे के कुछ देर बाद रक्षा अधिकारी को हल्की नींद आने लगी और आधी रात से पहले ही वह अपने बिस्तर पर चले गए। सुबह दो बजे के कुछ देर बाद, जब चाँद पेड़ों के पीछे छिप गया, तो लंबी-लंबी परछाइयाँ पड़ने लगीं और

‘तुरंत आओ,’ अलीम के पत्र का समापन जल्दबाजी भरे लहजे में हुआ। ‘एक आदमखोर पैंथर हमारे बीच है!’
दुर्भाग्यवश, उस दिन मेरे कुछ ज़रूरी काम थे, इसलिए मैंने अगली सुबह जल्दी निकलने का फैसला किया। मैंने कार से यात्रा की ताकि देरी न हो और मैं अपना टेंट, सामान और शिविर स्थल पर रहने के लिए आवश्यक सभी चीज़ें साथ ले जा सकूँ। मैं अपने अभियान के बीच में बंगले से निकाले जाने की परेशानी दोबारा नहीं मोल लेना चाहता था। इसके अलावा, जब किसी आदमखोर जानवर, विशेषकर पैंथर का शिकार कर रहे हों, तो सरकार के उन नियमों का पालन करना संभव नहीं है जो यात्रियों के बंगले या वन विश्राम गृह में तीन दिन से अधिक ठहरने पर रोक लगाते हैं।
मैं उसी शाम घर लौटा था, अपना सामान पैक कर चुका था और खाना खाने ही वाला था कि बाहर साइकिल की घंटी सुनाई दी। तभी मेरा नौकर थंगावेलु एक टेलीग्राम और मेरे हस्ताक्षर के लिए संदेशवाहक की पुस्तिका लेकर अंदर आया।
मैंने जल्दी से हस्ताक्षर किए और टेलीग्राम का कवर फाड़कर खोला तो मुझे अब तक का सबसे अप्रिय झटका लगा: 'पैंथर ने बहन के बच्चे को मार डाला। तुरंत आओ। अलीम।'
भोर होने से पहले ही मैं अपने रास्ते पर निकल चुका था।
यदि आप कभी दिगुवामेटा स्थित वन विश्राम गृह जाएँ, तो इमारत के दक्षिण-पूर्वी कोने पर, उससे बीस गज की दूरी के भीतर, आपको एक पत्थर की पटिया के नीचे एक छोटी सी कब्र दिखाई देगी। पत्थर पर केवल एक शब्द खुदा हुआ है: 'शरारत'।
कहा जाता है कि कई साल पहले, ब्रिटिश राज के दिनों में, एक ब्रिटिश वन अधिकारी, या शायद कोई संग्रहकर्ता, अपने छोटे कुत्ते 'मिशचीफ' के साथ बंगले में ठहरे हुए थे। अचानक एक तेंदुआ उन पर झपटा और उन्हें उठाकर ले जा रहा था, तभी अंग्रेज ने गोली चलाई और तेंदुआ और उनका कुत्ता दोनों मारे गए। अपने पालतू जानवर की याद में और उसके गम में डूबे हुए, उस अधिकारी ने उसे वहीं दफना दिया जहाँ उसकी मृत्यु हुई थी और बाद में वहाँ एक उत्कीर्णित समाधि-पत्थर लेकर लौटे और उसे उस स्थान पर स्थापित किया।
जब मैं अपनी कार से उतर रहा था, तभी अलीम ने मुझे हाल ही में हुई एक दुखद घटना की कहानी सुनाई। उसकी बहन की बड़ी बेटी को 'शरारत' की कहानी सुनाई गई थी और उसने हर सुबह कब्र पर जंगली फूलों का एक छोटा गुच्छा रखने की आदत बना ली थी। उस सुबह, किसी कारणवश, वह पत्थर की पटिया पर अपने द्वारा इकट्ठा किए गए फूल रखना भूल गई थी, और उसे देर शाम को लगभग अंधेरा होने पर याद आया। इस बीच, फूलों का छोटा गुच्छा काफी मुरझा चुका था।
‘पियरी’ नाम की उस लड़की ने अपनी माँ, अलीम की बहन को अपनी चूक के बारे
में बताया और कहा कि वह तुरंत कब्र पर फूल चढ़ा देगी। उसकी माँ ने जवाब दिया कि अंधेरा हो रहा है और आदमखोर उसे पकड़ लेगा। इसके अलावा, फूल पहले ही मुरझा चुके थे; वह अगली सुबह कब्र पर ताजे फूल चढ़ा सकती थी।
बिना परवाह किए, पीयरी मुरझाते फूलों को उठाकर भाग गई। वह अपने गंतव्य तक पहुँच गई होगी, क्योंकि फूलों का छोटा गुच्छा वहीं मिला। किसी ने कोई आवाज़ नहीं सुनी; न चीख, न सिसकी, न गुर्राहट। बच्चा वापस नहीं आया। घबराई हुई उसकी माँ ने उसे आवाज़ दी, लेकिन कोई जवाब न मिलने पर उसने बगल के कमरे से अलीम और उसकी दोनों पत्नियों को बुलाया। चौकीदार ने एक छड़ी उठाई और चारों, दो लालटेन लेकर, उस छोटी सी कब्र पर गए, जहाँ उन्हें

फूल तो मिले, लेकिन बच्ची का कोई निशान नहीं था। कुछ ही दूरी पर कांच के मोतियों का बिखरा हुआ ढेर और उन्हें पिरोने वाली डोरी पड़ी थी। और, ज़ाहिर है, थोड़ा आगे जाकर खून की कुछ बूँदें भी मिलीं!
अलीम और तीनों महिलाएं जल्दी से गांव गए थे, और काफी देर बाद रेंजर,
कुछ वन रक्षकों और कुल्हाड़ी, लाठी, चाकू और लालटेन से लैस काफी संख्या में लोगों के साथ वापस लौटे। किसी के पास बंदूक नहीं थी।
उस रात उन्होंने झाड़ियों में बड़े बेतरतीब ढंग से तलाशी ली, लेकिन कुछ नहीं मिला, क्योंकि हर कोई पैंथर से डरा हुआ था। अगली सुबह उन्होंने फिर से तलाशी ली। इस बार उन्हें हत्यारे के पदचिह्न और बच्चे के शरीर के निशान मिले, जहाँ उसे घनी झाड़ियों से घसीटा गया था। उन्हें कपड़े के कुछ फटे-पुराने टुकड़े भी मिले। उसके बाद, आदमखोर और शिकार के सभी निशान गायब हो गए थे।
अलीम ने कहा कि मुझे विश्राम गृह में ही रहना चाहिए और अपने तंबू में रहते हुए पैंथर के हमले के खतरे से बचना चाहिए। मैंने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया, लेकिन तभी उसने मुझे एक ऐसा विचार दिया जो जितना साहसी था उतना ही खतरनाक भी। उसने मुझे प्रस्ताव दिया कि अगर मैं अपनी राइफल को एक खंभे के पीछे छिपाकर बरामदे में लेट जाऊं, तो वह रात भर शरारती पैंथर की कब्र पर चारा बनकर बैठा रहेगा। उसने कहा कि पैंथर की मौजूदगी का एहसास होते ही वह धीरे से आवाज लगाएगा। तब मैं अपनी टॉर्च जलाकर उसकी रोशनी चारों ओर घुमाकर, रोशनी में जानवर की आंखें या आकृति देखकर उसे गोली मार सकता था। उस समय चांद नहीं था, रातें एकदम अंधेरी थीं।
अलीम की योजना बेहद साहसी थी, लेकिन पूरी तरह से बेतुकी और मूर्खतापूर्ण थी। भला उसे आदमखोर पैंथर की मौजूदगी का एहसास समय रहते हो पाएगा और हमले से पहले वह मुझे चेतावनी दे पाएगा! उसे तब तक कुछ भी पता नहीं चलेगा जब तक कि वह उस पर हमला न कर दे, और तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। इससे भी बुरी बात यह थी कि मैं गोली नहीं चला पाऊँगा, क्योंकि अगर मैंने ऐसा किया तो शायद गोली उसे लग जाएगी, पैंथर को नहीं। मान लीजिए कि अलीम को पैंथर के आने का आभास हो भी जाए और वह मुझे पुकार भी दे, तो भी आदमखोर पैंथर कभी सामने नहीं आएगा।
‘नहीं!’ मैं बार-बार दोहराता रहा, ‘नहीं, नहीं, नहीं!’ लेकिन साथ ही मैं
सोच रहा था कि अलीम की योजना में संभावनाएं हैं और इससे मुझे एक विचार आया: मुझे भारतीय कपड़े पहनकर शरारती जानवर की कब्र पर बैठने से कोई नहीं रोक सकता! मेरे सामान्य कपड़े आदमखोर को डरा सकते हैं, क्योंकि पैंथर बेहद चालाक और धूर्त होते हैं, लेकिन भारतीय वस्त्र उसे धोखा दे देंगे। किसी और को खतरा न होने के कारण, मुझ पर हत्या का आरोप नहीं लगाया जा सकता था; न ही आत्महत्या का कोई विचार हो सकता था। अगर आदमखोर आ भी जाए, और मुझे पहले से इसकी जानकारी न हो, तो आत्महत्या का सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि मैं आरोप का जवाब देने के लिए वहां मौजूद ही नहीं रहूंगा। इसलिए मैंने अलीम को अपनी योजना बताई और अब विरोध करने की बारी उसकी थी।
लेकिन हमेशा की तरह इन मामलों में मेरी ही मर्ज़ी चली, और सूर्यास्त
के समय मैं मिसचीफ की समाधि पर पालथी मारकर बैठा था, अलीम के सबसे गंदे कपड़े पहने हुए, मेरा चेहरा और हाथ कोयले से काले हो चुके थे, और माथे पर एक गंदा कपड़ा पगड़ी की तरह बंधा हुआ था। राइफल पास ही ज़मीन पर चुपचाप पड़ी थी, उस पर टॉर्च लगी हुई थी, जिसे पत्तों की हल्की परत से ढका गया था ताकि

आदमखोर पैंथर को गोली मारने आया हूँ, इसलिए उसने अपना संदेश भेजने से पहले रेंजर और मुझे पहले सूचित करने का निर्णय लिया।
तो मैं सही था! पैंथर सचमुच बहुत दूर था। शायद वह उस रात बंगले के पास आया ही नहीं था। शायद वह ठीक उसी समय आया था जब बड़े बिच्छू ने मुझे झूठा आगाह किया था। हो सकता है उसने मेरी टॉर्च की रोशनी देखी हो, भाग गया हो, सुरंग के पास चेनचू से मिला हो और उसे मार डाला हो। लेकिन यह लगभग असंभव था, क्योंकि सुरंग मेरे बैठने की जगह से काफी दूर थी। यह भी संभव था कि चेनचू कोई यात्री था जिसने आदमखोर पैंथर के बारे में नहीं सुना था, या शायद उसने सुना था और इसी वजह से उसने सुरंग के अंदर सोने का फैसला किया था, यह सोचकर कि यह एक सुरक्षित जगह है जहाँ पैंथर कभी नहीं आएगा।
मैंने अपने मुखबिरों को धन्यवाद दिया और कहा कि मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा। उनके चले जाने के बाद, क्योंकि कब्र के पास और अधिक देर रुकने का कोई फायदा नहीं था, मैंने थोड़ी देर सोने का फैसला किया और अलीम को निर्देश दिया कि वह मुझे चार बजे के बाद जगा दे।
वह जागता रहा होगा, क्योंकि जब उसने मुझे फोन किया तो चार बजने में
कुछ ही मिनट बाकी थे। हमने चाय बनाई और कुछ बिस्कुट खाए, जिसके बाद हम अंधेरे में रेलवे ट्रैक के किनारे एक-एक करके चलने लगे। अगर आदमखोर बाघ होता, तो ऐसा करना बेहद खतरनाक होता, क्योंकि आदमखोर बाघ लगभग हमेशा कतार में सबसे पीछे वाले व्यक्ति को ही ले जाता है। पैंथर के मामले में खतरा कम था: वह जितना डरपोक होता है, उतना ही चालाक भी होता है, वह हमला करने से पहले अकेले और असहाय शिकार का इंतजार करता है, और एक से अधिक लोगों की मौजूदगी में खुद को दिखाने से बचता है।
भोर होते-होते हम लंबे पुल पर पहुँचे। यहाँ हमें लगभग दस मिनट तक इंतज़ार करना पड़ा, जब तक कि इतनी रोशनी नहीं हो गई कि हम पुल पार करने की कोशिश कर सकें, क्योंकि यह एक जोखिम भरा काम था, जिसमें पटरियों के बीच एक स्लीपर पर कदम रखते हुए आगे बढ़ना पड़ता था। घाटी और नीचे दूर तक फैले पेड़ों की चोटियों को देखने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी, क्योंकि हमें स्लीपरों के बीच की खुली जगहों से उनकी झलक दिख रही थी।
दूसरे छोर तक की दूरी अंतहीन लग रही थी, लेकिन आखिरकार हम वहाँ पहुँच गए। थोड़ी ही दूर पर सुरंग का प्रवेश द्वार था, जो एक विशाल काले गड्ढे जैसा दिखता था। वहाँ पहुँचने से ठीक पहले, हमारे बाईं ओर और पटरी के पास, एक चेंचु के क्षत-विक्षत अवशेष पड़े थे।
जांच से पता चला कि आदमखोर जानवर अपने शिकार पर वापस लौटा होगा, या तो मालगाड़ी के गुजरने के बाद या शायद बाद में, यात्री ट्रेन के विपरीत दिशा में जाने के बाद, क्योंकि शरीर का जितना हिस्सा खाया गया था, उतना मुझे बताया नहीं गया था। सिर, पैर और हाथ धड़ से अलग होकर इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जिससे आदमखोर जानवर के वापस आने की एक संभावना (हालांकि बहुत मजबूत नहीं) बची थी।
ठीक उसी क्षण दूर से आती गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ ने हमारे विचारों को अचानक भंग कर दिया। यह आवाज़ सुरंग के मुहाने से आ रही थी, जो धीरे-धीरे तेज़ होती गई और फिर एक निरंतर गर्जना में बदल गई। दिगुवामेटा जाने वाली सुबह की यात्री ट्रेन आ रही थी। मैंने झट से मन बना लिया और अलीम को अपने पीछे आने का इशारा किया। मैं सुरंग से कुछ गज दूर पटरी पर दौड़ा ताकि ड्राइवर मुझे देख सके। मैं पटरियों के बीच खड़ा हो गया और इंजन के आगे के

हिस्से को, जो धुएं के गुबार उड़ाता हुआ सुरंग से बाहर निकला, ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाने लगा।
जब ड्राइवर ने मुझे देखा तो ट्रेन तेज़ी से चल रही थी। उसने ब्रेक लगाए और मैं पटरियों से हटकर निकल गया, लेकिन ट्रेन के रुकने से पहले ही आधी ट्रेन निकल चुकी थी। मैंने ड्राइवर और गार्ड को, जो ट्रेन के दोनों सिरों से दौड़ते हुए आए, संक्षेप में स्थिति समझाई और उनसे कहा कि वे अलीम को साथ ले जाएं और दिगुवामेटा स्टेशन मास्टर को बताएं कि वे रेंजर से स्थानीय पुलिस के माध्यम से आदेश जारी करने को कहें कि उस रात किसी को भी पुल या सुरंग के पास न जाने दें। मैं आदमखोर सांप के संभावित लौटने का इंतज़ार करने वाला था। मैंने अलीम को जल्दी से निर्देश दिए और उससे कहा कि वह हम दोनों के लिए खाना, चाय और कंबल लेकर वापस आए। दोपहर 2 बजे के कुछ ही देर बाद एक यात्री ट्रेन आने वाली थी, और वह सुरक्षित रूप से उसमें बैठ सकता था।
जब मैं बोल रहा था, तब बहुत सारे यात्री मेरे आस-पास जमा हो गए, यह जानने के लिए कि क्या हो रहा है। इनमें से कुछ अब शव को देखने पर अड़े हुए थे, जिसके कारण ड्राइवर को अपनी यात्रा जारी रखने में पंद्रह मिनट से अधिक का समय लग गया। मैंने ट्रेन को लंबे पुल से गुजरते हुए देखा, जो खड़खड़ाती हुई मोड़ पर गायब हो गई।
बेहद कम समय में गिद्धों ने अवशेषों को खोज लिया। पहले तो एक गिद्ध मेरे ऊपर आसमान में एक छोटे से बिंदु के रूप में दिखाई दिया, फिर जल्द ही अन्य बिंदु भी दिखाई दिए। इसके बाद उनके पंखों से हवा की तेज़ सरसराहट सुनाई दी और वे ज़मीन पर झपट्टा मारकर अपने संभावित भोजन से कुछ ही फीट की दूरी पर भारी कदमों से उतरे, जिसकी ओर वे बेढंगे ढंग से लड़खड़ाते हुए बढ़ने लगे।
सुरंग के मुहाने पर बैठकर, मेरे पास पटरी पर बिछी बजरी में गोला-बारूद
का भरपूर भंडार था। मैंने उन पत्थरों को साहसी गिद्धों पर फेंका, और इतनी नज़दीक से मैंने कई सीधे निशाने लगाए, जिससे वे अवांछित पक्षी दूर रहे। इस तरह समय बीतता गया और दुगुवामेटा जाने वाली एक मालगाड़ी सुरंग से तेज़ी से गुज़र गई। ड्राइवर ने मुझे, जो मुहाने के एक तरफ बैठा था, या बिखरे हुए चेंचु के अवशेषों को, देखा तक नहीं, हालांकि उसने पटरी के दोनों ओर जमा हुए गिद्धों की असामान्य संख्या को अवश्य ही देखा होगा।
यह मार्ग व्यस्त नहीं था और दोपहर दो बजे के कुछ देर बाद तक कोई और ट्रेन नहीं आई। उस ट्रेन में अलीम के लिए चाय, मेरा दोपहर का खाना और हम सबके लिए रात के लिए एक-एक कंबल था। ड्राइवर ने अलीम को उतरने के लिए ट्रेन रोकी और फिर खुद अपने दमकलकर्मियों, गार्ड और यात्रियों की भीड़ के साथ नीचे उतरा, ताकि उस शव को देख सके जिससे अब तक बहुत बदबू आ रही थी। ‘शुभकामनाएं’ की आवाज़ों के बीच ट्रेन फिर से गरजती हुई चली गई, एक घंटे बाद एक मालगाड़ी भी उसके पीछे-पीछे चली गई, जिसके बाद हमें अपने हाल पर छोड़ दिया गया। गिद्धों ने अब तक अपना काम निराशाजनक समझकर छोड़ दिया था और निराश होकर उड़ गए थे, हमें रात के लिए अपनी योजनाएँ बनाने के लिए अकेला छोड़कर।
छिपने के दो संभावित स्थान थे। पहला था सुरंग का मुँह; दूसरा, प्रवेश द्वार के ठीक ऊपर कहीं। यह निर्धारित करने के लिए कि दोनों में से कौन सा स्थान पकड़े जाने की संभावना कम रखता है, मैंने खुद को उस आदमखोर की जगह पर रखकर सोचा। सहज प्रवृत्ति और उस इलाके से लंबे समय से जुड़े रहने के कारण

उसे यह बात पता होगी कि विशालकाय राक्षस, गरजते-चिल्लाते और धुआँ उगलते हुए, समय-समय पर धरती में बने उस छेद से निकलते हैं। इसलिए वह निश्चित रूप से छेद को बहुत ध्यान से और लंबे समय तक देखता रहेगा, इससे पहले कि वह खुद को दिखाने की हिम्मत करे; इस गहन निगरानी के दौरान वह हमें देख ही लेता, क्योंकि मुझे अलीम को अपने साथ रखना था। उसे कहीं और भेजने का कोई रास्ता नहीं था, और उसे निहत्थे घर लौटने के लिए कहना बेहद खतरनाक होता।
इसलिए हमारा निष्कर्ष स्पष्ट था: हम पहाड़ी पर कहीं छिप जाएँगे, सुरंग के मुहाने के ठीक ऊपर जितना संभव हो सके, इस उम्मीद में कि पैंथर दुश्मन को देखने के लिए ऊपर की ओर न देखने के सामान्य नियम का पालन करेगा। सुरंग के प्रवेश द्वार के ऊपर की ज़मीन धीरे-धीरे ढलान वाली थी और अधिकतर मोटी घास और खरपतवारों से ढकी हुई थी, जिसमें कहीं-कहीं छोटे-छोटे पेड़ थे। यह काफी पथरीली थी और चारों ओर बड़ी-बड़ी चट्टानें बिखरी पड़ी थीं, जिनका आकार फुटबॉल से लेकर एक आदमी की ऊँचाई तक भिन्न-भिन्न था।
इस सुरक्षित आश्रय से मिली सुविधा के लिए आभारी होकर, हमने मिलकर जल्द ही पत्थरों का एक छोटा सा सहारा बना लिया। हमने उसे सुरंग के प्रवेश द्वार से थोड़ा ऊपर एक दीवार की तरह कतार में खड़ा कर दिया, जो इतनी ऊँची थी कि उसके पीछे लेटने पर हम छिप सकें। इन पत्थरों के बीच हमने दो छेद बनाए, एक अलीम के लिए और दूसरा मेरे लिए, जिनसे हम नीचे रास्ते के किनारे पड़े अवशेषों और उसके आसपास के इलाके पर नज़र रख सकें। बेहतर नज़ारा देखने और निशाना लगाने के लिए मुझे अपने बनाए हुए खुरदुरे पत्थर के चबूतरे के ऊपर से देखना पड़ता। अगर मैं राइफल को छेद से निकालने की कोशिश करता, तो हो सकता है कि बैरल पत्थर से टकराकर आवाज़ करे। पैंथर यह आवाज़ सुनकर ऊपर देख लेता और हमें देख लेता। हमारी स्थिति का एक ही नुकसान था कि हम नीचे की ओर झुके हुए थे, हमारी एड़ियाँ हमारे सिर से ऊपर थीं।
हम चार बजे तक अपनी जगह पर पहुँच गए थे, सूरज की तेज़ गर्मी हम पर पड़ रही थी और ज़मीन आग की तरह गर्म थी। हम अपने कंबलों पर लेट गए, लेकिन वे जल्द ही असहनीय रूप से गर्म हो गए, और ढलान की असुविधा अब महसूस होने लगी। मुझे लगता है, मेरे पूरे शरीर में समान रूप से रक्त के वितरण के बजाय, मेरे सीने और सिर में लगातार रक्त जमा होने के कारण, मुझे घुटन महसूस होने लगी, जो सूर्यास्त के करीब आते-आते और भी बढ़ गई। इससे मैं बेचैन होने लगा, और मैंने देखा कि अलीम भी बेचैन हो रहा था, जिससे मुझे लगा कि वह भी मेरी तरह असहज महसूस कर रहा है। अगर केवल दो घंटों के छोटे से समय में ही मुझे इतनी घुटन महसूस हो रही थी, तो यह स्पष्ट था कि हमें जल्द ही अपनी जगह बदलनी पड़ेगी।
अब अंधेरा होने लगा था, और हमें अभी भी चेंचु के अवशेष दिखाई दे रहे
थे, तभी हमारे पीछे पहाड़ी की चोटी से एक हिरण ने तेज आवाज में पुकारा। ‘खर्र!’ वह चिल्लाया, ‘खर्र! खर्र! खर्र!’
वह कर्कश स्वर में भौंकता रहा, लेकिन हिला तक नहीं। इसलिए, जो कुछ भी उसने देखा था, वह स्पष्ट रूप से सुरक्षित दूरी पर था, जिससे वह खतरे का संकेत देते हुए अपनी जगह पर डटा रहा। एक मोर ने ज़ोर से आवाज़ निकाली और हमारे पीछे एक पेड़ पर बैठे अपने ठिकाने से उड़ गया और ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए दूर चला गया। मैंने उसे अपनी आँखों के कोने से देखा जब वह फैले हुए पंखों के साथ लंबे रेलवे पुल के नीचे घाटी में चला गया।
उसके बाद सन्नाटा छा गया और लगभग अंधेरा छाने ही वाला था कि हमारे पीछे पहाड़ी पर कहीं से एक जंगली मुर्गी अचानक 'कोक! कोक! कोक! कोक!' की

हमारे बीच से गुजरा और जिस सुरंग के ऊपर हम बैठे थे, उसके किनारे से नीचे गिर गया, जहां से नीचे रेलवे ट्रैक पर ज़ोरदार आवाज़ हुई।
आधी रात को नीचे जाने वाली बस का चालक कुछ देर बाद अपनी हेडलाइट की रोशनी में जो दृश्य देखा, उसे देखकर दंग रह गया। दो आदमी चाय पी रहे थे। उनके बीच एक मरा हुआ पैंथर पड़ा था, और थोड़ी ही दूरी पर एक आदमी के क्षत-विक्षत अवशेष और हड्डियाँ बिखरी थीं। मुझे यकीन है कि वह सेवामुक्त होने के बाद भी इस दृश्य को लंबे समय तक याद रखेगा। भला आदमी होने के नाते, उसने अलीम और मुझे, साथ ही मरे हुए पैंथर को भी दिगुवामेटा तक लिफ्ट दे दी।

चावल के आटे से बना एक तला हुआ चपटा केक।

पाँच

अलौकिक कहानियाँ

कई लोगों ने मुझसे पूछा है कि क्या जंगलों में बिताए वर्षों के दौरान मुझे कोई रहस्यमय अनुभव हुए हैं, और इस बारे में मेरे विचार क्या हैं कि क्या ऐसी चीजें सच हैं या काल्पनिक हैं, या शायद अतिरंजित कल्पना की उपज हैं। मुझे सच में समझ नहीं आता कि शिकार के अनुभवों और वन विद्या का संबंध तंत्र-मंत्र से क्यों है, लेकिन किसी न किसी तरह यह जुड़ा हुआ है। मुझसे कहीं अधिक अनुभवी अन्य शिकारियों ने इस तरह की कुछ रोचक घटनाओं का वर्णन किया है और हमारे पास उन पर संदेह करने का कोई ठोस कारण नहीं है। मुझे स्वयं भी कुछ विचित्र अनुभव हुए हैं और मैंने उन्हें पहले ही बताया है, जैसे कलहट्टी वन बंगले के मृत चौकीदार की घटना। सौभाग्य से उस समय मैं अकेला नहीं था; मेरा बेटा डोनाल्ड मेरे साथ था। हम दोनों ने चौकीदार को इतनी स्पष्टता से देखा जितनी स्पष्टता से मैं इस कागज को देख सकता हूँ; जबकि उसे बहुत पहले ही गोली मारकर दफना दिया गया था!
फिर कैप्टन नेइड का मामला था, जिन्होंने एक प्राचीन मंदिर से एक पुराना दीपक हटा दिया था। इसके कुछ ही समय बाद उन्हें बुखार से गंभीर रूप से बीमार हो गए और दीपक को वापस उसकी जगह पर रखने के बाद ही वे ठीक हुए। लगभग उसी इलाके में एक लड़की रहती थी जिस पर बुरी आत्माओं का साया था, जिसके कारण वह हर बार शाम का खाना खाने की कोशिश करते समय पत्थर उगलती थी।

मैंने यह सब अपनी आँखों से देखा और एक धार्मिक चिकित्सक द्वारा उसका इलाज होते हुए भी देखा। इन दोनों घटनाओं का विवरण मैंने अपनी पिछली पुस्तक में दिया है।*
मैं तंत्र-मंत्र का विशेषज्ञ नहीं हूँ और मुझे लगता है कि जिस विषय के बारे में किसी को कोई जानकारी न हो, उस पर राय देना बहुत मूर्खतापूर्ण है। इसलिए मैं केवल दक्षिण भारत के लोगों की कुछ मान्यताओं को दर्ज करना चाहता हूँ। बेशक, यह उन लोगों के सवालों का जवाब नहीं है जिन्होंने मुझसे व्यक्तिगत राय पूछी है। वास्तव में, मेरे पास कोई जवाब नहीं है। प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में शायद सबसे प्रचलित मान्यता पति-पत्नी
के रूप में विद्यमान दुष्ट आत्माओं के एक जोड़े में है। तमिल भाषा में स्त्री को मिन्नीस्पुरम और मलयालम में यक्षी कहा जाता है। यह सर्वमान्य है कि स्त्री अत्यंत शत्रुतापूर्ण और मनुष्यों, विशेषकर अन्य महिलाओं के लिए खतरनाक होती है, जबकि पुरुष आमतौर पर काफी हानिरहित होते हैं, कम से कम तमिल मान्यताओं के अनुसार। यह दृष्टिकोण मानव जाति के पुरुषों और महिलाओं के संबंध में हमारे अपने दृष्टिकोण से काफी मिलता-जुलता है। लेकिन मलयाली लोग अलग सोचते हैं: उनका कहना है कि यक्षिणियाँ (स्त्री आत्माएँ) और गंधर्व (पुरुष आत्माएँ) दोनों ही मनुष्यों के लिए अत्यंत खतरनाक हैं। तमिलों का मानना है कि मिनीस्पुरम (स्त्री) किसी भी रूप या आकार को धारण कर सकती हैं, चाहे वह पशु हो या मनुष्य, और अक्सर धुंधली सफेदी या कालेपन के ऊंचे खंभों के रूप में प्रकट होती हैं। मलयाली कहते हैं कि यक्षिणियां आमतौर पर अधिक सुंदर रूप में प्रकट होती हैं, जैसे कि आकर्षक नग्न स्तन वाली महिलाएं, कमर के नीचे अर्ध-पारदर्शी लुंगी पहने हुए, उनके बाल लंबे और पीठ पर लहराते हुए, इस प्रकार उनकी खोखली पीठ को छुपाते हैं जो इन आत्माओं की विशेषता है। ऐसी कहानियां प्रचलित हैं कि कैसे एक पुरुष या युवक रात में घर लौटते समय इन धुंधली प्राणियों में से किसी एक से मिला और उसके पास जाने के लिए प्रलोभित हुआ; फिर उसे सिर या पीठ पर प्रहार किया गया, खून की उल्टी होने लगी और चौबीस घंटे के भीतर उसकी मृत्यु हो गई। अन्य लोगों को कुओं या तालाबों के किनारे तक प्रलोभित किया गया और फिर उन्हें अंदर धकेल दिया गया।
दो नंबूदरी (पश्चिमी तट के ब्राह्मण पुजारी) की एक कहानी है, जिनका सामना दो यक्षिणियों से हुआ जो सुंदर कन्याओं के रूप में थीं। उन्होंने उन कन्याओं से बात की और उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण मिला। पुजारी आकर्षित हुए और पता चला कि दोनों कन्याओं का घर वाकई बहुत सुंदर था। दोनों नंबूदरी एक-एक कन्या के साथ अलग-अलग कमरों में गए। लेकिन किसी अज्ञात कारण से उनमें से एक घबरा गया: प्रेम करने के बजाय उसने अपने हाथ में अपना निजी ताबीज, ताड़ का पत्ता जिस पर पवित्र शब्द 'नघरी' खुदा हुआ था, कसकर पकड़ लिया।
अगले कमरे से खिलखिलाहट की आवाज़ आई, जो अचानक रुक गई और उसके बाद हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनाई दी। लड़की ने पुजारी को छुआ तक नहीं, बल्कि उससे विनती की कि वह ताड़ का पत्ता फेंक दे और प्रेम करे, और अपने नग्न शरीर को दिखाकर प्रलोभन को और भी बढ़ा दिया। लेकिन पुजारी, जो अब पूरी तरह से शंकालु हो चुका था, अपने पत्ते से मजबूती से चिपका रहा।
अचानक बगल वाले कमरे से आ रही चरमराहट की आवाज़ बंद हो गई, जिसके बाद लड़की क्रोधित हो उठी, उसने पुजारी को ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ दीं, उसके चेहरे पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा और आँखों से ओझल हो गई। घर भी गायब हो

गया! और पुजारी ने खुद को अँधेरे में अपने दोस्त के क्षत-विक्षत शरीर के साथ अकेला पाया।
पिशाचवाद में विश्वास, लेकिन एक विशेष रूप में, आम है। यूरोपीय पिशाचों की तरह खून चूसने के बजाय, भारतीय पिशाच, जो केवल रात में प्रकट होता है और दिन भर धरती में सोता है, रात में अकेले आदमी का पीछा करने में माहिर है; जब वह रुकता है तो वह भी रुक जाता है और जब वह चलता है तो वह भी चलने लगता है। यह सिलसिला आदमी के गंतव्य से सौ गज की दूरी तक जारी रहता है, और फिर पिशाच हमला करता है! यह पीछे से हमला करता है, फिर अपने शिकार के टुकड़े-टुकड़े करके उसका मांस खा जाता है। बचने का एकमात्र तरीका है एक पवित्र शब्द बोलना और खींची हुई छुरी से पिशाच पर पलटवार करना। पिशाच एक घायल जानवर की तरह चीखेगा। उसे तब तक बार-बार चाकू मारना होगा जब तक वह गिर न जाए, और फिर वह खून के तालाब में गायब हो जाएगा। या ऐसा कहा जाता है! व्यापार में अपार सफलता और भरपूर धन-संपत्ति अर्जित करने के साथ-साथ
कई तरह की दौलत जमा करने का अधिकार तब प्राप्त होता है जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को एक विशेष प्रकार की आत्मा को सौंपने के लिए सहमत हो जाता है, जो बदले में परिवार को अपार धन प्रदान करती है। सांसारिक पति को अपनी पत्नी से अलग रहना पड़ता है और उसके साथ यौन संबंध नहीं रखना चाहिए, हालांकि उसे उससे बात करने और कभी-कभार उसके साथ भोजन करने की अनुमति होती है।
पत्नी को अलग घर में रहना पड़ता है; रात नौ बजे दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं और सांसारिक पत्नी को खिड़कीविहीन शयनकक्ष में जाना पड़ता है। जल्द ही एक धुंधली सी आकृति प्रकट होती है जो आत्मा-पति का रूप धारण कर लेती है। वह सुबह तीन बजे तक उसके साथ रहता है, क्योंकि यही वह समय है जब सभी सम्मानित आत्माओं को प्रेत रूप में उसी तरह विदा होना पड़ता है जैसे वे आई थीं, जबकि कम सम्मानित पुरुष अपने जूते हाथों में लिए चुपके से घर लौट जाते हैं!
कई साल पहले, मैं रंगून से आए एक यहूदी परिवार को जानता था। पति हार्डवेयर का व्यापार करता था। उसकी पत्नी और तीन बच्चे थे। उनकी शादी को काफी समय हो गया था और व्यापार अच्छा नहीं चल रहा था। फिर कहा जाता है कि उन्होंने एक आध्यात्मिक पति से समझौता किया, जिसे पत्नी पसंद आ गई, क्योंकि तीन बच्चों के बावजूद भी पत्नी का रूप-रंग अभी भी सुंदर था। यह स्पष्ट नहीं है कि पत्नी ने यह समझौता चाहा था या व्यापार में रुचि रखने वाले पति ने।
नियमों के अनुसार, वह एक अलग घर में रहने लगी, रात नौ बजे दरवाजे बंद
कर लेती और सुबह तीन बजे तक अपने आध्यात्मिक पति के साथ समय बिताती। उसका सांसारिक पति और तीनों बच्चे रात भर दूसरे घर में सोते थे, लेकिन दिन में उससे मिलने आते थे। व्यापार में तरक्की हुई। उनके हाथ में जो भी आता, वह फलता-फूलता और सोने में तब्दील हो जाता। यह परिवार रंगून के सबसे समृद्ध और बेहद धनी परिवारों में से एक बन गया।
फिर एक दोपहर कुछ ऐसा हुआ। सांसारिक पति-पत्नी साथ थे। बच्चे बाहर गए हुए थे। पत्नी अब भी सुंदर थी और पुरानी आदतें इतनी प्रबल थीं कि उन पर काबू पाना मुश्किल था। दोनों पति-पत्नी अंतरंग हो गए।
उस रात नौ बजे के बाद पत्नी के घर में बहुत हंगामा हुआ। पति की आत्मा प्रकट हुई और वह बहुत क्रोधित और ईर्ष्यालु था। उसने पत्नी को बुरी तरह पीटा और कहा कि वह फिर कभी यहाँ नहीं आएगा। लेकिन वह नहीं आया और परिवार की किस्मत लगातार बिगड़ती चली गई। उनका व्यापार पूरी तरह ठप हो गया। उन्हें

अपना सब कुछ बेचना पड़ा और रंगून के सबसे अमीर परिवारों में से एक से वे सबसे गरीब परिवारों में से एक बन गए।
ऐसे मामले भी सामने आए हैं जिनमें आत्मा-पत्नियां रात में आती हैं। लेकिन क्या ये भौतिक धन लाती हैं, या भौतिक गरीबी और मुसीबतें लाती हैं, जैसा कि आमतौर पर उनकी सांसारिक समकक्ष करती हैं, यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है।
मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि क्या काले जादू में कोई सच्चाई है, और मेरे करीबी दोस्तों के जीवन में इसके कई उदाहरण हैं। मैं पहले ही ओस्सी ब्राउन के मामले का जिक्र कर चुका हूं, जिसका गवाह बनने में मुझे बहुत अनिच्छा हुई थी।*
लगभग बीस साल पहले मैंने कुछ ऐसा किया था जो मुझे नहीं करना चाहिए था; लेकिन अब मुझे यह स्पष्ट नहीं है कि मैंने उस व्यक्ति को नाराज़ किया था या मैं उसके प्रभाव में आ गया था। आप चाहें तो इसे मेरी अवचेतन कल्पना कह सकते हैं। लेकिन दो सप्ताह से अधिक समय तक, ठीक सुबह 3 बजे, मैं एक भयानक, घुटन भरी अनुभूति के साथ जाग जाता था, मानो कोई मुझे गले से जकड़ रहा हो। फिर मुझे खिड़की के बाहर भारी कदमों की आहट सुनाई देती थी—किसी के सेना के बूट पहने हुए चलने की धीमी, सधी हुई चाल। मैं कई बार लाठी लेकर—यहाँ तक कि बंदूक लेकर भी—बाहर भागा। फिर भी तेज चाँदनी में कुछ भी दिखाई नहीं देता था, और कदमों की आहट बंद हो जाती थी। जैसे ही मैं अंदर लौटता, कदमों की आहट फिर से शुरू हो जाती। यह लगभग दस मिनट तक चलती रहती थी।
एक रात हालात बेकाबू हो गए। मैं लगभग दम घुटते हुए उठा। मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। हमेशा की तरह मैं बंदूक लेकर बाहर भागा और हर जगह तलाशी ली। कुछ भी नहीं मिला। मैं वापस आया तो कदमों की आहट फिर से शुरू हो गई। मैंने खिड़की बंद कर दी और ताला लगा दिया। सब कुछ बहुत अजीब था, लेकिन मैंने इसे नजरअंदाज करने का फैसला किया। बिजली की बत्ती बंद करके मैं बिस्तर पर लेट गया।
अगले ही पल कोई नरम चीज़ मेरे मच्छरदानी से टकराई और ज़मीन पर गिर गई। मैं बिस्तर से उछलकर उठा और लाइट जलाई। ज़मीन पर गीली मिट्टी का एक गोला पड़ा था, जो मेरी मुट्ठी जितना बड़ा था। ये कहाँ से आया? खिड़की तो बंद थी।
मेरी पत्नी और बच्चे बगल वाले कमरे में गहरी नींद में सो रहे थे।
इस स्तर पर मैंने इस मामले में कुछ करने का निश्चय किया—कुछ ऐसा जो मैं सामान्यतः कभी करने के बारे में नहीं सोचता।
बैंगलोर में एक संत रहते हैं, जिन्होंने ज्योतिषी, चोरी की संपत्ति वापस दिलाने वाले और तंत्र-मंत्र करने वाले के रूप में काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है। परामर्श के लिए उनकी फीस एक रुपया (लगभग एक शिलिंग और चार पेंस) है, जिसे पान के पत्ते पर रखकर उन्हें देना होता है—न अधिक, न कम। मैंने इस व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ सुना था और उसे एक चालाक बदमाश समझा था।
मैं उससे मिलने गया। उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें और बड़ी-बड़ी मूंछें थीं। इसके अलावा उसमें कुछ भी खास नहीं था। मैं उसके कमरे में गया और पान के पत्ते पर अपना एक रुपया रख दिया, उस समय मैं खुद को शहर का सबसे बड़ा मूर्ख महसूस कर रहा था।
मेरी ओर देखते हुए उन्होंने शांत भाव से कहा: ‘आपको रात में कदमों की आहट सुनकर परेशानी हो रही है। हाल ही में आप पर मिट्टी का गोला फेंका गया था। आप पर जादू कर दिया गया है’—(और यहाँ उन्होंने संबंधित व्यक्ति का

वर्णन किया) ‘क्योंकि आपने उस व्यक्ति को वह देने से इनकार कर दिया जो उसने माँगा था।’
आप कहेंगे, इसे समझाना आसान है। शायद मन पढ़ना ही इसका जवाब है; या सम्मोहन का कोई रूप; या दोनों। आप बिल्कुल सही हो सकते हैं। लेकिन सुनिए आगे क्या हुआ।
उन्होंने मुझसे कहा, ‘घर जाओ। अपनी खिड़की से सूरज उगने की दिशा में
छह कदम नापो। फिर जमीन में एक फुट तक खोदो। तुम्हें कुछ मिलेगा। उसे नष्ट कर दो। फिर तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।’
मैं गुस्से से भरा घर लौटा। मैंने अपने हाथों में फावड़ा उठाया और मेरा गुस्सा और बढ़ गया। मैंने अपनी खिड़की से पूरब की ओर छह कदम नापे और खोदना शुरू कर दिया। अब मैं सिर्फ गुस्से में ही नहीं था, बल्कि यह भी सोच रहा था कि मैं इतना मूर्ख कैसे बन गया। लेकिन मुझे कुछ मिला, और मैंने लगभग एक फुट गहरा खोदा था। मुझे मिट्टी से बनी एक गुड़िया मिली जो ज़मीन में दबी हुई थी। एक भद्दी सी गुड़िया जिसका सिर, हाथ और पैर बेढंगे थे। लेकिन उसके सिर पर इंसानी बाल चिपकाए गए थे और उसमें एक कील ठोंकी गई थी। कील के नुकीले सिरे पर एक सूखा नींबू का छिलका था जिसे लगभग आधा काट दिया गया था। इंसानी बाल बिल्कुल मेरे अपने बालों जैसे दिख रहे थे।
मैं दंग रह गया; और मैंने उस चीज़ को जला डाला! अगली सुबह तीन बजे मुझे कदमों की आहट नहीं सुनाई दी, और न ही कभी सुनाई दी!
अब, उस द्रष्टा को यह कैसे पता चला? यह मन-पढ़ने की क्षमता तो नहीं हो सकती थी, क्योंकि मुझे खुद उस गुड़िया के बारे में पता नहीं था। और न ही उसने पहले से कोई योजना बनाई होगी, क्योंकि उसे कैसे पता चलता कि मैं उससे सलाह लूँगा?
कई वर्षों बाद, मैंने यह घटना एक ऐसे व्यक्ति को बताई जो ऐसे मामलों में रुचि रखता था। उसने मुझे बताया कि मानव बालों वाली मिट्टी की गुड़िया मुझे ही दर्शाती है। सिर में ठोंकी गई कील इस बात का प्रतीक थी कि मंत्र मेरे मन, मेरी तर्क शक्ति के विरुद्ध किया गया था। यदि ऋषि ने मुझे गुड़िया का पता न बताया होता और श्राप दूर न किया होता, तो मैं निश्चित रूप से कुछ ही समय में पागल हो जाता!
इस घटना ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मैंने इन मामलों की पूरी तरह से जांच करने का फैसला किया। चूंकि मेरा यह मित्र काला जादूगर और तंत्र-मंत्रियों के बीच लोकप्रिय था, इसलिए मैंने उससे और अधिक जानकारी देने के लिए, वास्तव में, मुझे अपने समूह में शामिल करने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया। लेकिन उसने साफ इनकार कर दिया!
मुझमें एक ऐसी आदत है जिसके बारे में मुझे नापसंद करने वाले लोग जमकर शिकायत करते हैं। यह है ज़िद्दीपन और दृढ़ता। मेरा दोस्त जितना मना करता, मैं उतना ही उसे परेशान करता। आखिरकार, उसने मुझे सिल्वर आर्मलेट बिरादरी का सदस्य बना लिया!
मेरे पास चांदी का बाजूबंद है जिसे मैं विशेष अवसरों पर पहनती हूँ, और इसे छूने की अनुमति किसी और को नहीं है। मैं आपको समाज के सभी रहस्यमय अनुष्ठानों के बारे में नहीं बता सकती क्योंकि मैंने उन्हें प्रकट न करने की शपथ ली है; लेकिन मैं आपको दीक्षा समारोहों की संक्षिप्त जानकारी दे सकती हूँ।
पहली विधि के अनुसार, अमावस्या की रात (जो अमावस्या से पहले की रात होती है) किसी पुराने कब्रिस्तान में जाना होता है—कब्रिस्तान जितना

लकड़ी, हाथीदांत, हड्डी या किसी अन्य पदार्थ से एक छोटी काली गुड़िया बनाने (या खरीदने) का निर्देश दिया जाता है, जिसे उसे अपने घर में किसी मेज या शेल्फ पर रखना होता है, और जलती हुई मोमबत्तियों, अगरबत्ती, कपूर और अन्य चीजों से प्रतिदिन उसकी पूजा करनी होती है। यह छोटी सी मूर्ति नन्हे शैतान का प्रतीक है, और यह अनुष्ठान उस बंधन को पक्का करता है जिसके द्वारा परी उसकी सेवा करने के लिए सहमत होती है।
फिर वह व्यक्ति जो चाहे मांग सकता है और पा सकता है, बशर्ते वह उसे एक निश्चित समय सीमा के भीतर, जैसे एक या दो महीने में लौटाने के लिए सहमत हो जाए। लेकिन उसे कुछ भी मुफ्त में नहीं मिलेगा। वह छोटी परी उसे पैसे, एक सेब, सिरदर्द की दवा, पका हुआ भोजन, यहाँ तक कि खराब कार के लिए पेट्रोल भी लाकर देगी। लेकिन हर चीज तय समय पर लौटानी होगी। अन्यथा, वह व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, उसे खो बैठेगा!
यह परी अपने संरक्षक के लिए केवल एक ही नि:शुल्क सेवा करती है। यह उसे आने वाले खतरे से आगाह करती है और उससे बचाने का उपाय करती है। लेकिन इस परी द्वारा माँगी गई कीमत बहुत अधिक है। इसके कारण संरक्षक की आयु कम हो जाती है; वह किसी स्त्री से संबंध नहीं रख सकता; उसे रात में मुश्किल से ही सोने दिया जाता है; वह कभी धन अर्जित नहीं कर सकता, हालाँकि उसे अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त धन मिलता है; उसके अपने परिवार के साथ अच्छे संबंध नहीं रहते; वह हमेशा एक घुमक्कड़, बेचैन और कभी स्थिर न हो पाने वाला व्यक्ति बना रहता है।
सिल्वर आर्मलेट के भाईचारे के सदस्य के रूप में, मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि काला जादू अध्ययन करने के लिए एक आकर्षक विषय है - लेकिन अगर इसे अपनाया जाए तो यह एक कठोर और निर्दयी गुरु साबित हो सकता है!
मेरा एक और अच्छा दोस्त है, जो सेना से सेवानिवृत्त डॉक्टर है और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय चिकित्सा सेवा में कर्नल था। उसने मुझे एक कहानी सुनाई, जिसके बारे में वह मुझे यकीन दिलाता है कि वह बिल्कुल सच है। मद्रास में तैनात रहते हुए, उसकी मुलाकात दो भाइयों, मोहम्मद बे और अली बे से हुई, जो मिस्र के थे। उसकी मोहम्मद बे से दोस्ती हो गई, लेकिन उसे लंबे समय तक यह पता नहीं था कि दोनों भाई तांत्रिक थे और उन्होंने मिस्र में एक कुशल गुरु के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त किया था।
जब कर्नल को यह पता चला, तो उसने मजाक में अपने दोस्त से कहा, "ओह, तो तुम मुझे एक आत्मा दिखा पाओगे। मैं एक आत्मा को देखने के लिए तरस रहा हूँ और वर्षों से कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन सफलता नहीं मिली है।"
मोहम्मद बे ने गंभीरता से उत्तर दिया, “मैं न केवल तुम्हें एक आत्मा दिखाऊंगा, बल्कि उसे जीवन भर के लिए तुम्हारा सेवक बना दूंगा, जो तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेगा और तुम्हारे लिए सौभाग्य लाएगा। लेकिन एक पक्की शर्त है। कभी भी, किसी भी समय, इस आत्मा सेवक का इस्तेमाल किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाने या किसी भी प्रकार के बुरे उद्देश्य के लिए मत करना। अगर तुमने ऐसा किया, तो वह तुम पर पलटवार करेगा और तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, और वह भी अत्यंत दर्दनाक तरीके से। क्या तुम सहमत हो?”
डॉक्टर ने हंसते हुए कहा, 'आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं। यह प्रस्ताव बहुत आकर्षक है और मुझे इसमें बेहद दिलचस्पी है।'
मोहम्मद बे ने तब एक राइटिंग पैड और एक पेंसिल मांगी, और जब उन्हें ये सामग्री मिल गई तो वे कुछ देर तक काम में लगे रहे। कर्नल ने बड़ी कृपा करके मुझे वह कागज का पन्ना उधार दिया जिस पर मिस्रवासी ने बीस साल से भी पहले

अपना चित्र बनाया था, और मैंने उसकी हूबहू नकल करके उसे पृष्ठ 125 और 126 पर पुन: प्रस्तुत किया है।

मिस्र के जादूगर द्वारा बताए गए मंत्र, या आत्माओं को बुलाने के शब्द,

आह, आह, शरहील वा बुरहुदे वा नूदाजु वा अस्किराह इफ अलुए अयव्हेल कदामु मा अमुरो बी ही मिन शैन हथल कदमु बी ह्यकी शरहील उस फुर या रूह (तीन बार) था-अल (तीन बार) बिल अमरुहो (सात बार)।

उत्तर दिशा की ओर मुख करके प्रारंभ करें। फिर दाईं ओर या पूर्व दिशा
की ओर मुड़ें और ऊपर दिए गए शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें। फिर बाईं ओर या पश्चिम दिशा की ओर मुड़ें और शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें। इसके बाद दाईं ओर मुड़कर विपरीत या दक्षिण दिशा की ओर मुख करें और शब्दों को सात बार पढ़ें। फिर वापस उत्तर दिशा की ओर मुड़ें और शब्दों को एक बार फिर सात बार पढ़ें। चारों दिशाओं में यह पूरा करने के बाद, अपने चुने हुए कब्रिस्तान की दिशा में मुड़ें और शब्दों को इक्कीस बार पढ़ें। अंत में, धीरे-धीरे सांस लें, थोड़ी देर सांस रोकें और फिर धीरे-धीरे तीन बार सांस छोड़ें, हर बार उस आध्यात्मिक अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करें जो इस अभ्यास को सिखाने वाले व्यक्ति द्वारा चाही गई हो, या जिसे आप स्वयं देखना चाहते हों।
इस प्रक्रिया का पालन बाईस दिनों तक करना है, जिसकी शुरुआत इस प्रकार होनी चाहिए कि तेईसवाँ दिन मंगलवार या शुक्रवार को पड़े। यही वह दिन है जिस दिन कब्रिस्तान जाना है। दूसरे शब्दों में, निर्देशों का पालन बाईस दिनों तक करें, और यह प्रक्रिया सोमवार या गुरुवार को समाप्त होनी चाहिए। अगले दिन (मंगलवार या शुक्रवार) कब्रिस्तान जाना है।
नीचे दिए गए चित्र को कागज के एक टुकड़े पर ट्रेस करके, मोड़कर लॉकेट
या वॉलेट में सौभाग्य के लिए रखा जा सकता है:

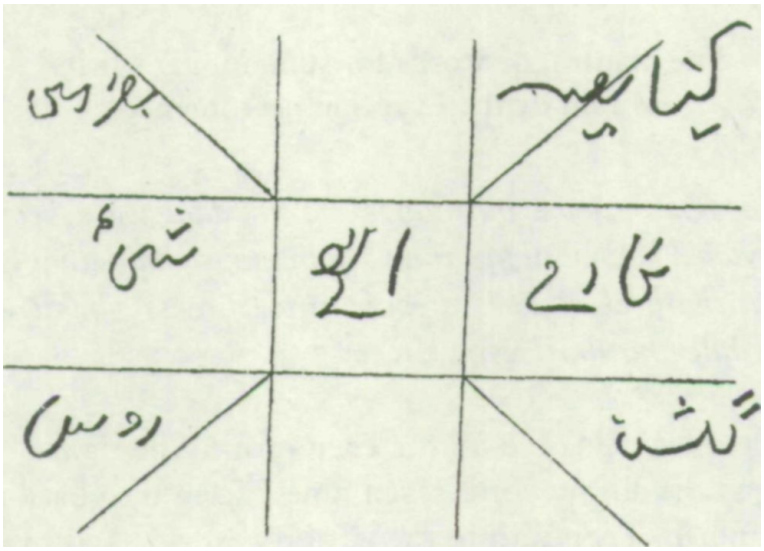

मोहम्मद बे ने समझाया, ‘मैंने इसे रोमन-अरबी में लिखा है ताकि आप इसे पढ़ सकें।’ (रोमन-अरबी अरबी का वह रूप है जिसमें अरबी को रोमन अक्षरों में ध्वन्यात्मक रूप से लिखा जाता है)। ‘इसके बाद अंग्रेजी में निर्देश दिए गए हैं। कृपया इनका अक्षरशः और पूरी ईमानदारी से पालन करें।’
‘अंतिम दिन की शाम तक गुलाबों की एक बड़ी माला तैयार करने का आदेश दें, और उस दिन आधी रात से नब्बे मिनट पहले स्नान करके साफ सफेद कमीज और सूट पहन लें। मैं आपको 11:30 बजे बुलाऊंगा और आगे क्या करना है, यह बताऊंगा। एक और बात। आपको उस अंतिम दिन उपवास रखना होगा, लेकिन आप सुबह और शाम को एक-एक कप दूध पी सकते हैं। इससे ज्यादा कुछ नहीं।’
अब आइए गणना शुरू करें कि तेईसवाँ दिन कौन सा है।
इसके बाद मिस्रवासी ने दीवार पर टंगे एक बड़े कैलेंडर की ओर रुख किया, पेंसिल की नोक से कैलेंडर पर दिनों की गिनती करते हुए कुछ गणनाएँ कीं, और अंत में एक दिन और एक तारीख का नाम दिया।
उन्होंने रहस्यमय ढंग से कहा, 'तैयार रहो,' और डॉक्टर ने सहमति जताई। निर्देशों का अक्षरशः पालन किया गया, लेकिन इस दौरान कर्नल मोहम्मद
बे से कभी नहीं मिले। तीसरे सप्ताह के अंत में उन्हें लगा कि उनका मित्र जानबूझकर उनसे बच रहा है। उन्हें आश्चर्य हुआ कि क्या यह सब एक मज़ाक था। अंतिम दिन आ गया। कर्नल द्वारा मंगवाई गई गुलाबों की माला शाम तक तैयार हो गई थी। रात 10:30 बजे उन्होंने स्नान किया और फिर साफ सफेद कपड़े पहने। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें खुद पर मूर्खता का एहसास हुआ।
ठीक रात 11:30 बजे, एक कार उनके पुराने जमाने के आवास के बरामदे के नीचे आकर रुकी और मिस्रवासी नीचे उतरे। वे भी सफेद कपड़े पहने हुए थे। ‘डॉक्टर, माला ले आइए,’ उसने सहज स्वर में कहा, ‘हमें आधी रात तक वहाँ पहुँचना होगा।’
वे कहाँ जा रहे हैं, यह सोचते हुए डॉक्टर ने निर्देशानुसार काम किया। पंद्रह मिनट में वे कब्रिस्तान पहुँच गए और गुलाबों की माला लिए डॉक्टर अपने साथी के पीछे-पीछे छोटे गेट से अंदर चले गए। चारों ओर घना अंधेरा था, बस तारों की हल्की रोशनी दिखाई दे रही थी। कब्रिस्तान के अंदर मिस्रवासी

एक पल के लिए रुका। फिर वह कुछ दूर तक कब्रों के बीच चला, मानो किसी खास कब्र की तलाश में हो, और डॉक्टर उसके पीछे-पीछे चलने लगे। आखिरकार उन्हें वह कब्र मिल ही गई। एक कब्र जिस पर ग्रेनाइट की पटिया और एक गोल पत्थर लगा था। अंधेरा इतना घना था कि आगे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।
मोहम्मद बे ने निर्देश दिया, ‘डॉक्टर, समाधि के पत्थर पर माला डालिए
और अपनी भुजाएँ छाती पर बाँधकर कब्र के चरणों में खड़े हो जाइए। मैं बगल में खड़ा रहूँगा। अब, चाहे कुछ भी हो जाए, डरिए मत। मैं यहाँ हूँ; मुझ पर भरोसा रखिए। हमें आधी रात तक इंतजार करना होगा।’
कुछ मिनट बाद दूर से आती एक घड़ी की घंटी बजी और बारह बज गए। लेकिन मोहम्मद बे ने कुछ मिनट तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। फिर वह किसी ऐसी भाषा में कुछ बुदबुदाने लगे जिसे डॉक्टर समझ नहीं पाए, लेकिन उन्हें लगा कि वह अरबी है। शब्द लयबद्ध स्वर में निकल रहे थे और मिस्रवासी मानो समाधि में लीन थे।
यह सिलसिला कुछ देर तक चलता रहा, फिर अचानक कुछ गड़बड़ हो गई। मंत्रोच्चार अचानक रुक गया, और उसके बाद मिस्रवासी ने गुस्से में कुछ शब्द कहे, फिर कुछ देर रुककर और भी गुस्से भरे शब्द कहे। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी अदृश्य व्यक्ति से तीखी बहस कर रहा हो, जिसकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।
मिस्रवासी और भी उत्तेजित हो गया। उसने अपने हाथ हिलाए। ऐसा लग रहा
था मानो वह अपशब्दों का प्रयोग कर रहा हो। फिर उसने कब्र पर थूका। अगले ही पल वह ग्रेनाइट की शिला पर ऐसे गिर पड़ा जैसे किसी ने उसे कुल्हाड़ी से पटक दिया हो। धुंधली रोशनी में उसका शरीर कांप रहा था, और उसके गले से भयानक, घुरघुराहट की आवाजें आ रही थीं। डॉक्टर घबरा गया और भागने ही वाला था, उसके मन में बस यही ख्याल था कि किसी तरह अपनी जान बचाकर भाग जाए।
उस समय उनकी पेशेवर शिक्षा उनके काम आई। आखिर वे एक डॉक्टर थे। मिस्रवासी को मिर्गी का दौरा, दिल का दौरा या किसी अन्य प्रकार की बीमारी हो सकती थी। वहाँ रुकना उनका चिकित्सीय कर्तव्य था। साथ ही, यह भयावह विचार भी मन में आया कि अगर मिस्रवासी को अकेला छोड़ दिया गया तो उसकी मृत्यु हो सकती है। जब उसका शव मिला, और अगर कभी यह पता चला कि डॉक्टर कब्रिस्तान में उसके साथ थे, तो उन पर हत्या का आरोप लग सकता था।
इसलिए वह आगे दौड़ा, अपने साथी के शरीर को पकड़ा जो अभी भी छटपटा रहा
था और जिससे भयानक सिसकियां और कराहें निकल रही थीं, और उसे उठाने का प्रयास किया।
डॉक्टर ने कसम खाकर कहा कि उनका सामना एक ऐसी शक्ति से हुआ जो उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली थी और उस व्यक्ति को दबाए हुए थी। फिर संघर्ष हुआ और उसके बाद मिस्रवासी हांफते हुए बोला: 'गुलाबों की माला, मुझे दे दो।' डॉक्टर ने अपने साथी को छोड़ा, समाधि के पत्थर से माला उतारी और उसे ज़मीन पर गिरे हुए आदमी की ओर फेंक दिया। वह आदमी अभी भी मिर्गी के दौरे की तरह ग्रेनाइट की पटिया पर रेंग रहा था, तभी मोहम्मद बे ने माला को टुकड़े- टुकड़े कर दिया। और जैसे-जैसे माला बिखरती गई, ऐसा लगा मानो काला जादूगर स्थिति पर अपना नियंत्रण पा रहा हो।
अंततः वह खड़ा हुआ, उसके बाल बिखरे हुए थे और वह हांफ रहा था। उसके माथे पर एक गहरा घाव था, जहाँ उसका माथा ग्रेनाइट की पटिया से टकरा गया था, और वहाँ से खून बह रहा था।

‘अब सब ठीक है, डॉक्टर,’ उसने हांफते हुए कहा, ‘लेकिन चलिए यहां से चलते हैं। मैं आपको कार में बताऊंगा।’
दोनों आदमी जल्दी से कार की ओर भागे और डॉक्टर के घर की ओर वापस जाने लगे। कर्नल तब तक इंतजार करते रहे जब तक कि उनका साथी शांत नहीं हो गया। आखिरकार मिस्रवासी बोला।
‘आत्मा तो आ ही गई। वास्तव में, कई आत्माएँ थीं। लेकिन वे विचित्र रूपों में थीं, अजीब जानवरों जैसी दिखती थीं। उन सभी ने आपकी सेवा करने की पेशकश की। लेकिन मैंने ज़िद की कि केवल एक ही आत्मा हो, और वह भी मानव रूप धारण करे। उन्होंने इनकार कर दिया, और इस बात पर अड़े रहे कि सभी आपसे जुड़ जाएँ और अपने वर्तमान विचित्र रूपों में ही रहें। मैंने इसकी अनुमति नहीं दी। बहस हुई और अचानक उनके नेता ने मुझे नीचे गिरा दिया और वे सब मुझ पर टूट पड़े, मेरा गला घोंटने लगे। अगर आपने मुझे माला न फेंकी होती जिससे जादू टूटा, तो मैं मारा जाता।’
आप कहेंगे कि मिस्रवासी ने डॉक्टर को धोखा देने के लिए बड़ी चालाकी
से अभिनय किया। मकबरे के पत्थर से माथे पर लगा घाव तो निश्चित रूप से एक अनपेक्षित दुर्घटना थी। शायद वह खून नहीं था, बल्कि कुछ चुपके से लगाया गया था!
मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ, और यह एक तर्कसंगत स्पष्टीकरण भी है। लेकिन याद रखिए, उस मिस्रवासी ने अपने मित्र से कभी पैसे या कोई एहसान नहीं माँगा था। तो फिर उसने यह सब क्यों किया?
भारत के कई परिवार, विशेषकर पश्चिमी तट पर रहने वाले, मानते हैं कि उनकी रक्षा 'देवता' करते हैं। ये कोई बुरी आत्माएं, जिन्न या देवता नहीं हैं। इन्हें श्रेष्ठ आध्यात्मिक प्राणी माना जाता है। इनमें से प्रत्येक की पहचान एक विशेष सुगंधित फूल की खुशबू से होती है, जो कहीं से भी आती है। कुछ अपने साथ चमेली की खुशबू लाते हैं; यह बहुत आम है और मैंने स्वयं कई बार ऐसे कमरों और स्थानों में इसे सूंघा है जहाँ किसी भी प्रकार के फूल नहीं थे। कहा जाता है कि श्रेष्ठ प्राणी गुलाब या अन्य सुगंध लाते हैं। अमावस्या की रात—नए चाँद से पहले की रात, महीने की सबसे अँधेरी रात— काला जादू-टोना करने के लिए चुनी जाती है, और ऐसी ही रातों में कई भारतीय परिवार अपने संरक्षक आत्माओं की उपस्थिति को महसूस और सुनते हैं। ये आत्माएँ भारी जंजीर के घिसटने या खनकने की आवाज़ से, या स्त्री आत्मा के मामले में, कंगन के आपस में टकराने की हल्की आवाज़ से प्रकट होती हैं। मुख्य संरक्षक आत्मा घर में घूमते हुए व्यक्ति की तरह आवाज़ करके, बीच-बीच में अंगूठे को उंगलियों से चटकाकर, या फिर सधे हुए, भारी कदमों से अपनी उपस्थिति का संकेत देती है।
भारत में सभी धर्मों में आत्माओं के अस्तित्व और तंत्र-मंत्र में विश्वास समाहित हो गया है। मेरी राय में, सभी धर्म, अपने मूल रूप में, शुद्ध और दिव्य उत्पत्ति के थे: हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म, सभी सर्वोच्च सत्ता की ओर मार्ग प्रशस्त करते थे। लेकिन एक ओर पुरोहितवाद और दूसरी ओर अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र इन सिद्धांतों में इस कदर घुलमिल गए हैं कि इनके कई अनुयायी एक ऐसे धर्म का पालन करते हैं जो मूल धर्म के सिद्धांतों से बहुत भिन्न है, और कुछ मामलों में तो बिल्कुल विपरीत है।
भारत में कई ईसाई धर्मान्तरित लोगों, चाहे वे रोमन कैथोलिक हों या प्रोटेस्टेंट, की मान्यताएँ और प्रथाएँ वास्तव में धर्म, अंधविश्वास और

किया था कि अगर वह दिख भी जाए तो उसे गोली मारूँ या नहीं, क्योंकि मुझे अंदर से लग रहा था कि वह अपराधी नहीं है। वैसे भी, गर्मी का मौसम था, जिसे भारत में 'गर्म मौसम' के नाम से जाना जाता है, और पूर्णिमा आने में बस एक-दो दिन बाकी थे। चाँदनी और खुली हवा किसी छोटे से मिट्टी के घर में, जहाँ गर्मी असहनीय होती, या यहाँ तक कि वन विभाग के बंगले में रात बिताने से कहीं अधिक सुखद होती।
दोपहर के भोजन के बाद मैंने रात के लिए आवश्यक कुछ सामान इकट्ठा किया: मेरी राइफल, गोला-बारूद, चाय की थर्मस, पानी की बोतल, इलेक्ट्रिक टॉर्च और कुछ बिस्कुट एक कपड़े के थैले में रखे, जो कागज़ के रैपर की तरह चटकने वाला नहीं था, और पुराने मंदिर के लिए निकल पड़ा। एक घंटे से कुछ अधिक समय में मैं अपने गंतव्य पर पहुँच गया। मैं उस जगह को अच्छी तरह जानता था, हालाँकि मैंने वहाँ कभी रात नहीं बिताई थी। यह ग्रेनाइट के ठोस, अनियमित ब्लॉकों से बनी एक छोटी केंद्रीय संरचना थी, जिसके चारों ओर कभी एक काफी ऊँची पत्थर की दीवार हुआ करती थी। कुआँ, जो वास्तव में बहुत गहरा था, अभी भी पानी से भरा हुआ था और मंदिर के सामने वाले आँगन में था।
मुझे नहीं पता कि कुएँ में कितना पानी था, लेकिन सतह ज़मीन से बहुत नीचे चमक रही थी। कुआँ खुद पंद्रह फुट से ज़्यादा व्यास का नहीं था, जिसके ऊपर लगभग एक गज ऊँची पत्थर की एक नीची दीवार बनी हुई थी। मंदिर के मुख्य भाग, आँगन की चारों दीवारों और कुएँ की दीवार को बनाने वाले कई ग्रेनाइट के पत्थर ढीले होकर अपनी जगह से गिर गए थे, जबकि टेढ़े-मेढ़े या बौने पेड़, मुख्य रूप से जंगली अंजीर, उन सभी जगहों पर जड़ पकड़ चुके थे जहाँ लैंटाना झाड़ी ने पहले से ही अपना कब्ज़ा नहीं जमा रखा था। कुल मिलाकर दृश्य उजाड़ और उदास था, और यह स्पष्ट था कि समय के साथ मंदिर और उसके आसपास के बचे-खुचे अवशेष बढ़ते जंगल में समा जाएँगे।
लेकिन उस समय मुझे मंदिर में, चाहे वह ऐतिहासिक हो या कुछ और, कोई दिलचस्पी नहीं थी। मेरी दिलचस्पी बाघ के छिपने की जगह में थी, और उसे ढूंढने में मुझे ज्यादा समय नहीं लगा। एकमात्र संभावित जगह मंदिर की मुख्य इमारत ही थी। ज़मीन अधिकतर सख्त थी, लेकिन कहीं-कहीं रेतीले हिस्से थे और नरम ज़मीन पर, आते-जाते, एक बड़े बाघ के पदचिह्न स्पष्ट रूप से छपे हुए थे, जो पुराने खंडहरों की ओर जाते और आते थे।
मुझे पता था कि अगर वह जानवर उस समय घर पर होता तो शायद अंदर गहरी नींद में सो रहा होता। मैं खुद कभी इस इमारत के अंदर नहीं गया था, लेकिन मेरा अनुमान था कि यह आम तौर पर ऐसी ही इमारतों की तरह ही बनी होगी, जिसमें मंदिर के इकलौते प्रार्थना कक्ष के आखिरी छोर पर एक छोटा सा अलग कमरा होगा। इस छोटे से कमरे में एक या दो नंदी की मूर्तियाँ, भारत में हिंदुओं द्वारा सार्वभौमिक रूप से पूजे जाने वाले पवित्र बैल की अलग-अलग आकार की पत्थर की मूर्तियाँ, या शायद कई देवी-देवताओं की एक या कई मूर्तियाँ रखी होंगी।
इन परिस्थितियों में, इस अवसर का लाभ उठाना आपदा को न्योता देने जैसा होता। अगर बाघ अपने घर में होता, चाहे वह आदमखोर हो या नहीं, तो वह अपनी निजता के इस खुले उल्लंघन को निश्चित रूप से नापसंद करता और शायद घुसपैठिए से तुरंत छुटकारा पाने का फैसला करता। यह उन अवसरों में से एक था जब शारीरिक बल की बजाय बुद्धि का प्रयोग करना अधिक उचित था, इसलिए मैं स्थिति का जायजा लेने और एक योजना बनाने के लिए वहीं रुका रहा।

xx xxx xxxxx xx xxx xx xx xxx, xxxxxxx xxx, xxxxxx xxxxx xxx, xxxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxx xxxxx xx!

xx xxxxxxx xx xx xxx xxxxx xxxxxxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxx, xxxxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxx xxxxx, xx xx xxxxx xxx xxx xxx xxx xx, xxxxxx xxx xxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxx xx xxxxx xx xxxxxxx xxx xx xxx xxxxx xx, xx xx xxx xx xx xxx xx xxxxxx xx, xx xxxxx xxxxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xxx xx xxx, xxxxxx xxx, xx xxx xxx xxxxxxxx xxxxxx xxx, xxxxxx xxxxxx xxxxx-xxxxx xxxxxx xxx

xxxxxx xxxxx, xx xx xxxxx xxx xx xx xxxxx xx xxxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx, xxxxxxxxxx, xxxxxx xx xx xxx xxxxx xxx xxxxxx, xx xxx xxxxx xxxxxxxxxx xx xxxxxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxx! xxx xxxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xx, xx xxxxx xxxxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxx xx xx xxx xxxxx xxx xxxxx xx, xx xxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx

xxx xx xxx xx xxxxxx xxx xx xxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxx xxx xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxx, xxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xx xxx xxxxx xxx xxxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxx x xxx

xxx xx xxx xxxxx xxx xxxxx xxx, xxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxx xxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxxx, xxxxxx xxx xxxxx xx xxxxx, xxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xxx, xxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx

xx xxxxxx xx xxxxx, xxxxx xxxxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxxx, xx xx xx xx, xx xx xxx xx xx xxxxxx xx xxx xx xx xx-xx xx xxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxx, xxx xx xx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xx xxx xxx xxx xxxxxxxx xxxxx, xx xxx xxxxx xx xx xxxxx, xxxxx, xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxxx

xxxxxxx xxx xx xxx xx xx xxx xx xxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxx xxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxx, xxxxxx xxx xx xxxxx xx, xxxxxx xxxxx xxx xxxxxxxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xx: xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx

xxx xx xx xxxxx xxxxxx xx xx; xx xxxxx xx, xxxxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxxx? xxxxx xxxxx xxxxxxxxxxx xx xxx xxxxx xxxxxxx xx? xxxxxx x xxxxx xxx xxx xxxxx xx xx xxx xxx xxxxx?

xxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxx xx xx xx xxx xxxxx xx xxxxx xx xx xxxxx xx xxx xxxxxxx xx xxx xx xxxxx xxx xxx xx, xx xxx xx xxxxx xx xxxxxxxx xxxxxx xx xxx xxx xxx xxx xx xxxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxxx xxx xx, xx xx xx xx xxx xxxxx xxx xxx xxxxxx xxx xx xxx xx xxxxx xxx xx xxxxx xxx xx xxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxx xxx

xxx xxx, xx xxx, xx xx xx xx xxxxx xx xxxxxxxxx xx xxx xx, xxx xxxxx xxxxx xxx xx xx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxx, xx xx xx xxx xxxxx xx xxx xxx xxx x xxxxx xxxxxx, xxx xxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxxxx xxxxxx xxxxxx, xx

मुझे शायद काफी देर तक इंतजार करना पड़ता। लेकिन किसी तरह मेरा मन उस बाघ को गोली मारने का नहीं कर रहा था; कुएँ से निकली वह अजीब सी सीटी और उससे भी अजीब सी परछाई मुझे कहीं ज्यादा आकर्षित कर रही थी। वैसे भी, चांदनी रात में खुली हवा में वहाँ बैठना, संपिगेहल्ली में चार मील दूर स्थित उस घुटन भरे आश्रय में रहने से कहीं बेहतर था।
मैं सीटी की आवाज़ और परछाई के अलावा सब कुछ भूल गया और यह सोचने लगा
कि आखिर मैंने जो देखा था, उसका कारण क्या हो सकता है। सीटी की आवाज़ किसी ऐसे पक्षी की आवाज़ जैसी नहीं थी जिसे मैं जानता था। बल्कि, वह साफ तौर पर किसी इंसान की आवाज़ जैसी थी। पंखों की फड़फड़ाहट जो मैंने सुनी थी, वह किसी बड़े पक्षी या उस भारतीय उड़ने वाली लोमड़ी की हो सकती थी जिसका मैंने पहले ज़िक्र किया है। लेकिन न तो कोई पक्षी निकला और न ही कोई चमगादड़, और मैंने एक पल के लिए भी अपनी नज़र उसके मुँह से नहीं हटाई। जो निकला वह बिल्कुल अलग और अप्रत्याशित था: एक धुंधली सी आकृति, जिसका स्वरूप समझ से परे था। सीधे शब्दों में कहें तो, एक छोटा सा बादल। और वह बादल मेरी आँखों के सामने गायब हो गया!
मैं समस्या में इतना मग्न था कि मुझे समय का बिल्कुल भी एहसास नहीं हुआ और मैं अपने आसपास की चीजों से बेखबर हो गया। तभी मेरे पीछे से आती एक धीमी सी गुर्राहट ने मुझे झटके से होश में ला दिया। बाघ वहाँ खड़ा था! वह दूसरी दिशा से लौट आया था और मेरी मौजूदगी का पता लगा चुका था। वह आदमखोर बाघ के रूप में जाना जाता था, जिसने पहले ही दो आदमियों को मारकर खा लिया था।
मैं घबराकर पीछे मुड़ा और सहज ही अपनी.405 पिस्तौल कंधे पर रख ली। करीब चालीस गज दूर चांदनी में एक बाघ अपने पिछले पैरों पर बैठा था और मुझे घूर रहा था। फिर उसने अपना सिर थोड़ा झुकाया और हल्की सी गुर्राहट के साथ विरोध जताया। मानो शब्द बोलकर ही कह रहा हो, वह जानवर कह रहा था, 'क्या तुम यहाँ से दफ़ा नहीं हो सकते?' इससे मुझे पूरी तरह तसल्ली हो गई। मैं उसकी दया पर था और मुझे पता चलने से पहले ही मार सकता था। यह बाघ आदमखोर नहीं था! जब कोई मेरे साथ अच्छा व्यवहार करता है तो मैं हमेशा आभारी रहने की कोशिश करता हूँ, और इस जानवर के प्रति भी मैं निश्चित रूप से आभारी था। इसने मेरी जान बचाई थी और मैं भी इसका एहसान चुकाना चाहता था। मैं खड़ा हुआ, और देखते ही देखते बाघ मेरी नज़रों से ओझल हो गया।
जानवर के अचानक मन बदलने की आशंका से बचने के लिए राइफल को अपनी कोहनी में दबाकर, मैंने टॉर्च की रोशनी कुएँ में डाली, यह उम्मीद करते हुए कि वहाँ कोई रहस्यमयी बाघ छिपा होगा। लेकिन गहराई में केवल पानी ही रोशनी को प्रतिबिंबित कर रहा था। वहाँ कोई भी नहीं छिपा था, क्योंकि मैंने कुएँ के हर कोने की तलाशी ले ली थी। फिर मैं मुड़ा और गुस्से में सोचते हुए वहाँ से जाने लगा। बाघ कहीं नज़र नहीं आ रहा था।
मैंने उस रात का बाकी समय वन विश्राम गृह के बरामदे में बिताने का फैसला किया, इसलिए मैं गाँव से लगभग एक मील दूर बने छोटे बंगले तक गया और अंदर सो रहे चौकीदार को ज़ोर से आवाज़ दी। बार-बार आवाज़ देने पर भी किसी ने जवाब नहीं दिया। ज़ाहिर है, चौकीदार ड्यूटी पर नहीं था, बल्कि गाँव की किसी झोपड़ी में आराम से सो रहा था।
यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। भारत में रहने वाले लोग जानते हैं कि चौकीदार आमतौर पर पहरा नहीं देते। वे इसके बजाय चैन से सोते हैं; शायद आपसे

या मुझसे भी ज़्यादा चैन से, क्योंकि उनके मन में यह बात बिल्कुल स्पष्ट होती है कि रात का समय सोने का होता है।
इसलिए मैं उस पत्थर पर चढ़ गया जो छोटे आयताकार बंगले के तीन तरफ फैले बरामदे तक जाता था। रखवाले ने लापरवाही से एक कुर्सी बरामदे के एक हिस्से में छोड़ दी थी, यह जानते हुए कि इतनी सुनसान जगह में कोई चोर भी होता तो ऐसी जर्जर चीज को कोई नहीं चुराएगा; इसलिए मैं उस कुर्सी पर लेट गया और कुछ घंटों की नींद लेने की कोशिश की।
मेरा इरादा अगली सुबह संपिगेहल्ली में अपने दोस्तों को यह बताने का
था कि मुझे पूरा यकीन है कि बाघ आदमखोर नहीं था, और अगर वे वाकई लापता लोगों का रहस्य सुलझाना चाहते हैं, तो उन्हें पुलिस को उस दुबली-पतली लड़की से पूछताछ करने का सुझाव देना चाहिए जो उन दोनों से बहुत करीब से जुड़ी हुई थी; खासकर यह पता लगाने के लिए कि उनके पैसे का क्या हुआ। फिर मैं स्टुडेबेकर कार में बैठकर घर के लिए निकल जाता।
लेकिन उस रात मुझे नींद नहीं आई। वे रहस्यमयी सीटियाँ, पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़, मुझ पर छाई अजीब सी सुस्ती, और सबसे बढ़कर कुएँ से निकली वह अजीब सी धुंधली आकृति, एक तर्कसंगत व्याख्या की माँग कर रही थी। इस समस्या से जूझते हुए, थककर, आखिरकार प्रकृति ने अपना काम किया और भोर होने के बाद मैं सो गया। उस सुबह जब मैं उठा तो काफी देर हो चुकी थी, लेकिन बंगले का रखवाला अभी तक नहीं लौटा था।
मैं गाँव गया, जहाँ मैंने अपने दोस्तों को बताया कि मैंने बाघ को देखा
था और बाघ ने भी मुझे देख लिया था। मैंने उन्हें समझाया कि वह आदमखोर नहीं था। मैंने उन्हें सीटी जैसी आवाज़ों के बारे में नहीं बताया जो मैंने सुनी थीं और न ही उस धुंधली आकृति के बारे में जो मैंने देखी थी, क्योंकि अपनी कहानी को बेवजह जटिल बनाने और खुद को हास्यास्पद साबित करने का कोई फायदा नहीं था।
फिर मेरे एक दोस्त ने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ छिपा था, और मैंने उसे बताया कि मैं पुराने कुएँ की मुंडेर के पीछे छिपा था। यह सुनकर उसने मुझे अजीब नज़रों से देखा।
उसने पूछा, ‘क्या तुमने बाघ के अलावा कुछ और देखा? क्या तुमने कुछ सुना?’
मैंने कुछ देर तक कोई जवाब नहीं दिया। फिर मैंने पलटकर पूछा, 'आप क्यों पूछ रहे हैं?'
‘क्या आपने कोई विशाल चमगादड़ देखा या सुना? उसके पंखों के फड़फड़ाने
की आवाज़?’
पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़! मैंने वह आवाज़ ज़रूर सुनी थी: कुएँ की गहराई से आती भारी, फड़फड़ाती पंखों की आवाज़। दरअसल, मैंने वह आवाज़ कई बार सुनी थी, हर बार वह आवाज़ ऊपर आती और कुएँ के मुँह के करीब पहुँचती जा रही थी, और वह आवाज़ तभी बंद हुई जब वह अजीब सी धुएँ जैसी आकृति बाहर निकली। कितनी बड़ी मूर्खता थी मेरी कि मैंने पहली बार आवाज़ सुनते ही अपनी टॉर्च की रोशनी कुएँ में नहीं डाली! शायद मुझे कुछ दिखाई देता। फिर मुझे याद आया कि मैं बाघ का इंतज़ार कर रहा था, इसलिए खुद को दिखाना नहीं चाहता था।
मेरे दोस्त ने मेरे जवाब में देरी को भांप लिया था। उसके चेहरे पर एक समझदारी भरी मुस्कान आ गई। इसलिए मैंने उसे सब कुछ बता दिया।

जब मैंने कुएँ से निकले उस धुंधले रूप का जिक्र किया तो वह भयभीत हो गया। जाहिर है, दूसरों ने सीटी और पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी थी, लेकिन किसी ने कुछ देखा नहीं था, क्योंकि किसी ने देखने के लिए इंतजार ही नहीं किया था।
फिर मेरे मित्र ने एक विचित्र कहानी सुनाई। उसके अनुसार, कुछ सौ या उससे भी अधिक वर्ष पहले—उसे ठीक-ठीक समय नहीं पता था—मंदिर फलता-फूलता था और व्यापक श्रद्धा का केंद्र था, जबकि आसपास के क्षेत्र पर एक छोटे से सरदार का शासन था जिसने दूर स्थित राजधानी वाले राजा से स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर लिया था। इस छोटे से सरदार के दरबार में एक ऐसा व्यक्ति था जो सलाहकार और मसखरे दोनों की भूमिका निभाता था, और जिसके प्रति सरदार का स्पष्ट रूप से बहुत सम्मान था।
मंदिर का संचालन कई पुजारियों के हाथों में था—सभी ब्राह्मण—जिनका नेतृत्व एक प्रखर चरित्र वाले प्रधान पुजारी द्वारा किया जाता था। जैसा कि अक्सर होता है जब प्रखर बुद्धि वाले लोग एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, प्रधान पुजारी, उसके सलाहकार विदूषक और ब्राह्मण प्रधान पुजारी के बीच हितों का टकराव हुआ।
बेशक, सारी बातें बहुत पहले भुला दी गई थीं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था
कि प्रधान पुजारी ने अपने प्रतिद्वंद्वी, विदूषक के विरुद्ध झूठे आरोप लगाकर उसे राजपरिवार के प्रति विश्वासघात का दोषी ठहराया था। नतीजा यह हुआ कि उस दुर्भाग्यशाली सलाहकार पर सार्वजनिक रूप से मुकदमा चलाया गया, राजद्रोह के आरोप में उसे मृत्युदंड दिया गया और तुरंत ही उसे जिंदा ही कुएँ में फेंक दिया गया, लेकिन मरने से पहले उसने प्रधान पुजारी और मंदिर के सभी भिक्षुओं से बदला लेने की धमकी दी थी।
इस कहानी का अगला भाग यह था कि एक सप्ताह के भीतर ही प्रधान पुजारी लापता हो गया, और कुछ दिनों बाद उसका शव कुएँ में तैरता हुआ मिला। विदूषक ने अपना पहला शिकार बना लिया था। इसके बाद, कुछ अंतरालों पर, अन्य पुजारी एक-एक करके गायब हो गए, और उनके शव भी प्रधान पुजारी की तरह कुएँ में औंधे मुँह तैरते हुए पाए जाते थे। अन्य पुजारी मंदिर में आए, लेकिन उन सभी का भी वही हश्र हुआ।
समय-समय पर प्रतिशोधी विदूषक की आत्मा को भगाने के लिए भव्य समारोह आयोजित किए जाते थे, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि धीरे-धीरे एक के बाद एक पुजारी गायब होते चले गए और बाद में उनका डूबा हुआ शरीर कुएं के पानी की सतह पर तैरता हुआ मिला। विदूषक की प्रतिशोधी आत्मा को अपना कार्य पूरा करने में शायद सौ साल लग गए, लेकिन वह समय आ गया जब कोई भी पुजारी, चाहे वह कितना भी पवित्र क्यों न हो या दिखने में पवित्र क्यों न हो, मंदिर में पूजा-पाठ करने के लिए स्वेच्छा से अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार नहीं था। और इसी तरह मंदिर और कुआं वीरान हो गए और अंततः खंडहर में तब्दील हो गए।
कथावाचक ने अपनी विचित्र कहानी का समापन एक अत्यंत महत्वपूर्ण वाक्य
से किया: 'महोदय, अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझिए कि आप आज सुबह जीवित हैं। वह दुष्ट आत्मा आपको आसानी से कुएँ में फेंक सकती थी, ठीक वैसे ही जैसे उसने अतीत में कम से कम सौ पुजारियों को नष्ट कर दिया है!'
क्योंकि मैं ब्राह्मण पुजारी नहीं हूँ, इसलिए मैंने व्यंग्यपूर्वक जवाब दिया और कहा, 'बिल्कुल बकवास! धिक्कार है!' ये शब्द मेरे मुँह से उग्रता और गुस्से से निकले। सच कहूँ तो, मैं बहुत नाराज़ था! क्या इस मूर्ख

को लगता था कि वह मुझे इन पुरानी कहानियों से डरा सकता है? मुझे डर है कि अगले कुछ मिनटों तक मैं अपने उस बेचारे परिचित के प्रति बहुत असभ्य रहा, क्योंकि मैंने उसे साफ-साफ बता दिया कि मुझे उसकी कहानी और उसे सुनाने के उसके तरीके के बारे में क्या लगा।
बेचारे का चेहरा उतर गया और वह शर्मिंदा होकर चला गया। मैं निडर होकर उसके पीछे-पीछे घूरता रहा। फिर मैंने घर लौटने की तैयारी में स्टुडेबेकर कार में सामान पैक करना शुरू किया, जिसमें मुझे ज्यादा समय नहीं लगा। मैंने अपने दोस्तों को आधे मन से और कुछ अचानक ही अलविदा कहा, क्योंकि मैंने देखा कि जिस आदमी ने मुझे मंदिर के बारे में बताया था, वह उनमें नहीं था। भारतीय लोगों के हमेशा की तरह मेहमाननवाज़ी करते हुए, उन्होंने आखिरी क्षण तक भी मुझसे रुकने का आग्रह किया। जवाब में मैंने सेल्फ-स्टार्टर दबाया, कार को गियर में डाला और चला गया।
संपिगेहल्ली से लगभग छह मील का सफर तय करने के बाद मैंने अपनी स्टुडेबेकर कार रोकी, इंजन बंद किया और सोचने लगा। मैंने बेवजह ही बदतमीज़ी की थी। आखिर उस आदमी ने तो मुझे कहानी सिर्फ इसलिए सुनाई थी क्योंकि उसने दूसरों से सुनी थी। सीटी की आवाज़ मैंने सुनी थी, पंखों की फड़फड़ाहट मैंने सुनी थी और वह अजीब सी परछाई मैंने ही देखी थी। अब यह मुझ पर था कि मैं उस कहानी पर विश्वास करूं या अगर मुझे कोई बेहतर स्पष्टीकरण मिल जाए तो उसे नकार दूं। मेरे लिए सबसे समझदारी की बात यह होती कि मैं इस मामले की और जांच-पड़ताल करने के लिए और लोगों से बात करूं। सबसे समझदारी की बात तो यह होती कि मैं कुएं पर एक और रात बिताऊं और देखूं कि क्या वह घटना दोबारा दोहराई जाती है। इन दोनों में से कुछ भी करने के बजाय, मैंने एक बच्चे की तरह व्यवहार किया और गुस्से में वहां से चला गया।
इसलिए मैंने गाड़ी मोड़ी और वापस गाँव की ओर चल दिया, जहाँ पहुँचते ही मैंने सबसे पहले अपने दोस्त से माफी माँगी। उसने मुझे तुरंत माफ कर दिया और कहा कि वह मेरी भावनाओं को समझता है, और फिर से मुस्कुराने लगा। दरअसल, मेरे लौटने पर सभी मुस्कुरा रहे थे, जब तक कि मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि इस बार मैं बाघ का शिकार करने नहीं, बल्कि भूत का शिकार करने आया हूँ— पुराने मंदिर के कुएँ में रहने वाली बुरी आत्मा का।
ये शब्द सुनकर सबकी मुस्कान गायब हो गई। फिर मेरे दोस्त ने कहा: ‘सर, मैं असभ्य नहीं होना चाहता, लेकिन कृपया इस मूर्खतापूर्ण काम को करने के बजाय तुरंत बैंगलोर वापस चले जाइए। आप शेर से तो बच सकते हैं, लेकिन शैतान से नहीं।’
उस शाम, बाघ से डरने की कोई बात न होने के कारण, मैं पुराने मंदिर में उतनी जल्दी नहीं गया जितना पिछली दोपहर गया था। लगभग छह बज रहे थे जब मैं कुएँ की मुंडेर के पीछे उस जगह पर बैठ गया जहाँ मैं पहले बैठा था। मैं अपने साथ राइफल लाया था, इस डर से कि कहीं बाघ मुश्किल न हो जाए, लेकिन इस बार चुप रहने की कोई खास ज़रूरत नहीं थी, इसलिए मैंने अपने लिए चाय का एक बड़ा थर्मस, रोटी, मक्खन, डिब्बाबंद मटन और कुछ संतरे भी रख लिए थे, और अपनी पुरानी पाइप तो थी ही।
जैसे ही मैं जल्दी से जल्दी और आराम से अपनी पुरानी जगह पर बैठा, टॉर्च, फ्लास्क, पानी की बोतल और अन्य सामान अपने दाएं-बाएं समेटते हुए, बाघ का कोई निशान नहीं दिखा। शायद वह मेरे आने से पहले मंदिर के पवित्रतम स्थान में अपने छिपने की जगह से बाहर आ गया हो, हालांकि मुझे ऐसा होने की संभावना कम ही लगती थी। मेरा यह अनुमान सही साबित हुआ। समय सात बजकर कुछ

और मुझे उस अजीब सी उदासीनता और सुस्ती का एहसास याद आया जो मुझ पर हावी हो गई थी जब भाप ने मुझे घेर लिया और मेरे सिर के ऊपर से गुज़र गई: निराशा का एहसास, और कुएँ में कूदकर अपनी सारी परेशानियों को खत्म करने का सुकून देने वाला प्रलोभन। दरअसल, मैं खुद भी उस सदियों पुराने अभिशाप का शिकार होने ही वाला था। यह जानकर मुझे ज़बरदस्त झटका लगा, मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ, कि कुछ ही पल पहले मैं निर्दयता से आत्महत्या के बारे में सोच रहा था।
फिर इस घटना के कुछ ऐसे पहलू भी थे जिनकी व्याख्या करना असंभव था। एक
के बाद एक तीन अजीब सी सीटियाँ; पंखों के फड़फड़ाने की अनसुनी आवाज़; यह तथ्य कि बाघ इन आवाज़ों को नहीं सुन सका; और सबसे अजीब बात यह थी कि कुएँ से निकली वह विचित्र वस्तु, या जो भी चीज़ थी, एक काले बादल के रूप में प्रकट हुई।
मैं दूसरी बार जंगल में बने बंगले की ओर वापस चला गया, उस जर्जर पुरानी कुर्सी में सुकून पाने के लिए, पहले से कहीं अधिक उलझन में, मन में अधिक व्याकुल और स्वयं से अधिक असंतुष्ट।
अगले दिन सुबह, अपने गाँव के दोस्तों को अपने नए कारनामे के बारे में बताने के बाद, मैं इसी मनोस्थिति में संपिगेहल्ली से रवाना हुआ। उन सभी ने, बिना किसी अपवाद के, सिर हिलाकर सहमति जताई और अलग-अलग लहजों में एक ही बात दोहराई, 'हमने तो पहले ही कहा था।' जिस व्यक्ति ने मुझे कल नाराज़ किया था, उसने प्रसन्नता से कहा, 'कल तो तुम मुझसे नाराज़ थे। आज तो तुम सचमुच भाग्यशाली हो कि ज़िंदा हो। भाग्य ने तुम्हें दूसरी बार उस कुएँ में डूबने वालों में शामिल होने से बचा लिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि तुम्हारा समय अभी नहीं आया था। लेकिन वहाँ तीसरी रात मत रुकना, महोदय। वरना शायद तुम्हारा समय आ जाए और तुम ज़रूर कुएँ में कूद जाओगे।'
मैं उससे बहस कर सकता था और यह बता सकता था कि, यदि वास्तव में तीसरी
रात को कुएं में कूदना ही मेरी नियति थी, तो मुझे संपिगेहल्ली में ही रहना पड़ता, चाहे वह, मैं या कोई और मुझे वहां से जाने के लिए कहे या न चाहे।

* देखें: नरभक्षी की पुकार।
* देखें: बाघ की दहाड़।
* देखें: नरभक्षी की पुकार।

छह

गेरहेटी तेंदुए का विचित्र मामला

गेरहेट्टी एक छोटा सा गांव है जिसमें एक दर्जन से भी कम झोपड़ियां हैं, जो मद्रास राज्य के सलेम जिले में स्थित पेनग्राम के बड़े गांव की ओर एंचेट्टी से लगभग दक्षिण दिशा में जाने वाले वन मार्ग से लगभग एक मील की दूरी पर स्थित है।
यह एंचेटी से केवल सात मील दूर है, लेकिन गेरहेटी पहुँचने के लिए आपकी कार को लगभग असंभव कोण पर घुमावदार रास्ते से नीचे उतरना पड़ता है, जो बेहतरीन ब्रेकिंग सिस्टम पर भी भारी दबाव डालता है, फिर दो बेहद पथरीले नदी-नालों को पार करना पड़ता है जिनमें साल के नौ महीने से ज़्यादा समय तक पानी नहीं रहता, और फिर उतनी ही घुमावदार और असंभव ढलान पर चढ़ना पड़ता है। पुराने ज़माने में, जब मेरे पास मॉडल टी फोर्ड कारें हुआ करती थीं, यानी मेरे बचपन के दिनों में, मुझे अपनी प्यारी 'लिस्सोम लिज़ी' के स्टीयरिंग व्हील पर बैठकर, जिसका नाम उसके पीछे बड़े अक्षरों में लिखा होता था, उसे नियंत्रित करने वाले तीन पैडलों में से बाएँ पैडल को ज़ोर से दबाकर, और लाल-गरम इंजन और उबलते रेडिएटर से निकलते भाप के बादलों के बीच शिखर पर पहुँचने में बचकाना और बेहद आनंद आता था।
एक बार लिज़म लिज़ी उस ढलान पर आधी चढ़ाई चढ़ गई, लेकिन उससे आगे नहीं चढ़ सकी। मैं गेरहेट्टी से बारह मील आगे मुत्तूर के वन लॉज जा रहा था, जहाँ

मैंने अपने आदिवासी पुजारी मित्र बायरा से चिन्नार नदी के किनारे स्थित वन विभाग के कुएँ में फँसे एक मगरमच्छ को पकड़ने में मदद करने की व्यवस्था की थी, और मुझे वह मुलाकात पूरी करनी थी। मैं क्या करता? हेनरी फोर्ड और मॉडल टी की अद्भुत अनुकूलन क्षमता की जय हो! मैंने कार को घुमाया, अपने दाहिनी ओर के हैंड-लीवर को न्यूट्रल स्थिति में रखा, तीन पैडलों में से बीच वाले पैडल (जो मॉडल टी में रिवर्स पैडल था) को दबाया और उस भयानक ढलान पर आसानी से पीछे की ओर चढ़ गया! कार और मेरी गर्दन दोनों पर ज़ोर पड़ा, लेकिन हम पहुँच गए।
ढलान के शिखर पर पहुँचने के लगभग एक मील बाद, एक संकरा रास्ता दाईं ओर मुड़ता है, जिसके दोनों ओर घना जंगल है। इस रास्ते पर एक और मील चलने पर दाईं ओर एक पानी का कुंड मिलता है, जो बाईं ओर गेरहेट्टी फ़ॉरेस्ट लॉज की ओर जाने वाले रास्ते के ठीक सामने है। यह एक छोटा सा प्यारा बंगला है, जिसमें उन दिनों बस एक ही कमी थी। यह हमेशा बंद रहता था, क्योंकि देखभाल करने वाला, जो लापरवाह और बेपरवाह था और जिसे किसी बात की परवाह नहीं थी, छुट्टी पर गया रहता था, कभी-कभी एंचेट्टी में, लेकिन ज़्यादातर पेनाग्राम में, जो कि मिट्टी के मामले में गरीब होने के बावजूद लड़कियों से भरपूर था। और यहीं से एक कहानी शुरू होती है।
पुराने ब्रिटिश काल में, इस क्षेत्र के प्रभारी एक ज़िला वन अधिकारी (डी.एफ.ओ.) थे, जो पुराने ज़माने के थे। उनका नाम थोड़ा अटपटा था, वे नियमों के पक्के थे, और मुझे बिल्कुल पसंद नहीं करते थे। उनकी इस नापसंदगी का कारण मैं कभी समझ नहीं पाया। शायद उन्हें यह बात पसंद नहीं थी कि मैं उनके अधिकार क्षेत्र में आने वाले जंगलों में ऐसे घूमता था जैसे वे मेरे अपने हों, और जब कभी दुर्भाग्यवश मुझे उनसे बात करने का मौका मिला, तो उन्होंने अपनी नफ़रत इस तरह दिखाई जैसे मैं कोई ऐसी चीज़ हूँ जिसे बिल्ली ने दरवाज़े पर छोड़ दिया हो। इस सज्जन का यही कहना था कि उनके क्षेत्र में वन विभाग के किसी भी बंगले में रहने से पहले मुझे उनकी अनुमति लेनी होगी और वह लिखित में प्राप्त करनी होगी। वास्तव में, यही नियम था और आज भी है। लेकिन भारत में रहने वाले किसी भी व्यक्ति से पूछिए, वह मुझसे सहमत होगा कि नियम तो तोड़ने के लिए ही बनाए जाते हैं। हर कोई उन्हें तोड़ता है और इस प्रक्रिया का आनंद लेता है। नियम जितना सख्त होता है, उसे तोड़ने की संभावना उतनी ही अधिक होती है। कम से कम, भारत में तो ऐसा ही लगता है। और अगर ऐसा है, तो मैं क्यों नहीं?
हालांकि, इस व्यक्ति से बेवजह उलझने से बचने के लिए, मैंने एक बार उसे पूरे एक महीने पहले सूचना दे दी थी और गेरहेट्टी फॉरेस्ट लॉज में रहने की अनुमति मांगी थी। चूंकि मेरे पास उस क्षेत्र का शिकार लाइसेंस था, इसलिए वह मना नहीं कर सकता था। समय आने पर उसने लिखित अनुमति दे दी, लेकिन साथ ही एक लंबा-चौड़ा पैराग्राफ भी लिखा था जिसमें मुझे चेतावनी दी गई थी कि मैं किसी भी तरह से नियमों और विनियमों का उल्लंघन न करूं, माचिस फेंककर जंगल में आग न लगाऊं, जितने दिन मैं लॉज में रहूं उतने दिनों का किराया अवश्य दूं, इत्यादि।
आखिरकार वो खुशनुमा दिन आ ही गया और मैं अपनी मॉडल टी कार में गेरहेट्टी के लिए निकल पड़ा। सौभाग्य से, मैं घाट की चोटी पर पहुँचते ही था कि मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। मॉडल टी कारें कभी खराब मौसम की परवाह नहीं करतीं, और इतनी मजबूत पुरानी गाड़ी को रोकने के लिए बारिश की बूँदें काफी

ज़ाहिर है, वो सामान लापरवाह लेकिन चालाक चौकीदार ने या फिर खुद रक्षा अधिकारी के आदेश पर मुझे फंसाने के लिए हटा दिया था। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि कोई अंग्रेज़ अधिकारी ऐसा काम करेगा, चाहे वो मुझे कितना भी नापसंद करता हो। तो ज़ाहिर है, कसूरवार वही चौकीदार था। उसने ये सब मुझसे बदला लेने के लिए किया था, जब उससे उसकी गैरमौजूदगी के बारे में पूछा गया था, जैसा कि मैंने बताया था। लेकिन सामान कहाँ गया? उसने उन्हें बेचने की कोशिश तो नहीं की होगी, क्योंकि इससे सबूत मिल जाता। तो उसने उन्हें ज़रूर छिपाया होगा।
स्पष्ट उत्तर यही था कि उसने उन्हें अपनी प्रेमिका के घर में छिपा रखा था। इसलिए मैं पेन्नाग्राम के लिए निकल पड़ा और आधी रात के बाद पहुँचा, जब सब सो रहे थे। मैंने अपने साथी रंगा को जगाया, उसे सारी बात बताई और पूछा कि हमें तलाशी कहाँ से शुरू करनी चाहिए। यह सवाल भी उठा कि चौकीदार बारह मील दूर गेरहेट्टी से पेन्नाग्राम तक उन दो भारी वस्तुओं को कैसे लाया होगा। रंगा ने बिना झिझक के जवाब दिया। कटे हुए बांसों से लदी बैलगाड़ी में!
गेरहेट्टी के आसपास के जंगल से लगातार बांस पेन्नागरम की ओर बहते रहते थे, जहाँ वन विभाग का एक लकड़ी का गोदाम था। वन विभाग में एक अधिकारी होने के नाते, भले ही उनका पद छोटा ही क्यों न हो, इस चौकीदार के लिए एक-दो गाड़ीवालों को मनाना आसान था कि वे बांसों के नीचे छिपाकर रखी गई इन वस्तुओं को गाड़ी में पेन्नागरम तक पहुँचा दें।
सौभाग्य से, रंगा, जो स्वयं कभी गाड़ीवान रह चुका था, अपने साथियों से अच्छी तरह परिचित था। समय काफी ढल चुका था, फिर भी वह शहर में मौजूद लोगों से पूछताछ करने के लिए निकल पड़ा और सुबह 4 बजे लौटकर मुझे खुशखबरी दी कि उसने न केवल दो गाड़ीवानों को ढूंढ निकाला है, जिनमें से प्रत्येक अपने वाहन में एक-एक वस्तु लाया था, बल्कि उसे यह भी पता चल गया है कि वे वस्तुएं कहां छिपाई गई थीं।
किसी पुलिस स्टेशन में आराम से सो रहे अकेले संतरी को जगाने का यह बहुत ही असमय समय था, लेकिन हमने थोड़ी देर बाद ठीक यही किया। कांस्टेबल बहुत नाराज़ था। इतना ही नहीं, अकेले चौकीदार होने का दावा करते हुए उसने कहा कि वह अपनी चौकी नहीं छोड़ सकता। लेकिन कुछ बातचीत के बाद उसका मन शांत हो गया। हमें थाने का ज़िम्मा सौंपकर वह पुलिस चौकी की ओर तेज़ी से गया और थोड़ी देर में अपने एक साथी के साथ लौटा, जिसने मौके के मुताबिक पूरी वर्दी पहन रखी थी। यह पुलिसकर्मी रंगा और मुझे उस छोटे से घर तक ले गया, जिसमें, मैं मानता हूँ, एक बेहद खूबसूरत लड़की रहती थी। मुझे उस लापरवाह लेकिन बेफिक्र चौकीदार की महिलाओं के प्रति पसंद की तारीफ़ करनी पड़ी। लेकिन उस समय ज़्यादा ज़रूरी था उसके छोटे से घर के एक कोने में रखी पुरानी सागौन की कुर्सी और जस्ता का बाथटब।
उस बेचारी लड़की को गिरफ्तार कर लिया गया और दोनों सामान पुलिस स्टेशन ले जाए गए। उसी सुबह सब-इंस्पेक्टर (एसआई) आए और मैंने उन्हें दो लिखित दस्तावेज सौंपे। पहला, चोरी के संबंध में शिकायत पत्र था, जिस पर कुछ दिन पहले की तारीख थी। दूसरा, सब-इंस्पेक्टर की प्रशंसा और बधाई का पत्र था। वे बहुत प्रसन्न हुए। मैंने उनसे एक निवेदन किया कि वे लड़की को रिहा कर दें और चौकीदार को पकड़ लें; लेकिन उन्होंने मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखते हुए कहा कि वे ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि लड़की भले ही सुंदर हो, लेकिन वह अपराध में सहायक थी।

चमक रहा था और दिन काफी गर्म था। आम तौर पर कोई जंगली जानवर ऐसे समय में नहीं दिखता। फिर हलचल हुई और पीले रंग की कोई चीज़ तालाब के किनारे उगी सरकंडों की दीवार से बाहर निकली। मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या था।
लगभग एक मिनट बाद, बिना किसी स्पष्ट हलचल के, वह वस्तु सरकंडों के पीछे से पूरी तरह बाहर निकली और एक तेंदुआ में तब्दील हो गई। वह जंगल में बने बंगले की ओर टकटकी लगाए देख रहा था, मानो उसे पूरा यकीन था कि अगर कोई खतरा होगा तो वह इसी दिशा में होगा। मैं अपनी कुर्सी पर बिल्कुल नहीं हिला। लगभग तीन मिनट तक गौर से देखने के बाद, तेंदुए ने फैसला किया कि सब कुछ सुरक्षित है। वह पानी पीने के लिए झुका, लेकिन दो बार रुककर बंगले की ओर ऊपर देखा ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि सब ठीक है।
मैंने इस जानवर को दूसरी बार तब देखा जब इसने एक जंगली मुर्गे का पीछा करते हुए उसे पेड़ पर चढ़ा दिया। मैं सुबह-सुबह सैर से लौट रहा था तभी जंगली मुर्गे ने कुछ गज आगे अपनी तीखी चेतावनी भरी आवाज निकाली और जोर-जोर से अपने पंख फड़फड़ाते हुए ऊपर की ओर चला गया।
‘चेक! चेक! चेक! चेक!’ मुर्गे की चीख सुनाई दी और मैं वहीं रुक गया। मुझे लगा कि उसने मुझे देख या सुन लिया होगा। पर मैं गलत था, क्योंकि एक पल बाद ही झाड़ियों से एक तेंदुआ निकला और पक्षी के पीछे भागा, और जिस पेड़ पर वह बैठा था, उस पर जल्दी से चढ़ गया, लेकिन उसकी कोशिश नाकाम रही। जंगली मुर्गे ने फिर चीख मारी और इस बार दूर उड़ गया, जबकि तेंदुए को आगाह हो गया कि कुछ गड़बड़ है, इसलिए उसने अपना सिर घुमाकर पीछे देखा।
तभी उसने मुझे देखा। अपनी पकड़ छोड़ते हुए, पैंथर हल्के से जमीन पर गिर पड़ा, एक पल के लिए अपनी पीठ को झुकाया और अपनी पूंछ को ऊपर की ओर लपेटा, मानो कोई दोस्ताना बिल्ली हो, फिर मुड़ा और चुपचाप झाड़ियों में गायब हो गया।
तीसरी बार जब मैंने इस जानवर को शांतिपूर्ण परिस्थितियों में देखा,
तब मैं अपनी मॉडल टी कार में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। मैं गेरहेटी बंगले और पानी के गड्ढे को पार कर चुका था, और उस रास्ते पर आगे बढ़ रहा था जो, जैसा कि याद होगा, मुत्तूर और पेन्नाग्राम के मुख्य मार्ग से अलग हो जाता है।
उन दिनों उस रास्ते से गाड़ियाँ नहीं आती थीं और बैलगाड़ियाँ भी बहुत
कम थीं। गर्म मौसम में, जब जंगल सूख जाता था, तो मवेशी कभी-कभार नटरापलयम गाँव और कावेरी नदी की ओर जाते हुए दिखाई देते थे, जो सात-आठ मील दूर थी, जहाँ अभी भी कुछ चरागाह उपलब्ध थे। इस क्षेत्र में रहने वाले कुछ लोग अपना बोझ सिर पर उठाते थे या, जब बोझ बहुत भारी होता था, तो टट्टू या गधे की पीठ पर लादते थे; गधे को इसलिए प्राथमिकता दी जाती थी क्योंकि वे सस्ते थे। संकरे रास्ते के ऊपर पेड़ों की शाखाएँ आपस में मिलती थीं, इसी कारण से मॉडल टी की पहले से ही जर्जर हो चुकी हुड को नीचे करना पड़ता था और विंडशील्ड को भी नीचे करना पड़ता था। फिर भी, स्टीयरिंग व्हील पर टहनी रगड़ने के लिए अक्सर आगे की सीट पर एक तरफ लेटना आवश्यक हो जाता था।
एक तीखे मोड़ पर मुड़ते ही, मैंने देखा कि ठीक आगे एक मोटी शाखा ट्रैक
के ऊपर फैली हुई है, और उस शाखा पर एक पैंथर लेटा हुआ था, जिसने जाहिर तौर पर नीचे से गुजरने वाले किसी भी जानवर पर घात लगाने की उम्मीद में यह स्थान ले लिया था। उसने कार की आवाज नहीं सुनी थी क्योंकि मैं ढलान पर तेजी से नीचे जा रहा था, और लिस्सोम लिज़ी के बाएं पैडल को आधा दबाए हुए था, जो गियर-कम-क्लच का काम करता था।

जब मैं लगभग उसके नीचे था, तभी पैंथर शाखा पर से उठा, फिर घबराकर बेढंगे तरीके से उछला, पिछली सीट को पार करते हुए कार के पिछले हिस्से पर जा गिरा, जहाँ से वह फिर से झाड़ियों में भाग गया, लेकिन इससे पहले कि वह भाग पाता, उसके पिछले पैरों के पंजों ने दूसरी छलांग लगाने के लिए सहारा ढूंढते हुए पहले से ही फटे हुए गद्दे में एक बड़ा छेद कर दिया।
इस रास्ते पर जंगलपालयम नाम का एक गाँव है। यह गेरहेट्टी और नटरापालयम के लगभग बीच में स्थित है, दोनों से ढाई मील की दूरी पर। मैं इसे 'खुशहाल गाँव' के नाम से जानता था, क्योंकि इस छोटे से गाँव में रहने वाले लोग, भले ही सभ्यता, चिकित्सा सहायता, स्कूल, मनोरंजन स्थलों और तथाकथित सहकारी केंद्रों से दूर हों, जो कभी किसी काम में सहयोग करते हुए नहीं दिखते, फिर भी हमेशा संतुष्ट और हंसमुख रहते थे। इस छोटे से गाँव का दौरा करना और यहाँ के निवासियों से बातचीत करना बहुत अच्छा लगा। वे भारत में व्याप्त राजनीतिक चेतना से पूरी तरह मुक्त प्रतीत होते थे।
प्रत्येक माह, पूर्णिमा के दिन, और उससे दो दिन पहले और दो दिन बाद, ग्रामीण चांदनी रात में खेल खेलते थे। यह खेल शाम के भोजन के लगभग एक घंटे बाद, जो लगभग आठ बजे होता था, शुरू होता था और आधी रात तक चलता था। शालीनता के कारण पुरुष और महिलाएं एक साथ नहीं खेल सकते थे, इसलिए महिलाएं गांव के केंद्र में एक घेरा बनाकर बैठती थीं, जबकि पुरुष गांव के खलिहान में चले जाते थे, जो बस्ती के एक तरफ लगभग पचास गज की दूरी पर स्थित एक साफ जगह थी। महिलाएं ज्यादातर गाती और नाचती थीं, जबकि पुरुष कई तरह के खेल खेलते थे, जिनमें सबसे लोकप्रिय बलचिक या कबड्डी था, हालांकि इस विशेष बस्ती में इसे गोड्डूगोड्डू के नाम से जाना जाता था, जो पूरे भारत में व्यापक रूप से खेले जाने वाले लोकप्रिय खेल सॉल्ट्स का एक रूप था।
इस खेल के नियम सरल हैं। ज़मीन पर कोयले से एक सीधी रेखा खींची जाती
है, और पाँच से सात सदस्यों की दो टीमें दोनों ओर इकट्ठा होती हैं। खेल तब शुरू होता है जब, मान लीजिए, टीम A का एक सदस्य (हालाँकि गाँव वाले टीमों को 'मेंढक', 'टिड्डा' या इससे भी कम अपमानजनक नामों से पुकारते हैं) आधार रेखा के पास आता है, बार-बार और तेज़ी से 'कब्बाड्डी' (या 'गॉड्डूगॉड्डू) शब्द बुदबुदाता है, बुदबुदाते हुए ही रेखा पार करता है, और अपनी उंगलियों से टीम B के एक सदस्य (जिसे शायद 'नपुंसक' या 'हिजड़ा' या कोई और अभद्र नाम दिया गया हो) को हल्के से छूता है, फिर टीम B के किसी भी सदस्य द्वारा पकड़े जाने से पहले ही कोयले की आधार रेखा पर वापस उछल पड़ता है।
नियम यह है कि टीम ए के खिलाड़ी को लगातार और बिना रुके जोर-जोर से 'कब्बाड्डी' (या 'गॉड्डूगॉड्डू') बुदबुदाते रहना होगा। यदि टीम बी का एक या अधिक सदस्य उसे पकड़कर नीचे गिराने में सफल हो जाता है, जिससे वह कोयले की आधार रेखा तक वापस न जा सके, तो उसकी टीम का भी एक अंक कट जाएगा।
टीम ए के खिलाड़ी के सफल या असफल होने के बाद, लाइन के पास आने की बारी टीम बी के खिलाड़ी की आती है, और इसी तरह यह सिलसिला चलता रहता है। जीतने वाली टीम वह होती है जो पहले से तय अंकों की संख्या, आमतौर पर इक्कीस, प्राप्त कर लेती है। कभी-कभी परिणाम पर एक छोटी सी शर्त भी लगी होती है, जिसमें प्रत्येक टीम का सदस्य शाम के दौरान आधा रुपया जीतता या हारता है, जो एक शिलिंग से लगभग कम होता है।

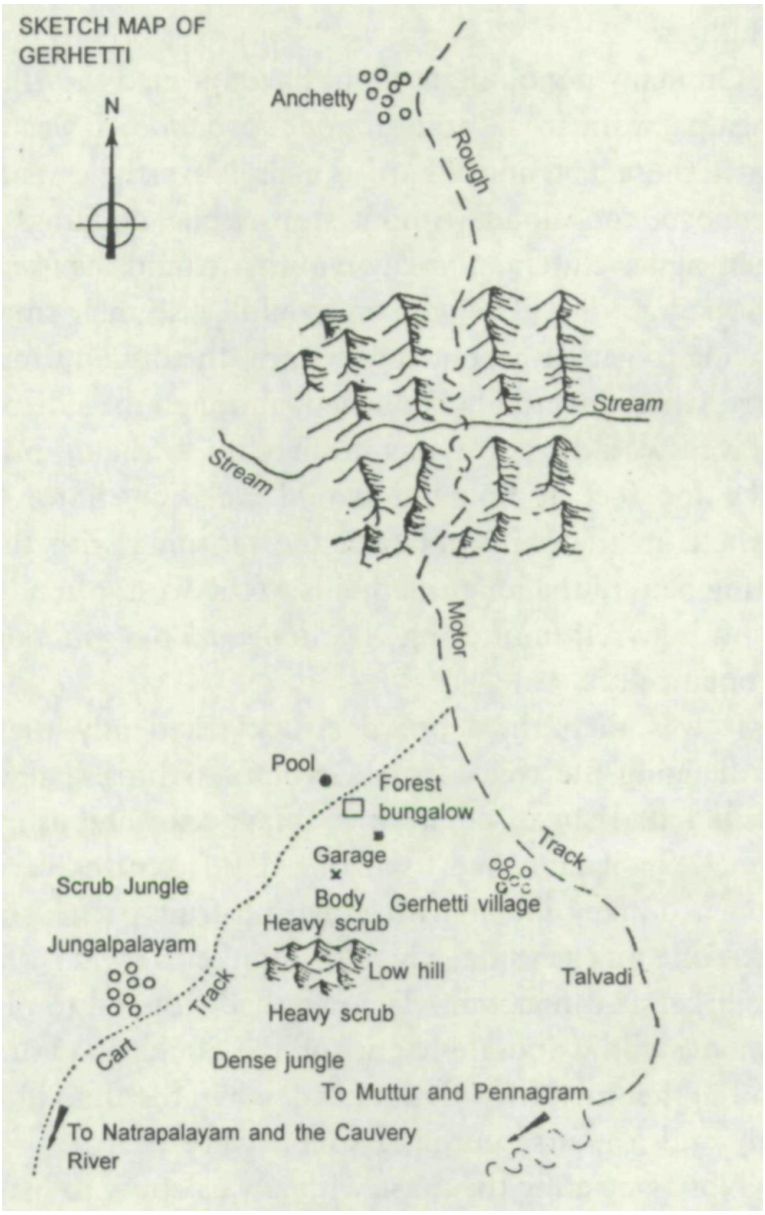
SKETCH MAP OF
GERHETTI
N
Anchetty
Rough
Stream
Stream
Motor
Pool
Forest
bungalow
Garage
Body
Gerhetti village
Track
Scrub Jungle
Heavy scrub
Jungalpalayam
Low hill
Talvadi
Track
Heavy scrub
Cart
Dense jungle
To Muttur and Pennagram
To Natrapalayam and the Cauvery
River

[illegible]

तभी तेंदुए ने हमला कर दिया! जाहिर है, गेरहेट्टी से जंगलपालयम जाने वाले रास्ते पर लटकी हुई वह शाखा, जिस पर मैंने उसे अचानक देखा था, इस जानवर का पसंदीदा घात स्थल था, क्योंकि एक दिन उसने इसी शाखा से छलांग लगाकर एक गधे पर हमला कर दिया, जो इमली के फलों से लदे दो बोरों में लदा हुआ था, जिन्हें गधे का मालिक पेन्नाग्राम के बाजार ले जा रहा था। आदमी एक जंगली बेल तोड़कर खाने के लिए रुका था और गधा पचास गज आगे रास्ते के मोड़ पर मुड़ा ही था कि तभी एक शरीर के गिरने की धड़ाम की आवाज और एक कर्कश गड़गड़ाहट सुनाई दी।
उस आवाज को अपने गधे पर मंडरा रहे किसी खतरे से जोड़कर न देखते हुए,
उस आदमी को डर था कि कहीं आगे कोई हाथी न हो। इसी कारण वह चारों ओर पैनी नजर रखते हुए धीरे-धीरे मोड़ की ओर बढ़ा। लेकिन जब उसने देखा कि उसका बेचारा गधा मरा पड़ा है और रास्ते के एक किनारे घसीटा जा रहा है, तो वह भयभीत हो गया। एक तेंदुआ उसके पेट से सटा हुआ था, उसके दांत अभी भी गधे के गले में गड़े हुए थे और वह कटी हुई नस से रिसते गर्म खून का आनंद ले रहा था।
फिर वह आदमी, जो आम तौर पर भाग जाता और वास्तव में उस हाथी को देखकर भागने के लिए तैयार भी था, अपना आपा खो बैठा और हाथ में पकड़ी लाठी घुमाते हुए तेंदुए पर झपटा। तेंदुए ने अभी-अभी जो शिकार किया था, उससे वह बहुत उत्साहित था, उसके शरीर की गर्माहट और उसके जबड़ों से रिसते गर्म खून से वह अपना भोजन छोड़ने के मूड में नहीं था। वास्तव में, मुझे लगता है कि गुस्से में आए उस आदमी के उस पर टूट पड़ने से पहले उसे ऐसा करने का मौका ही नहीं मिला।
लाठी पैंथर की पीठ पर ज़ोर से पड़ी और पैंथर उस आदमी पर झपटा, उसका गला पकड़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उस ग्रामीण की लंबी काली दाढ़ी देखकर उसका ध्यान भटक गया और उसने आदमी की छाती पर काट लिया। आदमी का संतुलन बिगड़ गया, वह पीछे की ओर गिर पड़ा और चीखने लगा।
मैं उस समय संयोगवश गेरहेट्टी आया हुआ था, लेकिन उस समय काफी दूर, गाँव के पीछे एक पहाड़ी की ढलान पर, अपने चचेरे भाई के लिए एक खास तरह का भृंग खोज रहा था, जो भृंगों का शौकीन संग्राहक है। मुझे चीखने की हल्की- हल्की आवाज सुनाई दी, और यह सोचकर कि किसी आदमी को हाथी मार रहा है, मैं उनकी दिशा में दौड़ पड़ा। अफसोस की बात है कि मैं अपनी राइफल जंगल के लॉज में ही छोड़ आया था। भृंग पकड़ने वाले लोग आमतौर पर हथियार नहीं रखते, और उस समय उस इलाके में आदमखोर हाथी या हिंसक हाथी का कोई खतरा नहीं था।
जो चीखें मैंने बहुत धीमी आवाज़ में सुनी थीं, वे अब बंद हो चुकी थीं, इसलिए मैं उनके स्रोत का अंदाज़ा ही लगा पा रहा था; लेकिन इस विश्वास के साथ कि एक हाथी ने एक आदमी पर हमला किया था, मैंने अनुमान लगाया कि जो भी हुआ होगा, वह जंगलपालयम जाने वाले रास्ते पर कहीं हुआ होगा। इसलिए मैं उसी दिशा में दौड़ पड़ा, झाड़ियों और पेड़ों के बीच से लड़खड़ाते हुए आखिरकार रास्ते पर पहुँच गया।
आस-पास कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। क्या मैं दाएँ मुड़ूँ या बाएँ? आवाज़ इतनी दूर से आ रही थी कि मैंने जंगलपालयम की ओर मुड़ने का फैसला किया और बाएँ मुड़ गया, जितना हो सके चुपचाप आगे बढ़ता रहा और किसी भी क्षण किसी क्रोधित हाथी के सामने आने की आशंका करता रहा।
मैंने जोर से आवाज लगाई लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। लगभग एक फर्लांग चलने के बाद मैं उस पीड़ित के पास पहुँचा जो अपने मरे हुए गधे के बगल में पड़ा था। तेंदुआ उसे छोड़कर चला गया था; शायद उसकी चीखों ने जानवर को डराकर

अब कहानी पर लौटते हैं: पिता जल्दी से गेरहेट्टी गाँव की ओर भागे, वहाँ के कुछ निवासियों से मदद मांगी और लाठी-पत्थरों से लैस होकर, छोटा सा दल घसीटने के निशान का पीछा करने लगा। उन्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना था। लड़के का बचा हुआ हिस्सा पानी के गड्ढे के ठीक दूसरी ओर एक झाड़ी के नीचे पड़ा था।
उस दिन से जंगल में कोई भी अकेला नहीं निकलता था। कम से कम चार लोग मिलकर एक दल बनाते थे और अपने साथ लकड़ी काटने के औजार, कुल्हाड़ी या मजबूत लाठी रखते थे। यह खबर जंगलपालयम, नटरापालयम, पेन्नाग्राम और एंचेटी तक फैल गई। हर कोई तेंदुआ की तलाश में था।
अजीब बात यह थी कि तेंदुए द्वारा कभी-कभार मुर्गी या भेड़ चुराने की घटनाएँ अभी भी जारी थीं। इलाके के अधिकांश लोगों ने कभी न कभी उस हानिरहित तेंदुआ को देखा था, जिससे मेरा सामना तीन बार हुआ था, इसलिए किसी ने भी उसे उस जानवर से नहीं जोड़ा जिसने इमली व्यापारी पर हमला किया था और बाद में लड़के को खा गया था। आदमखोर को कोई राहगीर जानवर या कोई तेंदुआ समझा जाता था जो बीमारी या घावों के कारण अत्यधिक भूख से मरणासन्न हो गया था। कुछ लोगों का तो यह भी मानना था कि तेंदुआ पागल हो गया था, क्योंकि उसने हैजा से मरे जानवरों के शव खा लिए थे। क्योंकि इस क्षेत्र में आदमखोर जानवर लगभग अज्ञात थे; अतीत में कुछ आदमखोर बाघ थे, लेकिन वे बहुत दूर, केम्पेकेराई क्षेत्र में सक्रिय थे। जहाँ तक आदमखोर तेंदुआ की बात है, किसी को भी इसके बारे में सुनने की याद नहीं थी।
उस लड़के के पीछे एक तीसरी शिकार हुई, इस बार एक महिला जो अपने दो साल
के बच्चे को नहलाकर कुएँ से लौट रही थी। इस कुएँ का पानी बहुत खारा था और पीने या खाना पकाने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था; इसका इस्तेमाल केवल धोने के लिए किया जा सकता था। हैरानी की बात यह थी कि तेंदुए ने बच्चे को छुआ तक नहीं, बल्कि उसने माँ को मार डाला और उसके शव को कुएँ से कुछ गज दूर एक नाले में घसीट कर फेंक दिया। बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर गाँव वाले जाँच करने के लिए वहाँ पहुँचे।
इस त्रासदी के बाद, चारों ओर गंभीर भय फैल गया। जंगल में लकड़ी काटना
और सभी प्रकार की आवाजाही पूरी तरह से ठप हो गई, और रात में जंगल के कुछ गिने-चुने जल स्रोतों पर मंडराने वाले शिकारी बेहतर समय आने तक अपनी बंदूकें और पुराने पिस्तौलें पन्ने रख कर रख दिए।
एंचेटी में मेरा किरायेदार, नारायण नाम का एक युवक, जो मेरी ज़मीन के छोटे से टुकड़े पर खेती करता था लेकिन कभी किराया नहीं देता था, मुझे यह खबर लाया। साथ ही उसने एंचेटी के पटेल (जो नाममात्र के लिए गेरहेटी बस्ती के मुखिया भी थे) का अनुरोध भी दिया कि मैं आकर उस तेंदुआ को मार डालूँ। उस समय मैं बैंगलोर में ज़रूरी काम में व्यस्त था, इसलिए मैंने नारायण से कहा कि मैं एक हफ्ते में आऊँगा। मैंने उसे पटेल को यह संदेश देकर वापस भेज दिया और गेरहेटी के लोगों को यह चेतावनी भी दी कि वे समूह में ही चलें, कभी अकेले न चलें। आदमखोर तेंदुआ स्वभाव से कायर होते हैं और वे केवल अंधेरे में ही हमला करते हैं, जबकि आदमखोर बाघ अधिक बहादुर और निडर होता है और किसी भी समय हमला कर सकता है। इस मामले में गेरहेटी का तेंदुआ अलग था; उसने अपने तीनों शिकार दिन दहाड़े किए थे।
मेरे गेरहेटी पहुँचने से एक दिन पहले, पैंथर ने चौथी बार हमला किया,
और शिकार बंगले की रखवाली करने वाले का बेटा निकला, वही लापरवाह शख्स

जिसने मुझे कुर्सी और बाथटब के बहाने फंसाने की कोशिश की थी। पैंथर ने सुबह तड़के अपने शिकार को अपना शिकार बनाया।
बाथटब और कुर्सी वाले कांड के बाद, पिता ने वन विभाग में अपनी नौकरी
खो दी थी और एक छोटे-मोटे वन ठेकेदार बन गए थे। वे सार्वजनिक नीलामी में फल, विभिन्न औषधीय बीज और पत्ते, मेहंदी, शहद, हिरण के सींग और अन्य छोटी- मोटी वस्तुएँ इकट्ठा करने का अधिकार खरीदते थे। इस व्यवसाय में पुत्र सक्रिय रूप से शामिल था, और अपनी मृत्यु के समय वह गेरहेट्टी आया था ताकि वहाँ रहने वाले कुछ पुजारियों को गेरहेट्टी से लगभग चार मील दूर पेरियामलाई नामक एक छोटे पहाड़ की ऊँची चट्टानों पर लटके जंगली चट्टानी मधुमक्खियों के छत्तों पर छापा मारने में मदद करने के लिए मना सके।
नटराज नाम के उस लड़के ने अपना मिशन सफलतापूर्वक पूरा कर लिया था और
वह जंगली शहद से भरे लगभग चार-पाँच केरोसिन के डिब्बे इकट्ठा करने में कामयाब रहा था। औसतन, प्रत्येक डिब्बे में चौबीस बोतलों के बराबर शहद था, जिनमें से प्रत्येक को बेचने पर तीन रुपये मिलते थे। इस तरह इस यात्रा से उसे लगभग तीन सौ रुपये की कमाई हुई।
पूरी तरह संतुष्ट होकर वह डिब्बों के साथ गेरहेट्टी लौट आया, जहाँ उसने रात बिताने का फैसला किया, क्योंकि गाँव में यह अफवाह फैल गई थी कि जंगली हाथियों का एक झुंड हाल ही में कावेरी नदी से निकलकर तलवाड़ी की घाटियों में घूम रहा है, जहाँ से पेन्नाग्राम के बाजार जाने वाली सड़क गुजरती है। नटराज अपने कीमती शहद को जंगली हाथियों के सामने जोखिम में नहीं डालना चाहता था।
वन में बना लॉज (जिसमें से उसके पिता फर्नीचर ले गए थे) बंद था, लेकिन गैराज खुला था: दरअसल, उसमें दरवाजे ही नहीं थे! इसलिए नटराज ने शहद के डिब्बों के साथ रात गैराज में बिताने का फैसला किया।
सुबह तड़के, गेरहेट्टी गांव के लोगों ने बताया कि उन्होंने नटराज की मदद के लिए चीखें सुनीं, लेकिन संख्या में कम होने और निहत्थे होने के कारण उन्होंने अपनी झोपड़ियों के दरवाज़े और मज़बूती से बंद कर लिए और भोर का इंतज़ार किया। दिन निकलने पर, उनमें से कुछ लोग यह देखने के लिए गैरेज में आए कि क्या हुआ था। नटराज कहीं नज़र नहीं आया। संघर्ष के निशान स्पष्ट थे। मिट्टी के फर्श पर खून फैला हुआ था और शहद का एक डिब्बा उलट गया था, जिससे हज़ारों चींटियाँ आकर्षित हो गई थीं। ऐसा भी लग रहा था कि किसी भारी चीज़ को ज़मीन पर घसीटकर खुले दरवाज़े से जंगल की ओर ले जाया गया हो, जो दस गज पीछे से शुरू होता था।
पैंथर ने उसे ज्यादा दूर तक ले जाने की जहमत नहीं उठाई। उसका सिर, हाथ
और पैर, वो हिस्से जिन्हें पैंथर और यहाँ तक कि आदमखोर बाघ भी बड़ी सावधानी से खाते हैं और बाद के भोजन के लिए छोड़ देते हैं, पैंथर की भूख का मूक गवाह बनकर इधर-उधर बिखरे पड़े थे। पिल्लों के अनुसार वह शिकारी काफी छोटा था, लेकिन उसने बहुत सारा मांस खा लिया था।
मैं उस सुबह दस बजे गेरहेटी पहुँचा और पुलिस के एंचेटी से आने और उबाऊ
व निरर्थक पूछताछ शुरू करने से पहले ही अवशेष देख लिए। उन्होंने पूछा, मैं क्यों आया था? क्या मेरे पास हथियार लाइसेंस था? बंदूक लाइसेंस? कार लाइसेंस? ड्राइविंग लाइसेंस? कोई भी सवाल, सिवाय पैंथर से जुड़े सवालों के।
मैंने उनसे कहा कि वे अवशेषों को वहीं छोड़ दें और जितनी जल्दी हो सके चले जाएं, क्योंकि इससे मुझे नटराज के अवशेषों के पास बैठकर शायद उस

आदमखोर को गोली मारने का मौका मिल जाएगा। दोपहर में उसके लौटने की संभावना थी, और अंधेरा होने के बाद लौटने की भी संभावना थी।
सब-इंस्पेक्टर की अनुपस्थिति में दल का प्रतिनिधित्व कर रहे दफेदार (प्रमुख कांस्टेबल या सार्जेंट) ने साफ इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि शव वहीं रहना चाहिए जब तक कि उनके बॉस स्वयं उसे देख न लें। और चूंकि उन्हें एंचेटी लौटना था, इसलिए वे अपने साथ आए दो कांस्टेबलों को शव की निगरानी के लिए वहीं छोड़ देंगे, जब तक कि सब-इंस्पेक्टर नहीं आ जाते, जो शायद शाम को या अगली सुबह आने की संभावना अधिक है।
दफ्फेदार की बातें सुनकर उसके सभी अधीनस्थों ने उसकी योजना का सर्वसम्मति से विरोध किया। उनमें से एक ने गुस्से में कहा कि उसने उस सुबह नाश्ता नहीं किया था और अगले दिन तक तो बिल्कुल भी इंतजार नहीं कर सकता था। दूसरे ने बहाना बनाया कि उसे ज़ुकाम है। इस पर दफ्फेदार ने कहा कि उसने उस दिन उसे एक बार भी खांसते हुए नहीं सुना। इस पर कांस्टेबल ने देर तक खांसा! आदेश तो आदेश होते हैं, दफ्फेदार ने सख्ती से कहा और अपनी साइकिल पर सवार होकर एंचेटी की ओर चल पड़ा। दोनों पुलिसवाले एक-दूसरे को और मुझे घूरते रहे, जब तक कि मैंने उन्हें बिना बोले, लेकिन लगभग सभी को समझ आने वाली भाषा में एक इशारा नहीं किया, जिससे उन्हें सामान्य संकेत मिल गया; 'हिम्मत रखो, लड़कों; हर मुश्किल में कोई न कोई उम्मीद की किरण होती है।' कम से कम इस मामले में तो उनके लिए उम्मीद की किरण थी, और वह भी सचमुच, क्योंकि दफ्फेदार के जाते ही दोनों पुलिसवाले भी वहाँ से जाने के लिए बेताब हो गए, भले ही उन्हें पास के छोटे से गाँव तक ही जाना पड़े। किसी भी कीमत पर इस भयानक जगह से निकलना था, उस निर्जीव, आरोप लगाने वाले चेहरे पर उन खाली, घूरती आँखों से दूर जाना था। मैं अपने हाल पर छोड़ दिया गया और मेरे सामने अब छिपने की जगह ढूंढने और हत्यारे के संभावित लौटने का इंतजार करने की तात्कालिक समस्या थी।
जैसा कि अक्सर होता है, छिपने के लिए कोई जगह नहीं थी। यह स्वाभाविक
है क्योंकि आदमखोर जानवर—चाहे बाघ हों या तेंदुआ—अपने शिकार को घसीटकर या उठाकर घनी झाड़ियों में ले जाते हैं ताकि वे बिना किसी बाधा के आराम से अपना भोजन कर सकें। वे अपने शिकार को किसी ऐसे पेड़ के नीचे नहीं छोड़ते जहाँ से उन्हें गोली मारी जा सके! वहाँ लैंटाना की घनी झाड़ियाँ थीं और तेंदुआ अपने शिकार के शरीर को इन्हीं दो झाड़ियों के बीच घसीटकर ले गया था, जहाँ उसने उसका अधिकांश भाग खा लिया था। आस-पास छिपने की कोई भी कोशिश आसानी से नज़र आ जाती और तेंदुआ कभी दिखाई नहीं देता। कुल मिलाकर, मेरा सोचा हुआ घात लगाना असंभव लग रहा था।
मैंने बहुत सोचा-समझा और अंत में एक विचार आया। इसे शब्दों में बयान करना थोड़ा मुश्किल है, इसलिए मैंने एक रेखाचित्र बनाया है जिससे मुझे उम्मीद है कि मेरी योजना का कुछ अंदाजा लग जाएगा।
नटराज के अवशेष जिस स्थान पर थे, उसके उत्तर में वन लॉज और गैराज था। पूर्व में, कुछ ही दूरी पर, एक छोटा सा गाँव और लगभग खुला मैदान था। पश्चिम में हल्की झाड़ियाँ थीं, जिनसे होकर गेरहेट्टी से जंगलपालयम जाने वाला रास्ता जाता था। दक्षिण में घनी झाड़ियाँ थीं, जिनके किनारे एक छोटी पहाड़ी थी। मैं पहले ही पश्चिमी दिशा वाले रास्ते पर चल चुका था। रेतीली सतह पर पैंथर के आने-जाने के कोई निशान नहीं थे। इसलिए आदमखोर दक्षिण की पहाड़ी से आया था और उसी रास्ते से वापस चला गया था।

गुटरगू और काले शरीर और नारंगी पंखों वाले कौवे-तीतर की पुकार से गूंज रहा था, जो जंगल के किनारे से कुछ ही कदम दूर पक्षियों के अंडे, छिपकलियों और इल्लियों की लगन से तलाश कर रहा था।
घंटे धीरे-धीरे बीतते गए और गर्मी बढ़ती गई, जमीन से झिलमिलाती लहरों
की तरह उठती हुई। यहाँ तक कि कौवे-तीतर ने भी इसे महसूस किया और अपनी खोज छोड़ दी, हालाँकि अथक टिड्डे अपनी नीरस धुन में भिनभिनाते रहे।
घंटे बीतते गए और मैं हत्यारे की वापसी की सूचना देने वाली हड्डियों
के चटकने की आवाज़ सुनने के लिए कान गड़ाए बैठा रहा। आसमान में ऊँचे उड़ते एक राजा गिद्ध की चीख के अलावा मुझे कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। उसने अवशेष बहुत पहले ही देख लिए होंगे, लेकिन चूंकि वे किसी इंसान के थे, इसलिए 'राजा' ने धरती पर उतरने में देरी कर दी, वरना मीलों दूर तक फैले अन्य गिद्धों को दावत के लिए इकट्ठा होने का न्योता मिल जाता।
पांच बज गए, वातावरण में उल्लेखनीय ठंडक आ गई और गिद्ध की भूख और तेज़
हो गई। उसने ज़रा भी देर नहीं की, बल्कि अपने फैले हुए पंखों के सख्त परों से गुज़रती हवा के तेज़ झोंके के साथ ज़मीन पर झपटा और शिकार के पास हल्की सी आवाज़ के साथ उतरा। जल्द ही दूसरे गिद्ध भी उसके पीछे आ गए और पैंथर के शिकार का कुछ भी नहीं बचा, बस साफ-सुथरी हड्डियाँ ही बचीं। अगर तेंदुआ उस रात आता भी, तो उसे खाने को कुछ नहीं मिलता और वह भटक जाता!
चार-पाँच गिद्ध कुछ-कुछ अंतरालों पर राजा के पास आते रहे, हालाँकि विशालकाय पक्षी अभी भी अपना भोजन शुरू करने में हिचकिचा रहे थे। नटराज का सिर, अपनी टकटकी लगाए आँखों के साथ, अक्षुण्ण बना हुआ था, जिसने उन्हें दूर रखा।
समय धीरे-धीरे बीतता गया, और शाम होते ही बसेरों में बैठे पक्षियों
का मधुर गायन शुरू हो गया, जो जंगल प्रेमियों के कानों को सुहाने दिन को विदाई दे रहा था। पहाड़ी की तलहटी से जंगली मुर्गे 'कुक-क्या-क्या-खुकम!' की आवाज लगा रहे थे; ऊपर एक तीतर 'की-कोक! की-कोक! की-कोक!' की आवाज लगाकर चुनौती दे रहा था, और पहाड़ी की चोटी से उसके प्रतिद्वंद्वी ने 'की-कोक-कोक! की-कोक-कोक! की-कोक-कोक!' की आवाज लगाकर जवाब दिया। चिड़ियों ने एक-दूसरे पर गुर्राते हुए 'वैक! वैक! कुकर-रॉवाक!' की आवाज लगाई, जबकि दूर कहीं एक मोर ने भी इस गायन में शामिल होते हुए 'ज़ैंक! मिया! मिया! मिया-ऊ-ओ!' की आवाज लगाई।
पंखों की भारी फड़फड़ाहट के साथ ही 'राजा' और उसके उतने ही डरपोक साथी धीरे-धीरे जमीन से उठे और पास के किसी पेड़ पर बैठ गए। वे सुबह तक इंतजार करेंगे और उनकी भूख निश्चित रूप से बढ़ जाएगी।
अंधेरा छाने लगा; चारों ओर गहरी खामोशी छा गई, जिसे महसूस किया जा सकता था। तभी 'चक! चक! चक! चक-ऊऊऊऊ!' की आवाज़ नाइटजार पक्षी की निकली और 'हूऊऊ! हूऊऊ! हूऊऊ!' की आवाज़ एक सींग वाले उल्लू की आई। मैंने अपनी टॉर्च को राइफल के बैरल पर कसकर बांधने वाले दोनों क्लैंप को लगाया और रोशनी को एक बिंदु के रूप में समायोजित किया। इसके तुरंत बाद रात हो गई। तेंदुआ दिखाई नहीं दिया और मेरी सोची-समझी योजना विफल होती दिख रही थी।
मैं आपको अगले छह घंटों का वर्णन करके बोर नहीं करूंगा। दरअसल, बताने
के लिए कुछ है ही नहीं, क्योंकि कुछ हुआ ही नहीं। चांद, जो अब घट रहा था, देर से निकला था, और अगर पैंथर अपने शिकार के पास आता तो मैं अपनी योजना पर अमल नहीं कर पाता, क्योंकि रात इतनी उजाली नहीं होती कि मैं उसे देख पाता जब वह मेरे फेंके पत्थरों से डरकर पहाड़ी पर दौड़ता हुआ आता। मुझे या तो उसे

खाने देना पड़ता, या फिर चुपके से उस पर हमला करने की कोशिश करनी पड़ती, जो कि बहुत मुश्किल होता और मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं था।
इन्हीं विचारों में खोकर मुझे शायद नींद आ गई। फिर अचानक किसी चीज़
ने मुझे चौंका दिया। मैं बता नहीं सकता कि वह क्या था। वह कोई ऐसी आवाज़ नहीं थी जिसे मैं सुन सकूँ, बल्कि ऐसा लगा जैसे किसी जानलेवा खतरे ने मुझे घेर लिया हो। वह बहुत भारी और घुटन भरा था; ऐसा महसूस किया जा सकता था।
एक पल के लिए मुझे लगा कि यह सब मेरी कल्पना है, लेकिन खतरे का अहसास बना रहा और बहुत वास्तविक हो गया। ऐसा लगा जैसे सब कुछ मेरे चारों ओर सिमट रहा हो। निस्संदेह, कहीं न कहीं से कोई चीज़ मुझे धमका रही थी।
तब मुझे एहसास हुआ कि यह क्या था। आदमखोर तेंदुआ पास ही था! वह अजीब छठी इंद्री, जिसे मैंने घोर खतरे के समय महसूस किया है और जिसने बाद में कई बार मेरी जान बचाई है, मुझे मानो शब्दों में बता रही थी कि तेंदुआ हमला करने ही वाला है।
मैंने अपनी.405 पिस्तौल पर हाथ रखे और बिना हिले-डुले चारों ओर देखने की कोशिश की। चांदनी से गैराज का आयताकार दरवाज़ा जगमगा रहा था, और दृश्य के केंद्र में जंगल में बने बंगले का पिछला हिस्सा दिखाई दे रहा था। तभी चांदनी से जगमगाते इस पर्दे के निचले बाएँ कोने में कुछ हल्का सा हिला। कुछ काला और थोड़ा सा लहराता हुआ सा। मैं ठीक से देख नहीं पा रहा था कि वह क्या था, क्योंकि वह गैराज के अंधेरे में छिपा हुआ था और धुंधली चांदनी की पृष्ठभूमि ने ही मेरा ध्यान पास की उस हल्की हलचल की ओर खींचा था।
परछाई बहुत धीरे से हिली और मेरे कान तक फुफकारने की हल्की सी आवाज पहुंची। क्या यह कोबरा था? या फिर यह आदमखोर सांप हो सकता है?
सौभाग्य से मैंने ज़रा भी हरकत नहीं की थी। अगर मैंने ऐसा किया होता,
तो वह प्राणी शायद मुझ पर हमला कर देता जब उसे पता चलता कि मुझे चौंकाने की उसकी कोशिश पकड़ी गई है। लेकिन अब हरकत करना—और वह भी बहुत तेज़ी से— ज़रूरी था।
मैं उछलकर खड़ा हुआ और पीछे की ओर कूदा, लेकिन पीछे की दीवार से टकराकर अचानक रुक गया। उसी समय मैंने अपनी राइफल का मुंह आगे की ओर किया और टॉर्च का बटन दबा दिया। हालांकि टॉर्च की रोशनी से उसकी आंखें चौंधिया गईं, फिर भी आदमखोर ने हमला कर दिया।
इसके बाद के कुछ क्षणों का वर्णन करते हुए मुझे विनम्रता और कृतज्ञता
का भाव व्यक्त करना चाहिए। क्योंकि यह दावा करना उचित नहीं है कि 'मैंने एक ही गोली से उसे मार डाला', क्योंकि जंगली जानवरों का थोड़ा-बहुत अनुभव रखने वाला कोई भी व्यक्ति आपको बता सकता है कि एक सांभर अपने शरीर में नौ गोलियां झेलकर मीलों तक चल सकता है, एक बाइसन पंद्रह, एक जंगली हाथी कभी- कभी पच्चीस, और एक बाघ या तेंदुआ मरने से पहले बहुत सी गोलियां झेल सकता है। और मरने से पहले वह आपको टुकड़े-टुकड़े कर सकता है।
फिर भी, कारतूस खराब हो सकता है, कैप में गड़बड़ी हो सकती है, या गोली चलाते ही जानवर मुड़ सकता है। कुछ भी हो सकता है। इतना कहना ही काफी है कि मेरी गोली महज़ किस्मत से निशाने पर लगी और तेंदुए को हवा में ही मार गिराया, हालांकि पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए मैंने अपने पैरों के पास तड़पते हुए उसके शरीर पर दो और गोलियां चलाईं।

सब-इंस्पेक्टर अगली सुबह समय से काफी पहले पहुँच गया। उसे यह देखकर निराशा हुई कि नटराज की अधिकांश हड्डियाँ, जिनमें उसका सिर भी शामिल था, रात के दौरान लकड़बग्घे और सियार ले गए थे।

सात

लक्कावल्ली नरभक्षी

यदि आप मैसूर राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित तारिकेरे कस्बे का दौरा करें, तो आपको दो मोटर योग्य सड़कें मिलेंगी। इन सड़कों पर, कस्बे से चार-पाँच मील की दूरी पर, यदि आपके पास रुककर सुनने का समय हो, तो आप ग्रामीणों से बाघों के अत्याचारों के बारे में कई कहानियाँ सुनेंगे।
इन सड़कों में से पहली सड़क तारिकेरे से लगभग दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाती है, जो बाबा बुडांस के नाम से जानी जाने वाली ऊँची घोड़े की नाल के आकार की पर्वत श्रृंखला के दक्षिण में स्थित लिंगधल्ली गाँव से होकर एक घुमावदार रास्ते से गुजरती है, संतावेरी गाँव में इसकी निचली ढलानों को पार करती है, और लगभग बीस मील दूर चिकमगलूर शहर तक जाती है।
दूसरी सड़क उत्तर-पश्चिम की ओर जाती है, जो उन्हीं पहाड़ों की पूर्वी
और उत्तर-पूर्वी ढलानों से गुजरती है, फिर लक्कावल्ली और उम्बलेबायल नामक दो छोटे गांवों से होते हुए भद्रावती शहर तक जाती है, जो खुद तारिकेरे से मुश्किल से दस मील दूर है, और वहां तक एक तीसरी और अधिक सीधी सड़क जाती है। इस प्रकार पहली और दूसरी सड़कें बाबा बुदन पर्वतमाला की दक्षिणी और पूर्वी ढलानों को घेरती हैं, और पश्चिम और उत्तर की ओर स्थित गहरी घाटी से पहाड़ों की चोटी को पार करने वाले बाघ, जो इन पहाड़ों से घिरे हुए हैं, खुद को या तो दक्षिणी सड़क पर स्थित संतावेरी गांव के आसपास पाते हैं, या

पूर्वी सड़क के पश्चिम में लाउबाग के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्र में पाते हैं।
इन बातों को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है: संतावेरी गांव और लाउबाग क्षेत्र। क्योंकि इन्हीं स्थानों और इनके बीच के क्षेत्र में बाघ के साथ वह रोमांचक घटना घटी थी, जिसके बारे में आप अब सुनने वाले हैं। समुद्र तल से 4,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित संतावेरी एक पथरीला, जंगली और घने जंगलों वाला क्षेत्र है, जबकि लाउबाग, जो लगभग तीस से पैंतीस मील की दूरी पर है, हालांकि एक हजार फीट से अधिक नीचे है और कम पथरीला है, फिर भी अधिक घने जंगलों से घिरा हुआ है।
मैं संयोगवश अपने पुराने मित्र डिक बर्ड से मिलने गया था, जो सैंटावेरी में पोस्टमास्टर थे और निजी जीवन में जिले के सबसे प्रसिद्ध बाघ शिकारियों में से एक थे, जिन्होंने राइफल का उपयोग करने से इनकार करते हुए अपने सभी बाघों को.12 बोर की शॉटगन से मारा था।
‘जॉक,’ उसने मुझसे पूछा, ‘क्या तुमने केमंगुंडी के आसपास दिखाई देने वाले बाघ के बारे में सुना है?’
मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि केमंगुंडी, संतावेरी और लाउलबाग क्षेत्र के लगभग मध्य में स्थित है, और डिक हमेशा मुझे 'जॉक' कहकर बुलाता है। क्योंकि मैं इतने स्थानों पर रह चुका हूँ, इतने जंगलों में, इतने अलग-अलग मौसमों में, विभिन्न जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के बीच शिकार कर चुका हूँ, और इतने अलग-अलग काम कर चुका हूँ कि मैं एक तरह से जेकिल और हाइड बन गया हूँ, जिसके कई नाम और उपनाम हैं। बहुत पुराने दोस्त मुझे 'जॉक', 'स्कॉची' या 'स्कॉच' कहकर बुलाते हैं, जबकि हाल ही में मिले लोग मुझे 'एंडी', 'केनेथ', 'केन' और 'केडीएस' कहकर पुकारते हैं।
स्कूल में मुझे 'साँप पकड़ने वाला' कहकर चिढ़ाया जाता था, क्योंकि मुझे अपनी कमीज़ के अंदर से सांप निकालकर संडे स्कूल, स्कूल के चैपल, क्लासरूम, डाइनिंग और स्टडी हॉल, सिनेमाघरों और अन्य भीड़भाड़ वाली जगहों पर छोड़ने का शौक था। यह बहुत पहले की बात है, और अब कुछ सालों से मुझे 'साँप पकड़ने वाला' कहकर नहीं चिढ़ाया जाता, क्योंकि मैंने सार्वजनिक जगहों पर सांप छोड़ने की आदत छोड़ दी है।
सबसे शर्मनाक बात तो यह है कि मेरे बेटे का दोस्त, छोटा दुधवाला, मुझे 'डॉट' कहकर बुलाने पर अड़ा रहता है। व्यक्तिगत रूप से, मुझे अपने और 'कलम या नुकीली चीज़ से बने किसी छोटे निशान' के बीच कोई समानता या संबंध नहीं दिखता, जिसे शब्दकोश में 'डॉट' का अर्थ दिया गया है। इसलिए, मुझे अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है और मैं थोड़ा भुलक्कड़ भी हूँ, तो कभी-कभी मैं भ्रमित हो जाता हूँ और यह देखने के लिए इधर-उधर देखता हूँ कि मुझे किसने पुकारा है।
लेकिन डिक के सवाल पर वापस आते हैं।
‘नहीं,’ मैंने उत्तर दिया, ‘मैं काफी समय से उस क्षेत्र में नहीं गया हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, मैं पहले सलेम जिले में काफी काम करता था, लेकिन अब मुझे नीलगिरी और आंध्र प्रदेश तक अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाना पड़ा है। वहाँ अभी भी बाघों की अच्छी खासी संख्या है।’
‘खैर, अभी भी काफी सारे हैं,’ डिक ने आगे कहा। ‘लेकिन आम वाले। मतलब, मवेशी चुराने वाले। झपटमार जानवर जो मवेशियों के झुंड को परेशान करते हैं। हालांकि, जिस जानवर का मैंने जिक्र किया है, वह थोड़ा अलग लगता है।’

फिर उन्होंने आगे बताया कि चरवाहों की रिपोर्टों के अनुसार, एक बहुत बड़े बाघ ने हाल ही में उनके झुंडों पर हमला करने की आदत बना ली है, यहाँ तक कि तब भी जब वे सड़कों पर होते हैं और चरागाहों की ओर ले जाए जा रहे होते हैं। उनकी आँखों के सामने ही वह सबसे मोटी और उत्तम गाय को पकड़कर मार डालता और उसे अपने कंधों पर लादकर ले जाता। ऐसा कई बार हो चुका था और यह घटना संतावेरी से कुछ ही मील दूर, उसी सड़क पर हुई थी जिसके बारे में मैंने आपको बताया था, जो तारिकेरे से चिकमगलूर जाती है। इसी तरह की घटना एक और छोटी सड़क पर भी होने की सूचना मिली थी, जो केमंगुंडी नामक एक पहाड़ी की ओर जाती है, जो लिंगधल्ली गाँव से गुजरने के कुछ ही समय बाद मुख्य तारिकेरे- चिकमगलूर सड़क से अलग हो जाती है।
डिक ने आगे बताया कि दो या तीन चरवाहों ने चिल्लाकर और पत्थर फेंककर बाघ को डराने की कोशिश की ताकि वह शिकार के शव को छोड़ दे, क्योंकि बाघ उसे ले जा रहा था।
हालांकि, वे जल्द ही रुक गए, क्योंकि बाघ ने शव को छोड़कर भागने के बजाय गाय को नीचे गिरा दिया और उनकी ओर दौड़ पड़ा—जिसके बाद वे भाग गए। बाद में हुई जांच से पता चला कि बाघ चरवाहों को भगाकर वापस आया, गाय को उठाया और उसे लेकर भाग गया। ऐसा लगता है कि यह बाघ अपने शिकार को गर्दन या गले से पकड़कर जमीन पर घसीटने के बजाय अपने कंधों पर लादकर ले जाना पसंद करता था।
हमने इस बिंदु पर चर्चा की और इस बात पर सहमति जताई कि संकेतों से यह
पता चलता है कि या तो बाघ असाधारण रूप से साहसी जानवर था—शायद एक बूढ़ा नर — या फिर वह शिकार को खाने से पहले उसे काफी दूर तक ले जाने का इरादा रखता था, शायद किसी दूर की गुफा या मांद में, यदि वह शावकों वाली बाघिन होती। जानवर इतना समझदार था कि उसे यह एहसास था कि शिकार को लंबी दूरी तक घसीटने से वह झाड़ियों और कांटों में फंस सकता है; इसलिए उसने शव को उठाकर ले जाना बेहतर समझा।
‘काश इस घटिया विभाग में मुझे कुछ छुट्टी मिल जाती,’ डिक ने शिकायत करते हुए कहा, ‘मैं किसी भी तरह से छुट्टी ले लेता। लेकिन दो-तीन दिन की आकस्मिक छुट्टी भी बड़ी झंझट में पड़ जाती है। मेरी जगह किसी और को तारिकेरे या चिकमगलूर से बुलाना पड़ता है, और अधीक्षक पागलों जैसा व्यवहार करता है। डाकमालिक होने का यही नतीजा होता है।’
मेरी यात्रा समाप्त हो गई, मैं बैंगलोर लौट आया और बाघ के बारे में सब कुछ भूल गया। वैसे भी, मुझे मवेशी चोरों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।
कुछ महीने बीत गए, फिर एक सुबह मैं बैंगलोर में जिला मजिस्ट्रेट की अदालत में सरकारी डाक टिकट खरीदने गया, जिसकी मुझे जरूरत थी। तभी मेरी मुलाकात डाक टिकट विक्रेता के स्टॉल पर एक भारतीय सज्जन से हुई। वे शिकायत कर रहे थे क्योंकि उन्हें जिस मूल्यवर्ग के डाक टिकट चाहिए थे, वे उपलब्ध नहीं थे, और न ही उनसे छोटे मूल्यवर्ग के डाक टिकट थे, जिनकी कुल राशि आवश्यक राशि के बराबर हो।
मैंने अपनी जरूरत का कागज खरीदा, जो काफी अधिक मूल्य का था और उपलब्ध था।
‘क्या नाम?’ विक्रेता ने मुझसे पूछा, नियमों के अनुसार स्टांप पेपर के पीछे यह नाम लिखने की तैयारी करते हुए।
मैंने धीरे से उत्तर दिया, 'के.डी.एस. एंडरसन,' और एंडरसन नाम की स्पेलिंग बताई ताकि वह इसे सही ढंग से लिख सके।

हमारे साथ मौजूद भारतीय सज्जन मुझे घूर रहे थे। मेरा नाम दर्ज करने
और भुगतान प्राप्त करने के बाद, विक्रेता ने मुझे स्टांप पेपर दिया और फिर उस सज्जन ने कुछ कहा।
‘माफ़ कीजिए महोदय,’ उसने पूछा, ‘लेकिन क्या आप वही मिस्टर एंडरसन हैं
जो बाघों का शिकार करते हैं?’
‘हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है,’ मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। ‘कम
से कम मुझे किसी और एंडरसन के बारे में नहीं पता जिसे यह बुरी आदत हो।’ फिर, बाद में सोचते हुए मैंने जोड़ा, ‘शायद आपका मतलब मेरे बेटे से है?’
‘मेरा नाम वेंकटसुब्बाराओ है,’ उस व्यक्ति ने कहा। ‘मैं तारिकेरे के पास लक्कावल्ली बांध परियोजना में सहायक मुख्य अभियंता हूँ। देखिए, जब विक्रेता ने आपका नाम पूछा और आपने एंडरसन बताया, तो मुझे आपकी ओर ध्यान गया। मैंने आपके बारे में हर जगह बाघों के शिकार के लिए सुना है। आपको लक्कावल्ली अवश्य आना चाहिए, महोदय। मेरे मेहमान बनकर आइए। मेरे पास बड़ा कमरा है और मैं आपके लिए आरामदायक व्यवस्था कर सकता हूँ। आप यहाँ आराम से रहेंगे और आदमखोर बाघ का शिकार करने के लिए मैं आपके लिए सभी आवश्यक बंदोबस्त कर दूंगा।’
मैंने आश्चर्य से पूछा, 'कौन सा आदमखोर?'
‘क्या तुमने नहीं सुना?’ उसने हैरानी से जवाब दिया। ‘अरे, यह तो तीन दिन पहले अखबार में छपा था। लेकिन चलो मेरे साथ कॉफी पीते हैं, मैं तुम्हें इसके बारे में सब कुछ बताता हूँ।’
मजिस्ट्रेट कोर्ट से कुछ ही दूरी पर 'टिफिन रूम' नाम का एक रेस्टोरेंट
है, और मैं और वेंकटसुब्बाराओ वहीं गए। एक नहीं, बल्कि कई कप कॉफी पीते हुए उन्होंने मुझे यह कहानी सुनाई।
तारिकेरे से बाबा बुदन पर्वत श्रृंखला की पूर्वी ढलानों से होते हुए लक्कावल्ली से गुजरते हुए भद्रावती की ओर जाने वाली सड़क पर एक विशाल बाघ प्रकट हुआ था। उसने सबसे पहले सड़क के किनारे के जंगल में चरने के लिए लाए गए कई पशुओं के झुंडों के मवेशियों को मारना शुरू किया। बाघ अपने शिकार को अपनी पीठ पर उठाकर ले जाता था, और यदि कोई चरवाहा हस्तक्षेप करने की हिम्मत करता, तो वह जानवर जोर से गुर्राकर उन्हें भगा देता था। वह हमेशा पश्चिम दिशा में, लाउलबाग के जंगलों में गायब हो जाता था।
समय बीतता गया। किसी भी चरवाहे को कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन बाघ अपना कहर बरपाता रहा। स्वाभाविक रूप से, चरवाहे बाघ से और अधिक क्रोधित हो गए और उसी अनुपात में अधिक साहसी बन गए। ठीक उसी तरह, बाघ भी उनसे और अधिक क्रोधित हो गया और स्वयं भी अधिक साहसी बन गया।
वह दिन आ गया जब दोनों पक्षों का गुस्सा चरम पर पहुँच गया। बाघ अपने कंधों पर एक मोटी गाय को लेकर जा रहा था, तभी एक चरवाहा, जो अपने साथियों से कहीं अधिक साहसी था, उसके पीछे दौड़ा और अपनी लाठी फेंक दी। अपनी आदत के अनुसार, बाघ ने शिकार के शरीर को नीचे गिरा दिया और भयानक दहाड़ते हुए उस आदमी पर हमला कर दिया, निस्संदेह यह उम्मीद करते हुए कि वह भी कई अन्य लोगों की तरह भाग जाएगा।
लेकिन यह आदमी भागा नहीं। शायद वह दूसरों से ज़्यादा बहादुर था। शायद
वह डर से कांप गया था। शायद अपनी लाठी फेंक देने के बाद उसने सोचा कि भागना बेकार है। ज़ाहिर है, खुद वहाँ मौजूद न होने के कारण वेंकटसुब्बाराओ को नहीं पता था कि असल में क्या हुआ था। उसे इतना पता था कि बाघ ने चरवाहे को मारकर खा लिया और फिर अपनी मोटी शिकार, गाय को लेकर चला गया।

मेरे नए परिचित ने निष्क्रियता का फायदा उठाते हुए छोटी छुट्टी पर बैंगलोर का दौरा किया था, जहाँ हमारी मुलाकात स्टाम्प विक्रेता की दुकान पर हुई थी। उन्होंने मुझसे विनती की कि मैं उनके साथ लक्कावल्ली वापस चलूँ ताकि गाँव को उस बुराई से मुक्त कराया जा सके जिसने उसे जकड़ रखा था। मुझे काम था, लेकिन मैंने अपने साथी के बार-बार अनुरोध पर सहमति जताते हुए कहा कि मैं केवल पाँच या छह दिनों के लिए ही आऊँगा। मैं इससे अधिक समय तक नहीं रुक सकता था।
वेंकट, जिसे मैं आगे इसी नाम से पुकारूँगा, बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे नहीं लगता कि उसे इस बात का एहसास था कि पाँच दिनों में आदमखोर को ढूँढ़ना लगभग नामुमकिन है। तय हुआ कि वह अपने होटल लौटकर बिस्तर और कुछ अन्य सामान जो वह अपने साथ लाया था, इकट्ठा करके उसी दिन दोपहर 3 बजे तक मेरे घर पहुँच जाएगा। फिर हम मेरी कार से लक्कावल्ली के लिए रवाना होंगे।
मैं जल्दी से घर पहुंचा ताकि अपना सामान इकट्ठा कर सकूं, जो हमेशा कुछ डिब्बाबंद खाने-पीने की चीजों के साथ तैयार रखा रहता है, तभी मुझे एक और आश्चर्य हुआ। डाकिया डिक बर्ड का एक छोटा सा पत्र लेकर आया था।

प्रिय जॉक,

जल्दी आओ। कल तक यहाँ पहुँच जाना। जिस बाघ के बारे में
मैंने तुम्हें बताया था, वह आदमखोर बन गया है और कई चरवाहों को
निगल चुका है। कल, वह मेरे डाकिया को उठा ले गया जब वह यहाँ से
तीन मील दूर होसूर गाँव तक चिट्ठियों का थैला ले जा रहा था। मुझे छुट्टी लेने का समय नहीं मिला, इसलिए मैंने बीमार होने का बहाना बनाया और डाकिया के शव की तलाश में निकल पड़ा। हमने दिन भर खोजा, लेकिन बेचारे की सिर्फ़ टोपी और चप्पलें ही मिलीं।
और हां, वो चिट्ठियों का थैला भी। (कहीं उस खूंखार बाघ ने उसे खा न लिया होता!)
समय समाप्त हो गया है और मुझे कल ड्यूटी पर वापस जाना है।
अब कोई बहाना नहीं चलेगा; मैं तुम्हारे लिए परसों (यानी, जिस दिन तुम्हें यह पत्र मिलेगा उसके अगले दिन) दोपहर का खाना रखूँगा,
बशर्ते कि बाघ उस आरक्षित डाकिया को न खा जाए जो आज यह पत्र लेकर
डाक पहुँचा रहा है। बेचारा, वह बहुत उदास है और मैं उसे दोष नहीं
दे सकता।

तुम्हारा दोस्त, डिक

डिक उस रात दो मेहमानों को डिनर पर देखकर हैरान रह गया। वेंकट और मैंने रिकॉर्ड समय में यात्रा पूरी कर ली थी।
हम देर रात तक बातें करते रहे, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे याद आया कि अगली सुबह से मेरे पास आदमखोर को ढूंढकर उसे मारने के लिए ठीक पाँच दिन थे। डिक बर्ड अपनी ड्यूटी नहीं छोड़ सकता था। वेंकट ने चाहे जितनी भी तत्परता दिखाई, उसे शूटिंग के बारे में कुछ भी नहीं पता था और

वैसे भी उसके पास कोई हथियार नहीं था। डाकिया के शरीर का कोई सुराग नहीं मिला और उसे ढूंढने का कोई फायदा नहीं था, क्योंकि सिर्फ हड्डियाँ ही बची होतीं।
वेंकट ने कहा कि उसे अगले दिन दोपहर तक बांध पर वापस आना है, इसलिए हमने उसी रात गाड़ी से उसके घर जाने का फैसला किया। सड़क मार्ग से वह लगभग पचास मील दूर था, हालांकि सीधी दूरी के हिसाब से काफी पास था। हमने रम का एक आखिरी गिलास पिया और आधी रात के काफी बाद डिक को अलविदा कहा। मैंने वेंकट को स्पॉटलाइट चलाने का तरीका बताया, जिसकी मदद से हम गाड़ी की हेडलाइट्स के साथ जंगल में खोज करते हुए आगे बढ़े।
तारिकेरे से हम अभी भी लगभग पंद्रह मील दूर थे, बागावडकट्टे नामक स्थान पर, जहाँ एक छोटी सी पुलिया वाली सड़क के नीचे से एक धारा बहती थी। सड़क के दोनों ओर, दाएं और बाएं, घने ताड़ के पेड़ थे, जिनके नीचे घनी झाड़ियाँ और बाघ घास उग रही थी। वहीं हमें एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। पुलिया के ठीक पीछे, एक तरफ खड़ा, और स्पष्ट रूप से सड़क पार करने ही वाला था, एक शानदार बाघ!
हेडलाइट्स और स्पॉटलाइट की रोशनी पड़ते ही उसने अपना सिर कार की ओर घुमाया, और उसकी बड़ी-बड़ी आँखों का प्रतिबिंब चमकीला सफेद-लाल था, मानो सड़क के किनारे दो बड़े तारे चमक रहे हों। 'सफेद-लाल' से मेरा मतलब है कि सफेद रंग में लाल रंग की हल्की सी झलक। इसी तरह मैं रात में बाघ की आँखों को पैंथर की आँखों से अलग पहचानता हूँ, जिनकी आँखें छोटी, पास-पास और लाल-सफेद रंग की होती हैं—यानी उनमें लाल रंग ज़्यादा और सफेद रंग कम होता है।
हमारी तेज रोशनी में हम बाघ के धारीदार शरीर को, बल्कि उसके पूरे शरीर
को स्पष्ट रूप से देख सकते थे।
मैंने गाड़ी रोक दी। बाघ और तेंदुआ, जब उन पर तेज़ रोशनी पड़ती है, तो अक्सर ज़मीन पर लेटकर छिपने की कोशिश करते हैं, हालांकि वे रोशनी की तरफ देखते रहते हैं, जिससे उनकी मौजूदगी का पता चल जाता है। हमारे बाघ ने भी यही किया। वह नीचे लेट गया और फिर पेट के बल रेंगते हुए पुल की रेलिंग के पीछे छिपने लगा।
वेंकट उत्साह से बेहाल था। वह बुरी तरह कांप रहा था और स्पॉटलाइट हिल रही थी। 'शूट करो! शूट करो! शूट करो!' वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था।
बाघ ने उसकी आवाज़ सुन ली। वह कुछ ही कदम आगे बढ़ा और पुल की दीवार के नीचे छिप गया। फिर वह नदी में कूद गया, पुल के नीचे से गुजरा, और खजूर के पेड़ों की कतार के नीचे लंबी घास और झाड़ियों में हमारे बाईं ओर गायब होते हुए हमने उसकी गुर्राहट सुनी। वेंकट ने मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा और उसकी आँखों में लगभग आँसू आ गए। उसके होंठ काँप रहे थे। एक पल के लिए मुझे लगा कि वह रोने ही वाला है।
मैंने उन्हें विस्तार से समझाया कि सभी बाघ आदमखोर नहीं होते, कि हम
इस समय आदमखोर बाघों के 'क्षेत्र' से बाहर थे, और बागवडकट्टे एक प्रसिद्ध स्थान रहा है जहाँ बाघ सड़क पार करते हैं या पुल के नीचे से गुजरते हैं, एक तरफ की निचली पहाड़ियों से दूसरी तरफ की निचली पहाड़ियों की ओर, और हमने जो जानवर देखा था वह निस्संदेह मनुष्यों के लिए पूरी तरह से हानिरहित, निर्दोष जानवर था। इसके अलावा, स्पॉटलाइट की सहायता से सड़क किनारे बाघों का शिकार करना नियमों के विरुद्ध था और साथ ही अनुचित भी।

रक्षा अधिकारी ने रेंजर की ओर देखा, और रेंजर ने अपने गार्ड की ओर।
फिर गार्ड ने रेंजर की ओर देखा, और यह सिलसिला चलता रहा।
'मिस्टर एंडरसन, इस इलाके में कोई गुफा होने की संभावना नहीं दिखती,' डी.एफ.ओ. ने विस्तार से घोषणा की।
मेरे दिमाग में जो भ्रम बैठा था, वह बुरी तरह से मर रहा था। मेरा सिद्धांत चकनाचूर हो गया! पहरेदार एक नंगे पैर पर खड़ा था और दूसरे पैर के अंगूठे से अपनी पिंडली खुजला रहा था।
'मुझे नहीं लगता कि शैतान पुराने मुन्नेस्वरा मंदिर में शरण ले सकता
है, क्या वह ले सकता है, स्वामी?' उसने शर्मिंदा होकर अपने तत्काल वरिष्ठ अधिकारी, रेंजर से पूछा।
‘मुन्नेश्वर मंदिर!’ रेंजर ने सोच-विचार करते हुए कहा; ‘मुन्नेश्वर मंदिर!’
‘मुन्नेश्वर मंदिर!’ रक्षा अधिकारी ने उत्साह से चिल्लाते हुए कहा। फिर, शर्म से सिर झुकाए गार्ड से बोला, ‘अरे मूर्ख! तुमने पहले क्यों नहीं बताया? बस यही है! वह यहीं है! पुराना मुन्नेस्वरा मंदिर!’ रक्षा अधिकारी उत्साह में उछल-कूद करने लगा।
जब भावनाएं शांत हुईं तो मुझे बताया गया कि लाउबाग ब्लॉक की सीमा के भीतर थोड़ी ही दूरी पर एक प्राचीन मंदिर है, जो लगभग खंडहर हो चुका है। गार्ड द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार, उस सुबह जब हम रास्ता भटक गए थे, तब हम मंदिर के बहुत करीब रहे होंगे। कहा जाता है कि मंदिर का भीतरी कक्ष, या गर्भगृह, आंशिक रूप से ढह गया था, लेकिन गार्ड के अनुसार बाघ के रहने के लिए पर्याप्त जगह बची थी।
हम वापस लक्कावल्ली गए, जहाँ रक्षा अधिकारी, रेंजर और गार्ड सरकारी जीप में हमारे पीछे-पीछे आ रहे थे। उन्होंने कहा कि वे 'शिकार' के समय मौजूद रहना चाहते हैं, हालाँकि उन्होंने मुझसे वादा किया कि वे गाँव में ही रहेंगे और हत्या के दौरान मुझे परेशान नहीं करेंगे।
दोपहर के भोजन का समय बीत चुका था, लेकिन बुखार की गर्मी में उत्सुकता
के चलते मैंने भोजन छोड़ दिया और वन रक्षक के साथ पुराने मंदिर के खंडहरों की ओर पैदल चल पड़ा। हम उस जगह से आगे निकल गए जहाँ खून के निशान खो गए थे और एक मील से अधिक आगे जाने के बाद अचानक ज़मीन में एक गड्ढा दिखाई दिया। इस छोटे से गड्ढे के बीचोंबीच घनी झाड़ियों का एक द्वीप था, और विभिन्न प्रकार के पत्तों के बीच से झाँकते हुए मुझे एक छोटे मंदिर के धूसर खंडहर दिखाई दिए।
मैंने अपने साथी को एक ऊंचे पेड़ पर चढ़कर ऊपर ही रहने का निर्देश दिया, जिसे उसने तुरंत मान लिया। इसके बाद मैं दबे पांव खंडहरों की ओर बढ़ा, हर झाड़ी का सहारा लेते हुए। तेज धूप पड़ रही थी और मुझे कोई जल्दी नहीं थी।
उत्साह में आकर मुझे याद आया कि मैं पहरेदार से मंदिर की दिशा पूछना भूल गया था। यह बहुत ज़रूरी था, अगर मैं आदमखोर बाघ को अचानक पकड़ना चाहता था। यह ठीक नहीं होता कि मैं मंदिर के पीछे पहरा दे रहा होता और बाघ सामने से निकलकर झाड़ियों की आड़ में घूमकर मुझ पर पीछे से हमला कर देता।
अंततः, पास पहुँचने पर, मुझे मंदिर-पवित्रस्थल की ओर जाने वाला द्वार दिखाई दिया। यह थोड़ा मेरे दाहिनी ओर था और मलबे से आंशिक रूप से अवरुद्ध था। मैं भाग्यशाली था। अब मुझे बस इस द्वार के पास चुपके से जाना था, छुपना था, आदमखोर को बाहर निकालना था और उसे गोली मार देनी थी।

गए, क्योंकि हमने उसे बंगले के पीछे जाते हुए देखा, जहाँ हमने उसे और वन रक्षक को आपस में बात करते हुए सुना।
कुछ मिनट बाद पहरेदार पास आया। वह उत्साहित था, लेकिन अपने उच्च अधिकारियों की बातचीत में दखल देने से हिचकिचा रहा था।
‘तो?’ गार्ड ने बड़ी झिझक के साथ बुदबुदाया। ‘महोदय, कृपया क्रोधित न हों, लेकिन उस बहिष्कृत लंबड़ी ने मुझे बताया है कि मुन्नेस्वरा मंदिर से एक मील आगे एक चट्टान की लटकती हुई चोटी है जिसके नीचे बाघ के छिपने के लिए पर्याप्त जगह है। वास्तव में, वह कहता है कि उसने एक शाम अपनी भैंसों के साथ लौटते समय उस चट्टान की चोटी पर एक बाघ को धूप सेंकते हुए देखा था, और यह सब उस आदमखोर के हमारे बीच आने से पहले हुआ था। बेशक, वह भाग गया और उसके जानवर भी उसके पीछे चले गए। वह कहता है कि वह फिर कभी वहाँ नहीं गया।’ हमने बिना देरी किए लंबड़ी को बुलाया और उससे गहन पूछताछ की। उसका जवाब बिल्कुल वही था जो वन रक्षक ने हमें बताया था। उसने जो एकमात्र नई जानकारी दी, वह यह थी कि उसे पूरा यकीन था कि उसने जो बाघ देखा था और आदमखोर बाघ एक ही जानवर थे, क्योंकि उस समय बाघ ने आदमखोरी का रूप नहीं धारण किया था। कुछ ही मिनटों में मैं फिर से अपने रास्ते पर चल पड़ा, इस बार वन रक्षक कुछ अनिच्छा से मेरे साथ आया। लेकिन लंबड़ी का मूड बेहतर था।
जब हम मंदिर के पास से गुज़रे तब साढ़े चार बज रहे थे, और लगभग पाँच बजने ही वाले थे कि लंबडी ने मुझे लगभग दो सौ गज आगे ज़मीन में एक हल्की सी ऊँचाई दिखाई, जिसके ऊपर एक ढलान वाली चट्टान झाँक रही थी। उसने मुझे बताया कि हालाँकि हम जहाँ खड़े थे वहाँ से जंगल के कारण वह दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन जब मैं उसके पास पहुँचूँगा तो देखूँगा कि चट्टान से एक नीची लटकती हुई गुफा बनी हुई है, जिसका प्रवेश द्वार दो फुट से ज़्यादा ऊँचा नहीं है। उसके अनुसार, मानसून के दौरान बारिश के पानी के तेज़ बहाव के कारण ऐसा हुआ होगा, क्योंकि गुफा ज़्यादा गहरी नहीं थी। पिछली बार जब वह आया था तो लगभग उसी जगह पर था जहाँ हम अब खड़े थे और उसने चट्टान के ऊपर बाघ को पूरी लंबाई में लेटकर धूप सेंकते हुए देखा था। वह जितनी तेज़ी से भाग सकता था भाग गया था।
मैंने एक बार फिर अपने साथियों से पेड़ों पर चढ़ने और मेरे लौटने तक वहीं रहने को कहा, और उस दिन दूसरी बार मैं यथासंभव सावधानी से दबे पांव आगे बढ़ा।
इस बार मेरा आगे बढ़ना घने जंगल से होकर गुज़र रहा था, न कि खुले मैदान से, जैसा कि उस घाटी में था जहाँ पुराना मुन्नेस्वरा मंदिर खंडहर हो चुका था। मैं दाएं-बाएं और पीछे देखता रहा, ताकि पार्श्व और पीछे से होने वाले हमलों से खुद को बचा सकूं। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था और मैं हर कदम पर एक पल के लिए नीचे देखता था। किसी भी हालत में मुझे किसी ऐसे पत्ते पर पैर नहीं रखना था जो सरसरा सकता हो या किसी ऐसी टहनी पर जो चटक सकती हो। तमाम सावधानियों के बावजूद, कभी-कभी मेरे शरीर का कोई हिस्सा किसी झाड़ी से टकरा जाता और हल्की सी रगड़ की आवाज़ आती।
मैंने मन ही मन कहा: 'मुझे दोबारा ऐसा नहीं करना चाहिए: बाघ मुझे सुन लेगा।'
मैं अब चट्टान के बहुत करीब था, लेकिन सामने की घनी झाड़ियों ने अभी
भी उस खुले स्थान को छिपा रखा था जिसका ज़िक्र लंबड़ी ने किया था। मैं कुछ मिनटों के लिए रुक गया। शायद अगर मैं ध्यान से सुनूँ तो मुझे बाघ की आवाज़ सुनाई दे। मैंने ऐसा किया, लेकिन मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

मैंने मन ही मन कहा, 'कुछ और कदम, और मैं देख पाऊंगा।'
मैंने नीचे देखा। सामने न कोई पत्ता था, न कोई टहनी, न कोई ढीला पत्थर। मेरे लिए एक और कदम आगे बढ़ाना सुरक्षित था।
मैंने वह कदम बढ़ाया, लेकिन दाहिनी ओर मौजूद एक छोटी सी झाड़ी को नज़रअंदाज़ कर दिया। उस झाड़ी में कांटे थे, और उन्हीं कांटों ने अपना काम कर दिया। वे मेरी पतलून से ज़ोर से रगड़े, एक पल के लिए चुभे, और फिर एक और रगड़ के साथ छूट गए।
इससे पहले कि मैं समझ पाता कि आदमखोर बाघ ने मेरी बात सुनी है या नहीं, उसने सुन ली थी। उसकी सहज प्रवृत्ति ने उसे आगाह कर दिया था कि जो प्राणी उसकी नज़रों से ओझल होकर पास आ रहा है, वह कोई पक्षी, खरगोश या कोई छोटा जीव नहीं है। वह भली-भांति जानता था कि उड़ने, चलने या रेंगने वाला कोई भी प्राणी उसकी भयानक उपस्थिति के इतने करीब आने की हिम्मत नहीं करेगा। इसलिए यह अवश्य ही कोई शत्रु है, और उससे भी बढ़कर, कोई ऐसा शत्रु जो उसका पीछा कर रहा है, यानी बाघ, जो निस्संदेह उसे मारने के लिए ही आया है।
उसकी सहज प्रतिक्रिया ने उसे यह संदेश दिया और उसने जरा भी देर नहीं की। बाघ ने आक्रमण किया, उसकी 'व्रूफ़! व्रूफ़! व्रूफ़!' की दहाड़ ने सन्नाटा तोड़ दिया।
मेरे सामने झाड़ियाँ हट गईं और उसका सिर और शरीर उनमें से तेज़ी से निकल गया, इससे पहले कि वह मुझे देख पाता। अंतिम छलांग लगाने से पहले वह एक पल के लिए रुका। शायद उसने कभी उम्मीद नहीं की थी कि भागने के बजाय उसे एक बेचारा इंसान मिलेगा। सिर और पंजे ज़मीन पर, पिछला हिस्सा और पूंछ ऊपर उठी हुई, बाघ थोड़ा हास्यास्पद लग रहा था।
मैंने उसके सिर पर दो बार गोली मारी। फिर मैं झट से एक तरफ कूद गया, क्योंकि किसी बाघ पर नज़दीक से गोली चलाने के बाद तुरंत एक तरफ कूदना कभी नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि संभावना 99 में से 1 है कि वह सीधे दौड़ेगा, भले ही उसे अगले ही पल मरना पड़े। मरता हुआ बाघ वास्तव में आपको बहुत नुकसान पहुंचा सकता है।
आदमखोर ने वही किया जो मुझे उम्मीद थी, और मैंने उसके कंधे के पीछे दो बार और गोली मारी। जैसे ही वह तड़पा और फिर अकड़ने लगा, मैंने देखा कि वह काफी बूढ़ा जानवर था, शिकार करने की उम्र पार कर चुका था।
जिस कुली के शव की हम तलाश कर रहे थे, उसकी हड्डियाँ उथली गुफा के प्रवेश द्वार पर बिखरी पड़ी थीं। उन्हें कुतर-कुतर कर साफ कर दिया गया था। लाल चींटियाँ उन पर चिपके मांस के छोटे-छोटे टुकड़ों को चट कर रही थीं। हम तीनों अंधेरे में वापस लौटे, इस बार निडर थे। बंगले में एक और दावत
थी, जिससे मुझे बदहजमी हो गई। मंदिरों से बाघों के निकलने के सपने मुझे सुबह तक परेशान करते रहे। फिर वेंकट और वन विभाग के मेरे दोस्तों को विदाई दी।
मैं सुबह नौ बजे तक सैंटावेरी पहुँच गया था। डिक ने मुझे दोपहर का भोजन दिया, लेकिन मैंने मना कर दिया। पेट में अभी भी गुड़गुड़ाहट हो रही थी, मैंने जल्दी से रम का एक घूंट पिया। चार बजे तक मैं घर पहुँच गया, और अपना मिशन समय से पहले पूरा कर लिया था।

आठ

आंधी-तूफान अपने साथ क्या लेकर आया

मेरा बेटा डोनाल्ड खुद से बेहद खुश था। उसने अभी-अभी मैसूर राज्य राइफल एसोसिएशन द्वारा आयोजित क्ले-पिजन शूटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान के लिए संयुक्त रूप से जीत हासिल की थी।
भारत में हम लोग आमतौर पर क्ले-पिजन शूटिंग नहीं करते, कम से कम जहाँ
तक मुझे पता है। शायद इसलिए कि यहाँ जंगली कबूतर इतने ज़्यादा हैं कि हमें क्ले-पिजन या उन्हें बनाने में इस्तेमाल होने वाले किसी भी पदार्थ से खेलने की ज़रूरत महसूस नहीं होती। ज़्यादा संभावना यही है कि अब तक किसी के पास इन छोटे-छोटे क्ले-पिजन को हवा में उछालने का उपकरण नहीं था। मैंने तो इन्हें पहले कभी नहीं देखा था। मुझे यकीन है कि मैं खुद भी इन्हें नहीं मार सकता। मैं तो राइफल से निशाना लगाने में माहिर हूँ, लेकिन बंदूक चलाने में लगभग बेकार। सालों पहले स्नाइप और बत्तख पर किए गए मेरे प्रयासों ने मुझे इस बात का पक्का सबूत दे दिया था।
वैसे तो डोनाल्ड बंदूक और राइफल दोनों से ही अच्छा निशाना लगाता है। मेरी तरह उसने भी कभी क्ले-पिजन शूटिंग का उपकरण नहीं देखा था, इसलिए उसे अभ्यास करने का मौका भी नहीं मिला था। लेकिन उसने प्रतियोगिता में भाग लिया और प्रथम पुरस्कार जीता। अब उसने सुझाव दिया कि इस अवसर को मनाने के लिए हमें जंगल की सैर पर जाना चाहिए।

जंगलों में? जश्न मनाने के लिए यह कितनी अजीब जगह है! लेकिन सच तो यह
है कि हम दोनों को जंगल बहुत पसंद हैं। उनमें हमें घर जैसा लगता है; वहाँ हमें शांति मिलती है। इसलिए मुझे जाने के लिए ज्यादा मनाना नहीं पड़ा।
इस बार हमने बाघों को गोली मारने के बजाय रात में उनकी तस्वीरें खींचने का फैसला किया। डोनाल्ड ने अपने स्कूली दिनों के पुराने दोस्त, युवा दुधवाला से एक शानदार कैमरा और टॉर्च उधार ली थी, जो अब युवा नहीं था और जिसके बारे में मैंने अपनी पिछली किताब में एक कहानी सुनाई है।* डॉन लंबे समय से रात में फोटोग्राफी के सबसे कठिन और साथ ही साथ सबसे कुशल खेल में हाथ आजमाना चाहता था और यह उसका मौका था।
मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि हम किस जंगल में गए थे, क्योंकि यह दक्षिण भारत के उन गिने-चुने स्थानों में से एक है जहाँ अभी तक बाघ नहीं पाए जाते। कुछ उत्साही लोगों ने मेरी किताबें पढ़ी हैं और उन स्थानों पर गए हैं जिनका मैंने उल्लेख किया है, अपनी किस्मत आजमाने के इरादे से। भारतीय संरक्षण के दृष्टिकोण से, अब इन स्थानों का नाम न लेना आवश्यक हो गया है। क्योंकि दक्षिण भारत में बाघ, तेंदुआ और भालू बहुत कम होते जा रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत में विदेशियों के आगमन के कारण हुए भारी शिकार ने इनकी संख्या में भारी कमी ला दी। विशेष रूप से भारतीय शिकारी, जो स्पॉटलाइट वाली जीपों का इस्तेमाल करते हैं, ने इस प्रक्रिया को और तेज कर दिया। फिर आया वह घातक कीटनाशक जिसके बारे में मैं पहले ही बात कर चुका हूँ, जिसे सरकार अभी भी ग्रामीणों की फसलों को विभिन्न कीटों से बचाने के लिए लगभग मुफ्त में उपलब्ध कराती है, लेकिन जिन किसानों के मवेशी या बकरियाँ बाघों और तेंदुओं द्वारा मारे जाते हैं, वे अपने मारे गए जानवरों के मांस पर इसे लगाने में जरा भी संकोच नहीं करते। लगभग हमेशा, इस घिनौने कृत्य में सफलता तब मिलती है जब शिकारी दूसरी बार भोजन के लिए लौटता है और उसे जहर दे दिया जाता है।
इसके परिणाम इतने भयावह रहे हैं कि, विशेष रूप से मैसूर राज्य में, बाघ, तेंदुआ, लकड़बग्घा, यहाँ तक कि सियार और कुछ हद तक गिद्ध भी इस रसायन के दुरुपयोग से लगभग विलुप्त हो गए हैं—देश भर में आत्महत्या, हत्या और आकस्मिक विष के कारण मनुष्यों की उच्च मृत्यु दर को तो हमने गिना ही नहीं है। आर्सेनिक, स्ट्राइकिन और जस्ता लवण जैसे पुराने और कहीं अधिक धीमी गति से असर करने वाले, कम घातक विष, जो केवल बहुत कम मात्रा में ही खरीदे जा सकते हैं, आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन सरकार लगभग माँगने पर ही किसी को भी भारी मात्रा में घातक कीटनाशक दे देती है। यह खेदजनक है कि अधिकारी इस मामले की सच्चाई को देख नहीं पा रहे हैं, देख नहीं रहे हैं या देखना नहीं चाहते हैं।
तो हम 'बाघों की भूमि' की ओर चल पड़े, एक सुंदर सी झोपड़ी में जो हमने बांस और घास से बनाई थी। यह झोपड़ी उस छोटे से भूखंड पर बनी थी जिसे मैंने कई साल पहले 120 रुपये (लगभग सात पाउंड स्टर्लिंग) में खरीदा था। हमारी झोपड़ी के ठीक सामने 200 गज की दूरी पर एक नदी बह रही थी, जिसकी मौजूदगी दोनों किनारों पर उगे विशाल मुठी, इमली, जुमलम और जंगली आम के पेड़ों से साफ झलक रही थी। जगह-जगह ऐसे क्षेत्र थे जहाँ बांस के घने झुंडों ने अन्य सभी प्रकार की वनस्पतियों को हटा दिया था, और उनके ऊंचे, पंख जैसे पत्ते नदी के झरनों और तालाबों पर लटक रहे थे, जबकि सड़ते पत्तों की चादर से ढके अंधेरे और शांत मैदान पानी के किनारे तक फैले हुए थे।

मगरमच्छ को ऐसी जगहें बहुत पसंद होती हैं, क्योंकि हिरणों को भी ये जगहें अच्छी लगती हैं। बांसों का घना आवरण, उनकी छाया और सड़ते पत्तों की बिछी ज़मीन सांभर, नीलगाय और चित्तीदार हिरणों को दिन की तेज़ गर्मी में और रात में भी चुपचाप, सुरक्षित और अपेक्षाकृत सुगम रास्ता प्रदान करती है, ताकि वे ऊपर पहाड़ों की ठंड से बहकर आए ठंडे पानी से अपनी प्यास बुझा सकें।
किसी भी पेड़, बांस के झुंड या झाड़ी के पीछे छिपे विशाल मांसाहारी जानवरों से बचने की चिंता में, हिरण बिना समय गंवाए जितनी जल्दी हो सके पानी पीते हैं। उनकी नाक और कान बाघ की गंध या आवाज के लिए सतर्क रहते हैं, और उनकी आंखें पैंथर या क्रूर जंगली कुत्तों पर नजर रखती हैं। अक्सर, परिदृश्य का जायजा लेने की चिंता में, वे बदसूरत मगरमच्छ को नजरअंदाज कर देते हैं, जो वैसे भी अदृश्य होता है, जिसका सिर और शरीर नदी की सतह के नीचे और किनारे के बहुत करीब होता है।
और इस तरह एक सांभर पानी पीने के लिए अपना सिर नीचे करता है, और जैसे
ही वह ऐसा करता है, मगरमच्छ पानी से बाहर आ जाता है। लंबे, आरी जैसे दांतों वाले क्रूर जबड़े सांभर के थूथन पर कस जाते हैं, और लगभग उसी क्षण सरीसृप की चपटी, खुरदरी पूंछ पानी से बाहर निकलती है और अदम्य बल के साथ वार करती है, सांभर के पैरों या बगल पर प्रहार करती है और उसे असंतुलित करके तालाब में गिरा देती है।
सांभर के चेहरे पर अपनी पकड़ ढीली किए बिना, मगरमच्छ पीछे की ओर गहरे पानी में तैरता है, और अपने छटपटाते शिकार को अपने साथ घसीटता है। एक बार जब मगरमच्छ अपने शिकार को पकड़ लेता है, तो वह अविश्वसनीय गति से चक्कर लगाता है ताकि उसकी गर्दन तोड़ दे या उसे बेहोश कर दे, और अगले ही पल मगरमच्छ और सांभर दोनों तालाब की गहरी सतह के नीचे गायब हो जाते हैं और त्रासदी के दृश्य पर शांत बहते पानी में केवल बड़े-बड़े बुलबुले ही हलचल मचाते हैं।
लेकिन जंगल की नदी की तलहटी में कीचड़ और दलदल में चल रहे भयावह नाटक
के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है। अपनी झोपड़ी के बरामदे में आरामदेह बेंत की कुर्सियों पर बैठे हम विशाल बांसों के तनों के टूटने की तेज़ आवाज़ सुनते हैं, जिन्हें नदी के दूसरी ओर चर रहे हाथियों का झुंड तोड़ रहा है। बीच-बीच में हाथी के बच्चे की हल्की सी चीख सुनाई देती है और किसी वयस्क हाथी के पाचन अंगों से गड़गड़ाहट जैसी धीमी आवाज़ आती है, या फिर किसी मादा हाथी की संतुष्ट गाय जैसी रंभाहट सुनाई देती है। सब कुछ शांत है और दूर से आती मोर की आवाज़ ऊपर से आती तीखी, बिल्ली जैसी म्याऊं की आवाज़ों के साथ बदलती रहती है, जो भूरे गिद्धों का जोड़ा जंगल की बड़ी बिल्लियों द्वारा छोड़े गए भोजन के टुकड़ों की निरंतर खोज में निकाल रहा है।
जंगल में ऊपरी तौर पर शांति थी, लेकिन हमारी झोपड़ी में कुछ कलह चल रही थी। हमारे अनुपस्थित रहने पर झोपड़ी की देखभाल के लिए नियुक्त किए गए चौकीदार और उसकी पत्नी के बीच अनबन हो गई। उसकी पत्नी नदी से एक पुराने मिट्टी के तेल के डिब्बे में दिन में दो बार पानी लाती थी। वहाँ बड़बड़ाहट और शिकायत की आवाजें गूंज रही थीं, और कभी-कभी एक कर्कश महिला की चीख सुनाई देती थी जो गिद्धों को भी शर्मिंदा कर देती थी।

डोनाल्ड ने संक्षिप्त लहजे में कहा, 'बूरा और उसकी पत्नी के बीच कुछ अनबन है। पता लगाना बेहतर होगा कि मामला क्या है। मैंने उसे दो बार कहा है, लेकिन वह अभी तक मेरे नहाने के लिए पानी नहीं लाई है।'
तो मैं उठा और रसोई में गया, जो हमारे घर के पीछे स्थित एक छोटी सी घास-फूस की झोपड़ी थी, लगभग बारह फुट चौकोर। वहाँ बूरा ज़मीन पर बैठा था, आलस में एक डंडी से आग को कुरेद रहा था, जबकि उसकी पत्नी उसके सामने बैठी सुपारी चबा रही थी और चारों ओर लाल थूक रही थी। वहाँ मेरा शिकारी थंगावेलु भी उत्सुकता से देख रहा था, जो मूल रूप से दूर क्लोज़पेट से आया था और डॉन की सेवा में शिविर-रसोइया, टेबल-बॉय, ड्रेसिंग-बॉय और लगभग हर तरह का काम करता था, सिवाय उस काम के जो ईमानदारी से कोई काम करता हो।
मैंने गुस्से से बूरा और उसकी पत्नी को बारी-बारी से घूरते हुए पूछा, 'तुम दोनों को क्या हो गया है?' फिर मैंने उस महिला से कहा, 'तुम्हारी गंदी भाषा बेहद घिनौनी है।'
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, फिर बूरा ने स्थानीय बोली में समझाया: “महोदय, मैंने तीन साल पहले इस बदचलन औरत से शादी की थी। उससे मेरे तीन बच्चे हैं, लेकिन वह उनकी देखभाल नहीं करती। न ही वह मुझे ठीक से खाना खिलाती है। वह आलसी होने के कारण काम नहीं करती। सारा दिन पान चबाती रहती है और और खरीदने के लिए पैसे मांगती है। कुल मिलाकर, वह बहुत खर्चीली है।” जब मैंने उससे शादी की थी, तब मैंने उसके पिता को उसके लिए दस रुपये
दिए थे। अब, बूढ़े जवाना ने मुझे अपनी सबसे छोटी बेटी पंद्रह रुपये में देने की पेशकश की है। वह सुंदर है और मेरा अच्छे से ख्याल रखेगी। इतना ही नहीं, जवाना मुझसे इस दुबली-पतली औरत को पाँच रुपये में लेने को तैयार है, जो मैंने उसके लिए दिए गए दाम का आधा है, इसलिए सौदा मुझे केवल दस रुपये में ही करना पड़ेगा। वह अपने तीन बच्चों को अपने पास रख सकती है - मुझे तो उन्हें बिल्कुल नहीं चाहिए!
बूरा की आगे की योजनाओं में उसकी पत्नी देवी की चीखती हुई आवाज ने बाधा डाल दी।
‘अरे बूढ़े लंपट!’ वो चिल्लाई। ‘लक्ष्मी जैसी जवान लड़की से तुम्हें क्या चाहिए? वो तो सिर्फ पंद्रह साल की है, और वो भी बदतमीज़! तुम तो पहले से ही अधमरे हो, और उसके साथ एक हफ़्ते बिताने के बाद मुझे तुम्हारी थकी हुई हड्डियों को दफ़नाने की मशक्कत करनी पड़ेगी! और उस बूढ़े कमीने की बात ही क्या! वो इतना बूढ़ा है कि उसके दांत ही नहीं हैं! और उसे जवान लड़के पसंद हैं! मुझे कौन संतुष्ट करेगा? मैं तो अभी भी जवान और तंदुरुस्त हूँ!’ वाकई, यह एक पेचीदा मामला था! लेकिन एक राहत की बात भी थी। एक रुपये के मुकाबले एक शिलिंग और चार पेंस की विनिमय दर को देखते हुए, इस आपसी लेन-देन में शामिल लागत, चाहे आप इसे किसी भी तरह से देखें, बहुत अधिक नहीं थी। थंगावेलु ने चौड़ी मुस्कान के साथ संक्षेप में स्थिति का वर्णन किया, और अपनी सीखी हुई बटलर-शैली की अंग्रेज़ी में कहा:
“सर, मुझे ये जगह बहुत पसंद है। बहुत ही बढ़िया जगह है। यहाँ बहुत सारे शिकार, बाघ और हिरण हैं। औरतें भी बहुत हैं, और वो भी बहुत सस्ते दामों पर। यहाँ पाँच रुपये या दस रुपये में पत्नी मिल जाती है। फिर अगले महीने भी दे सकते हैं। जब ज़रूरत न हो, तो बदल सकते हैं। दूसरी पत्नी मिल जाती है, सिर्फ़ दस रुपये में! फिर तो औरत जाती ही नहीं। ज़्यादा पैसे चाहिए। सौ रुपये से कम में दूसरी पत्नी नहीं मिल सकती। सर, ये जगह बहुत ही बढ़िया है।”

थंगावेलु ने अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ अपनी बात समाप्त की।
‘थांगावेलु, उस कमीनी औरत से कहो कि मेरा नहाने का पानी लाए,’ डोनाल्ड बरामदे से दहाड़ा। तभी कुनमारी, जो स्थानीय शिकारी था, वहाँ आ पहुँचा और हमारे द्वारा माँगी गई जानकारी लेकर आया। वह सुबह से ही जंगल में खोजबीन कर रहा था और उसने बताया कि लगभग आधा मील दूर एक सूखे नाले के किनारे एक बाघ और एक तेंदुआ आए थे। तेंदुआ वहाँ का पुराना निवासी लग रहा था क्योंकि कुनमारी ने बताया कि उसके पुराने और नए, दोनों तरह के पदचिह्न कई बार दिखाई दिए थे। बाघ जाहिर तौर पर टहल रहा था और कुछ समय तक उसके उस रास्ते से लौटने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी।
इसलिए संभावना यही थी कि अगर हम किसी वस्तु को चारा बनाकर बाद में उसकी तस्वीर खींचने की कोशिश करते, तो शायद उसे बाघ नहीं बल्कि पैंथर मार डालता। हम तो सिर्फ बाघ ही पकड़ना चाहते थे; हमने कुनमारी को यह बात फिर से बताई और उनसे कहा कि वे दोबारा जाकर ऐसी जगह ढूंढें जहां पैंथर की बजाय बाघ अक्सर आता हो।
उस दोपहर वह सफलता की खबर लेकर लौटा। उसने बताया कि नदी के उस पार एक नियमित पगडंडी थी, जिस पर बाघ के बच्चे, बूढ़े और नए, दोनों ही तरह के, अक्सर आते-जाते थे। इसके अलावा, वहाँ एक सुविधाजनक पेड़ था, जो हाथियों के दखल से सुरक्षित था, जहाँ से हम समय आने पर आसानी से तस्वीरें ले सकते थे। बाघ उस रात या अगली रात उसी रास्ते से ज़रूर गुज़रेगा।
हमने चार भैंसें चारा के तौर पर मंगवाई थीं और उनमें से दो को बांधने
का फैसला किया—बड़ी भैंस को नदी के उस पार बाघों के आने-जाने वाले रास्ते पर और छोटी भैंस को उससे चार फर्लांग दूर नाले में, जहाँ पैंथर के आने की पूरी संभावना थी। थंगावेलु कुनमारी के साथ दोनों जानवरों को बांधने में मदद करने गया, जबकि डॉन और मैं नदी किनारे शाम की सैर पर निकल गए।
यह जंगल अब भी वन्यजीवों के लिए स्वर्ग समान था और हमने चित्तीदार हिरणों के बड़े-बड़े झुंड देखे, साथ ही काफी संख्या में सांभर और नीलगाय भी नदी किनारे चर रहे थे। नदी के मोड़ पर हमें एक नर हाथी शाम को पानी पीते हुए दिखाई दिया। चूंकि हम शिकार पर नहीं थे, इसलिए हमारे पास कोई हथियार नहीं थे। एक-दो पल के लिए नर हाथी गुस्से में दिखा; निस्संदेह उसे हमारी दखलअंदाजी पसंद नहीं आई। फिर उसने अपना इरादा बदल लिया, मुड़ा और धीरे- धीरे घने पेड़ों की ओर चला गया। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इतना बड़ा जानवर इतनी खामोशी से कैसे चल सकता है।
अगली सुबह कुनमारी शिकारगाह पर और थंगावेलु नाले पर यह देखने गए कि रात में हमारे चारे का क्या हुआ था। जंगल में अक्सर अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होती हैं, और उनकी रिपोर्टें जितनी आश्चर्यजनक थीं, उतनी ही फोटोग्राफी के लिहाज़ से उत्साहवर्धक भी थीं। एक बाघ, तेंदुआ नहीं, उस नाले के किनारे आया था जहाँ हमने छोटा चारा बाँधा था, यह सोचकर कि तेंदुआ उसे मार डालेगा। उसने आसानी से रस्सी तोड़ दी और भैंस के बच्चे को थोड़ी दूर एक खाई में ले गया। वहाँ उसने सिर और चारों खुरों को छोड़कर बाकी सब खा लिया। झाड़ियों में छिपे होने के कारण गिद्धों को अवशेष नहीं मिले। आश्चर्य की बात यह थी कि बाघ की अपेक्षा नहीं, बल्कि एक पैंथर नदी पार करते हुए शिकार के रास्ते पर आ गया था। उसने उस बड़े भैंस के बच्चे को मार डाला जिसे हमने बाघ के लिए बांधा था। जाहिर है, उसने बड़ी मुश्किल से उसे मारा होगा, क्योंकि कुनमारी ने संघर्ष के निशान देखे थे। लेकिन पैंथर रस्सी को तोड़ने में सक्षम नहीं था। इसलिए उसने भैंस के बच्चे का एक छोटा

हा-हर्री!' मैं कल्पना कर सकता था कि मादा लंगूरें अपने बच्चों को अपनी छाती से लगाए हुए बरगद के पेड़ पर बैठी रात के अंधेरे में नीचे झाँक रही थीं, ताकि हत्यारे का पता लगा सकें और यह अनुमान लगा सकें कि वह कहाँ से उन पर हमला कर रहा होगा।
चित्तीदार हिरण और सांभर की आवाज़ों से मैं बाघ के आने की दिशा का पता लगा सकता था। वह नदी पार करके पानी पी रहे एक हिरण को डराकर भाग गया। 'ख्र्र! ख्र्र!' वह छोटा जानवर चिल्लाया। उसकी आवाज़ हिरण प्रजाति की किसी भी अन्य आवाज़ से बिल्कुल अलग है। यह कुत्ते के कर्कश भौंकने जैसी लगती है और इसी कारण इस छोटे से जीव को, जिसे मुंटजैक भी कहा जाता है, बोलचाल की भाषा में इसी नाम से जाना जाता है।
अब बाघ का चेहरा तिरस्कारपूर्ण था। वह जानता था कि उसका भेद खुल गया
है और अब अपनी हरकतों को छुपाने की कोशिश करना उसके लिए अपमानजनक होगा। 'ऊ-ऊंग!' की दहाड़ उसने लगाई, और फिर अपनी आवाज़ को थोड़ा नरम लेकिन गहरी 'आउंग! उघ; उघ-आ!' में बदल दिया। उसकी आवाज़ में न तो गुस्सा था और न ही वह भूखा था।
जैसे जादू से, उसकी दहाड़ की आवाज़ सुनते ही जंगल में गहरी शांति छा गई। हिरण और बंदर थम गए। नदी किनारे बैठे मेंढक भी टर्राना बंद कर दिए। सभी जीव-जंतु, बड़े और छोटे, जान गए कि जंगल का राजा शिकार की तलाश में निकला है और वे डर से कांप रहे थे। केवल एक अकेला लकड़ी का शेर, जो हमारे बांस के केबिन के शौचालय में पानी के बर्तन के पीछे आराम से बैठा था, उस धारीदार आतंक की चुनौती को नज़रअंदाज़ कर रहा था। शायद उसने सुना ही न हो। शायद उसे बाघ जैसे बड़े और भद्दे जीवों से कोई मतलब न हो। शायद उसकी समस्या कुछ और ही थी।
फिर नदी के किनारे सन्नाटा टूट पड़ा: ‘हा-आह! हा-आह! हा-आह!’
पैंथर बहुत पहले लौट आया था और निस्संदेह हमारे बड़े शिकार को खाकर अपना पेट भर चुका था। इस सारी हलचल ने उसे परेशान कर दिया था, जबकि उसके बड़े, गुस्सैल और दबंग चचेरे भाई, बाघ की दहाड़ों ने उसे बेचैन और चिड़चिड़ा बना दिया था। वह उस विशाल आतंक की निकटता से नाराज़ था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। गुस्से में वह बार-बार 'हा-हा! हा-आह! हा-आह!' दोहरा रहा था, यह तय करते हुए कि वहीं रुके या चुपके से निकल जाए। मुझे पता था कि डॉन ने भी ये सारी आवाजें सुनी होंगी, और वह बाघ की तस्वीर लेने की तैयारी कर रहा होगा, जो इस समय तक उस भैंस के बच्चे के अवशेषों के पास होना चाहिए जिसे उसने पिछली रात मारा था, और उस जीवित चारे के पास जिसे हमने पास में ही बांध रखा था।
जंगल में फिर से सन्नाटा छा गया। नदी किनारे मेंढक फिर से टर्राने लगे और रात और भी गहरी होती चली गई। मैंने आसमान की ओर देखा और सोचा कि मुझे तारे क्यों नहीं दिख रहे। कुछ ही पल बाद मुझे इसका जवाब मिल गया जब हमारी झोपड़ी के पीछे पहाड़ियों की श्रृंखला में गरज सुनाई दी। बार-बार बिजली चमकी और आसमान से बिजली हम पर बरसने लगी, हर गरज से पहले चमकीली बिजली की लकीरें आसमान में ऐसे फैल रही थीं मानो किसी विशाल नक्शे पर नदियाँ बनी हों।
फिर हवा चलने लगी। दूर से उसकी गरज सुनाई दे रही थी, जैसे वो पहाड़ी
से नीचे आ रही हो, मानो किसी भयानक चीख की तरह, उसकी आवाज़ लगातार तेज़ होती जा रही हो, जब तक कि वो हमारे जंगल तक नहीं पहुँच गई। मुझे पेड़ों के ज़ोर से हिलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, उनकी डालियाँ दर्द से टकरा रही

थीं, हालाँकि अँधेरा होने के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और हमारी झोपड़ी के बाँस के खंभे हिल रहे थे, तनाव में थे, चरमरा रहे थे और कराह रहे थे। मुझे लगा कि छप्पर की छत उड़ जाएगी।
फिर अचानक, जितनी तेज़ी से हवा आई थी, उतनी ही तेज़ी से चली गई। मैं उसे दूर जंगल की चोटियों के पार क्षितिज तक जाते हुए सुन सकता था। लेकिन बिजली की तीव्रता बढ़ती गई, और गरज की आवाज़ें और भी नज़दीक और तेज़ होती गईं। अचानक एक विशाल पेड़ पर बिजली गिरी। वह चीर गया और एक तेज़ रोशनी से पूरा जंगल दिन के उजाले की तरह जगमगा उठा, हमारी झोपड़ी के इतने करीब कि बिजली की गड़गड़ाहट पल भर में सुनाई दी। मुझे अपने सोप-नट के पेड़ पर बैठे डॉन की याद आई और मैं चिंतित हो गया। हालाँकि, वह पेड़ न तो बहुत बड़ा था और न ही बहुत ऊँचा, और उस पर बिजली गिरने की संभावना भी कम ही थी, क्योंकि वहाँ चुनने के लिए कई ऊँचे पेड़ मौजूद थे।
बारिश झोपड़ी तक पहुँच गई और एक पल के लिए तो ऐसा लगा जैसे पहाड़ी से नीचे की ओर आ रही हो, झोपड़ी तक पहुँचने से बहुत पहले ही। मैंने सोचा, डोनाल्ड को बहुत खुशी हुई होगी कि उसने अपनी मचान के ऊपर तिरपाल की छत लगाने का फैसला किया।
बारिश झोपड़ी तक पहुँच गई और एक पल के लिए गिरते पानी के शोर में गरज
भी दब गई। मेरे ऊपर घास की छत से सरसराहट की आवाज़ आ रही थी, और सौ जगहों से पानी टपक रहा था, टपक रहा था और हमारे सामान पर हर दिशा में बह रहा था। जो कुछ ही पल पहले एक आरामदायक झोपड़ी थी, वह अब पानी से लथपथ एक गड्ढा बन गई थी, फर्श पर पानी के गड्ढे थे और दूर-दूर तक कोई सूखी जगह नज़र नहीं आ रही थी। मैं बैठा रहा, मन ही मन उन मज़दूरों को कोस रहा था जिन्होंने छत का इतना घटिया काम किया था।
कोलाहल से जागकर, थंगावेलु (शायद वह सपने में देख रहा था कि दर्जन भर पत्नियां पांच रुपये प्रति पत्नी के हिसाब से बिक रही हैं), अंदर भागा आया, अपने चारों ओर भीगी हुई चीजों को देखकर अचंभित हुआ, और फिर उनके लिए आश्रय खोजने की व्यर्थ कोशिश में इधर-उधर भटकने लगा।
एक घंटे तक भारी बारिश जारी रही और फिर हल्की बूंदा-बांदी में बदल गई। ‘क्वैक-कर! क्वैक-कर! क्वैक-कर! क्वैक-कर!’ मेंढकों की आवाज़ अब बदल गई थी। नदी और आसपास के छोटे-छोटे तालाबों से निकल रही हज़ारों मेंढकों की यह मिलन की पुकार थी, जो मानसून के आगमन का स्वागत कर रही थीं। मैं उठा और सोने की तैयारी करने लगा। मुझे लगा कि बांस के पलंग के ऊपर की बजाय उसके नीचे ही सूखी जगह है।
उसी क्षण मुझे एक क्रोधित हाथी की चीख सुनाई दी। यह नाले और डॉन के मचान की दिशा से आ रही थी। थंगावेलु, जो अभी भी इधर-उधर भटक रहा था, उसने भी यह आवाज़ सुनी। वह रुक गया और हम दोनों ने एक-दूसरे को चिंता से देखा। फिर हम दोनों बेहतर ढंग से सुनने के लिए भीगे हुए बरामदे में चले गए।
हाथी फिर से चीखा। यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि चीख नाले से आ रही थी।
तभी मुझे दूर से कुछ चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी, जो लगातार बारिश की वजह से धीमी थी, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि यह किसी इंसान की आवाज़ थी, जिसके शब्द मैं समझ नहीं पा रहा था। आवाज़ उसी दिशा से आ रही थी जहाँ से हाथी की चीख आई थी। नाले में डोनाल्ड के अलावा और कौन हो सकता था?
फिर अचानक मुझे सच्चाई का अहसास हुआ। मेरा बेटा खतरे में था: हाथी उसे मचान से बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था, और वह उसे भगाने की कोशिश कर रहा था। और वह निहत्था था।

मुझे इस स्थिति की विडंबना समझ में आई और मैंने अपने अति आत्मविश्वास
और लापरवाही के लिए खुद को कोसा। मुझे बेहतर पता होना चाहिए था; उस लड़के की कोई गलती नहीं थी। हम निहत्थे थे। क्योंकि हम अपने साथ कोई हथियार नहीं लाए थे, उन्हें पीछे छोड़ आए थे क्योंकि हम फोटोग्राफी के लिए आए थे और गोली चलाने के लालच में नहीं पड़ना चाहते थे!
एक हाथ में दो लालटेन में से बड़ी वाली और दूसरे हाथ में चंदन की लकड़ी की छड़ी लेकर मैं तेजी से बाहर निकला और भीगे हुए जंगल में लड़खड़ाते हुए जितनी जल्दी हो सके नाले तक आधा मील का रास्ता तय करने के लिए दौड़ने लगा। मुझे ठंड का और इस बात का जरा भी एहसास नहीं था कि मैंने सिर ढक रखा था और मेरे पास कोट भी नहीं था, क्योंकि बारिश ने मुझे पूरी तरह भिगो दिया था।
मैं काफी दूर तक पूरी ताकत से भागा, तभी मुझे अपने पीछे एक और लालटेन हिलती हुई दिखाई दी। वह थंगावेलु था, जो दूसरी लालटेन लिए खड़ा था। वह डोनाल्ड से बहुत प्यार करता था, और मैं उसकी मौजूदगी के लिए आभारी था। उस भयानक रात में, घोर अंधेरे में और निहत्थे, कोई और नौकर उस जगह जाने की हिम्मत नहीं करता, जहाँ एक जंगली हाथी गुस्से में उत्पात मचा रहा था।
फिर हमें चीरने-फाड़ने जैसी आवाज़ सुनाई दी, और एक ज़ोरदार धमाका हुआ। मैं समझ गया कि हाथी ने उस पेड़ को गिरा दिया है जिस पर डॉन का मचान था। मैंने तेज़ी से दौड़ने की कोशिश की और थंगावेलु मेरे साथ-साथ दौड़ने लगा। लेकिन मैं उसकी बराबरी नहीं कर पाया, इसलिए हम दौड़ते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, ताकि हाथी का ध्यान हमारी ओर आकर्षित हो और वह डोनाल्ड से दूर चला जाए।
डोनाल्ड खुद इस कहानी का अपना हिस्सा इस तरह बताते हैं: 'मुझे नहीं पता कि मेरे पिता अपनी किताबें लिखते समय मुझे उनमें क्यों शामिल करते हैं। एक तो मुझे अपने बारे में लिखना और बात करना बिल्कुल पसंद नहीं है। असल में, अब मुझे यह पूरी घटना "छोटी सी बात का बतंगड़" लगती है।'
पिताजी ने बताया था कि यह सब कैसे शुरू हुआ और मैं दुधवाला की टॉर्च
और कैमरे के साथ रीठा के पेड़ पर कैसे बैठा था, ताकि उस बाघ की तस्वीर ले सकूँ जिसने पिछली रात हमारे चारे को मारकर खा लिया था। इतना कम बचा था कि मैंने पास में ही एक ज़िंदा रीठा बाँधने का फैसला किया ताकि जब बाघ आस-पास घूमे, जैसा कि बाघ आमतौर पर अपने शिकार के पास जाने से पहले करते हैं, तो उसे लुभा सकूँ।
मचान आरामदायक था; पहले बछड़े का सिर और पैर मेरे बाईं ओर लगभग तीस गज
की दूरी पर एक खाई में पड़े थे, जबकि मेरे नीचे वह नाला था जिसके बारे में हमारे शिकारी कुनमारी ने बताया था कि यह बाघों और तेंदुओं का नदी की ओर जाने का नियमित मार्ग है। इसमें एक छोटी जलधारा प्रवेश करती थी जिसका उपयोग बाघ ने पिछली रात किया था। मेरे दाईं ओर छाया में, और स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, हमारा तीसरा चारा—एक जीवित—एक और भैंस का बछड़ा था। दूसरे चारे को पिछली रात नदी के उस पार एक तेंदुआ ने मार डाला था।
अंधेरा छाते ही हिरण और लंगूर बंदरों ने खतरे की चेतावनी भरी आवाजें निकालीं और मुझे पता चल गया कि कोई बाघ या तेंदुआ आसपास है—जानवरों की आवाज सुनकर तो यही लग रहा था कि शायद बाघ ही होगा। तभी बाघ ने काफी पास दहाड़ मारी, और थोड़ी देर बाद ही मुझे दूर से एक तेंदुआ की दहाड़ सुनाई दी।
संभवतः वही तेंदुआ था जिसने हमारे दूसरे शिकार को मारा था।

‘[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[.423 [[[[[[[[[[[[’

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[['[[[[-[]-[[[[!' [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

'[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[['

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[

‘बाघ ने भी यह आवाज़ सुनी और उसे पसंद नहीं आई। उसने ज़ोर से “व्र-आह!”
की आवाज़ निकाली। आम तौर पर वह चुपचाप खिसक जाता, क्योंकि बाघ और हाथी एक-दूसरे से यथासंभव बचते हैं। लेकिन यह बाघ अपवाद था। वह खाना खा रहा था।’ इसके अलावा, वह क्रोधित था। इसलिए वह बार-बार गुर्राया: “व्र-आह! व्र-
आह! व्र-आह!”
'कीचड़ की आवाज अचानक बंद हो गई। हाथी ने खतरे और चेतावनी के सामान्य संकेत के रूप में अपनी सूंड जमीन पर पटकने की कोशिश की। लेकिन उसकी सूंड ठोस मिट्टी के बजाय कीचड़ और पानी से टकराई, और परिणामस्वरूप जो आवाज निकली वह किसी ऐसे व्यक्ति की तरह थी जिसे गंभीर सर्दी लगी हो और वह अपनी नाक साफ कर रहा हो।'
'इससे बाघ और भी ज्यादा चिढ़ गया और वह पहले से भी ज्यादा जोर से गुर्राया, और हाथी शायद तब वहां से चला जाता और बाघ को उसकी दावत के लिए छोड़ देता, और मुझे शांति से रहने देता, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम के कारण ऐसा नहीं हुआ।'
अचानक हवा का एक झोंका आया और तिरपाल का किनारा झंडे की तरह लहराते हुए हाथी के सिर के ठीक ऊपर पेड़ की शाखाओं से टकराने लगा। यह नई आवाज़ सुनकर बाघ उछल पड़ा और हाथी के बगल में झाड़ियों में जा गिरा। इससे विशालकाय जानवर चौंक गया और क्रोधित हो गया; भ्रमित और भयभीत होकर, उसे समझ नहीं आ रहा था कि बाघ उस पर हमला करना चाहता है या उसके सिर के ऊपर लहराती वह अजीब वस्तु खतरे का संकेत दे रही है। उसने ऊपर देखा और सब कुछ देखा: तिरपाल, मचान और मैं!
जंबो ने एक भयानक चीख मारी और सीधे साबुन के पेड़ की ओर दौड़ा, उसका माथा धड़ाम से पेड़ के तने से टकराया। भारी बारिश ने मिट्टी को गीला और ढीला कर दिया था, पेड़ का तना सीधा खड़ा रहने के बजाय तिरछा हो गया, और मैं अच्छी तरह जानता था कि एक-दो धक्के और लगते ही वह ज़मीन पर गिर जाएगा। जंबो फिर से चीखा, थोड़ा पीछे हटा और स्पष्ट रूप से आगे हमले के लिए तैयार हो रहा था। हालांकि बहुत अंधेरा था, मैं उसकी आकृति को धुंधला सा देख पा रहा था, वह इतना करीब था कि लगभग हाथ की पहुँच में, ठीक मेरे बाईं ओर। उस गहरे काले रंग की पृष्ठभूमि पर सफेदी की एक हल्की सी लकीर उसके दांतों को दर्शा रही थी और पुष्टि कर रही थी कि वह एक बैल था। इसके अलावा, अब मैं उसकी गंध भी महसूस कर सकता था। बारिश ने उसे अच्छी तरह से धो दिया होगा, फिर भी उसके शरीर से एक जंगली हाथी की तीखी, अचूक गंध आ रही थी, जो विशेष रूप से तब तेज होती है जब जानवर गुस्से में होता है।
अगले झटके में साबुन का पेड़ गिर जाएगा और मुझे भी अपने साथ ले जाएगा। इसलिए मैं पागलों की तरह, अपनी पूरी ताकत से, जो भी शब्द मेरे दिमाग में आए, चिल्लाने लगा। मेरी आवाज़ का असर हुआ—कम से कम उस पल के लिए। हाथी ने अपना हमला रोक दिया और फिर से दहाड़ा। अगला पल ही मेरा भाग्य तय करेगा।
‘मेरी इलेक्ट्रिक टॉर्च! मैंने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा? इसकी रोशनी से वह ज़रूर डरकर भाग जाएगा। मैंने जल्दी से उसे उठाया और सीधे हाथी के चेहरे पर चमकाया।’
खेल के सारे नियमों के हिसाब से तो उसे तुरंत पीछे हट जाना चाहिए था। लेकिन इसके बजाय, वह पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाया, और एक पल बाद मुझे ऐसा लगा जैसे किसी स्टीमरोलर ने मुझे टक्कर मार दी हो, जब उसने अपना माथा दूसरी बार रीठा के पेड़ के तने से टकराया। धीमी गति से, मानो जानबूझकर ऐसा किया गया हो, पेड़ जड़ों के टूटने की तेज़ आवाज़ के साथ झुक गया। फिर,

हम सब जो चीख-पुकार मचा रहे थे, वो बहुत भयानक लग रही होगी। लेकिन, भगवान का शुक्र है, बैल ने भी ऐसा ही सोचा और घबरा गया। वह अचानक मुड़ा और तेज़ी से किनारे पर चढ़ गया। मैंने पेड़ से उतरकर पिताजी और थंगावेलु के पास पहुँचने में ज़रा भी देर नहीं की।
“क्या आप ठीक हैं?” बूढ़े आदमी ने पूछा।
मुझे मुस्कुराने से खुद को रोकना मुश्किल हो रहा था। वह मुझसे भी बदतर हालत में दिख रहा था और चीखने-चिल्लाने से उसकी आवाज बैठ गई थी।
“धन्यवाद। मैं ठीक हूँ।” मैंने उसे आश्वस्त किया।
“भगवान का शुक्र है,” उसने कहा, और फिर, “चलो यहाँ से चलते हैं।”
“मैं इस भावना से पूरी तरह सहमत हूं। और जल्दी से,” मैंने अनावश्यक रूप से कहा।
हम साबुन के पेड़ से जितनी जल्दी हो सके दूर भाग गए। आखिर हाथी भी अलग-अलग स्वभाव के होते हैं, और यह अपना मन बदल सकता है और वापस लौट सकता है।
अगली सुबह हम दुधवाला का कैमरा और डॉन की टॉर्च वापस लेने गए। वहाँ हमें एक चौंकाने वाला दृश्य देखने को मिला।
शायद कैमरा गिरते हुए पेड़ से दूर जा गिरा था, या शायद तिरपाल में फंस गया था। खैर, जानबूझकर या अनजाने में, हाथी ने उसे कुचल दिया था। दुधवाला का कैमरा और डोनाल्ड की बाघ के शिकार खाते हुए टॉर्च से ली गई कीमती तस्वीर गायब हो गई! लेकिन हमें टॉर्च सही सलामत मिल गई।
बाद में उसी दिन हम नदी के उफनते किनारों पर बैठे, और नदी के दूसरी ओर चित्तीदार हिरणों और लंगूर बंदरों को चरते-खेलते देख रहे थे। पिछली रात की तेज़ हवा ने नदी के उस पार स्थित विशाल पेड़ से हज़ारों जंगली अंजीर गिरा दिए थे। लगभग तीस चित्तीदार हिरणों का एक झुंड उन अंजीरों को खा रहा था, जबकि लंगूर बंदरों का वह परिवार, जिसने पहले ही अंजीर ढूंढ लिए थे और उन्हें खा रहा था, अब इतना भर चुका था कि और कुछ नहीं खा सकता था। वे आपस में और चित्तीदार हिरण के बच्चों के साथ बच्चों की तरह खेल रहे थे। कभी-कभी एक अधेड़ लंगूर पेड़ की डाल से उछलकर चौंकी हुई चित्तीदार हिरणी की पीठ पर चढ़ जाता, उसके कान नोचता या उसकी छोटी पूंछ खींचता और फिर वापस कूद जाता। चित्तीदार नर हिरण और बड़े लंगूर दोनों ही ऐसी हरकतों से नाराज़ थे, लेकिन हिरण के बच्चे उछल-कूद कर छोटे बंदरों के साथ पकड़ने-पकड़े खेलने की कोशिश कर रहे थे। यह एक अनोखा और सुंदर दृश्य था।
लेकिन जब हम देख ही रहे थे, तभी अचानक उस जगह मौत का साया मंडरा उठा जहाँ सब कुछ इतना शांत था। हिरणों का झुंड तो चला गया था, लेकिन बंदर अभी भी उछल-कूद कर रहे थे, तभी जंगल से एक जंग लगे भूरे रंग की लकीर निकली और उसने झुंड से थोड़ी दूर भटक गए एक अधेड़ लंगूर पर झपट्टा मारा।
एक बार तो लंगूरों का रखवाला अपने कर्तव्य में विफल हो गया था। शायद
वह हमें देखने में इतना मशगूल था कि उसने उस अकेले, चुपके से रेंगते जंगली कुत्ते को नहीं देखा, जिसने सफलतापूर्वक खुश बंदरों का पीछा किया था और अब नदी के दूसरे किनारे पर खड़ा था, जिसमें से एक बंदर उसके जबड़े से लटका हुआ था।
अधिकांश बंदर गालियां बकते हुए पेड़ की चोटी पर चढ़ गए, लेकिन लंगूर रक्षक और बड़े नर लंगूर एक साथ नीचे कूद पड़े और लंगूरों की कर्कश युद्ध-पुकार लगाई: 'होक! होक! होक! होक!' लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। युवा लंगूर पहले ही मर चुका था।

डॉन और मैं खड़े हो गए और एक साथ चिल्लाए। पिछली रात की भागदौड़ से मेरी आवाज़ पहले से ही थकी हुई थी, और वह भयानक लग रही होगी, क्योंकि जंगली कुत्ता डर के मारे मरे हुए बंदर को गिराकर कुछ गज दूर भाग गया। वहाँ रुककर वह हमें पत्थर की तरह घूरने लगा। ये जीव असाधारण रूप से साहसी होते हैं, जंगल की बड़ी बिल्लियों से भी कहीं ज़्यादा। वे मनुष्य से शायद ही डरते हैं, हालाँकि वे आम तौर पर उस पर हमला नहीं करते।
नदी उफान पर थी और इतनी गहरी थी कि उसे पार करना असंभव था, लेकिन जंगली कुत्ते को दूर भगाने के लिए चिल्लाते हुए, हम एक पुराने पेड़ के तने और शाखाओं पर चढ़कर नदी पार करने में कामयाब हो गए। यह पेड़ वर्षों पहले गिर गया था और अभी भी नदी के ऊपर फैला हुआ था। जब हमने काले चेहरे वाले छोटे लंगूर को उठाया तो उसका चांदी जैसा भूरा शरीर गर्म था, और लगभग एक गज लंबी उसकी विशाल पूंछ शव से लटक रही थी।
बंदरों का झुंड अभी भी पेड़ की चोटी पर था, देखने वाले हत्यारे पर गालियां बरसा रहा था, जबकि चौकीदार और अन्य नर बंदर बारी-बारी से जंगली कुत्ते और हम पर अपने दांत दिखा रहे थे। फिर उन्हें समझ आ गया कि उस नन्हे जीव की मौत के लिए हम ज़िम्मेदार नहीं थे और वे चुप हो गए जब हमने उसके बेजान शरीर को उठाया और उसे पेड़ की उस शाखा पर जितनी ऊंचाई तक डॉन पहुंच सकता था, रख दिया जहां बंदरों का समूह था। उसके बाद हम नदी के अपने किनारे लौट आए।
अब लंगूर नीचे आए और अपने साथी के शव को घेर लिया। कुछ ने उसे सूंघा,
कुछ ने उसे छुआ। एक बूढ़ी मादा, जो शायद उसकी माँ थी, ने उसे उठाया और चूमा। उन काले चेहरों में बड़ी-बड़ी काली आँखें अजीब तरह से चमकदार और नम लग रही थीं। क्या लंगूर रोते हैं?
उस दोपहर हम 'बाघों की भूमि' से निराश होकर निकले, लेकिन हाथी के साथ अपने छोटे से रोमांच से हमें काफी अनुभव मिला। इस साल हिमालय से हंस सामान्य से अधिक संख्या में आए थे, और डॉन ने कुछ दोस्तों के साथ हंस और बत्तख के शिकार का अभियान बनाया था। इसलिए हमें उनसे मिलने के लिए समय पर लौटना पड़ा। मैं उस दल में शामिल नहीं हुआ।

* देखें: आदमखोर और जंगल के हत्यारे।

Ace hunter and wildlife chronicler Kenneth Anderson recalls real-life jungle tales, some macabre and some incredible, of adventures in pursuit of man-eating tigers and leopards. He brings the animal and human characters alive against the background of the jungle and the excitement and danger their co-existence generates.

Kenneth Anderson (1910-74) hailed from a Scottish family settled in India for six generations. His love for the denizens of Indian jungle led him to big game hunting and eventually to writing real-life adventure stories. His books are hailed as classics of jungle lore.

Cover Design: Arrt Creations